सिराजुद्दौलह हुए। नवाजिश अहमद खाने भाई जैनुद्दीनके दूसरे पुतको गोद लिया था। *

सन् १७५३ ई०मे नवाब अलीवरदी खांने सिराजुद्दौलहको अपना उत्तराधिकारी माना। उसी समयसे सिराजुद्दौलह राजकार्य्यकी पर्य्यालोचना,—और तो क्या मातामहके साथ रण-प्राङ्गणमे उपस्थित रहकर सैन्यसञ्चालन भी करते थे।

मातामहकी जीवितावस्थामें सन् १७५५ ई०में सिराजुद्दौलहने चाचा नवाजिश अहमदखाके मन्त्री हुसेनकुली खांको मुरशिदाबादकी प्रकाश्य राहमें दिन दहाड अपने हाथसे जानसे मारा था। इसी समय हुसेनकुलीखांके साहसी

---

* यह सब बाते हमने सय्यद गुलाम हुसेन कृत "सैरुल मुताखिरीन"से संग्रह की हैं। अङ्गरेजी इतिहास-लेखक अरमी कहते हैं,—'नवाब अलीवरदीके सिर्फ एक कन्या थी। जैनुद्दीन उनके मध्यम भ्रातृपुत्र हैं। इसी तरह वंशतत्त्व निर्णय करनेमें अरमीने बहुतसी भूल की है। इसीलिये इतिहास-लेखक मिलने मुसलमान नवाबोंके नाम निर्णय सम्बन्धमे अरमीकी बात प्रमाण नही समझी है। कुरुक्षेत्रका जैसे महाभारत है, पलाशीकी लडाईका वैसे ही अरमीकृत हिन्दोस्तान है। किन्तु हम हिन्दोस्तानकी अपेक्षा सैरुलमुताखिरीनको अधिकतर प्रमाण समझते हैं। कारण, सय्यद गुलाम हुसेन सिराजुद्दौलहके समसामयिक आदमी थे। सिर्फ समसामयिक ही क्यों, वह और उनके अन्यान्य आत्मीयगण अलीवरदी और सिराजुद्दौलहके पासके सम्बन्धी थे।

मीर अन्य भाई हैदरअलीखां सिराजुद्दौलहके हाथसे मारे गये। अभागे हैदरअलीने मरनेके समय भग्न-कण्ठसे कहा था,—"हा अकर्म्मण्य जीव! इसी तरह तू साहसी वीरगणकी हत्या करेगा।" और भी कहनेकी इच्छा थी, पर कह नहीं सके, मजूरों भरमें तेज तलवारसे विराट मुण्ड काट डाला गया।

हुसेनकुलीखां और उनके भाई हैदरअलीखांपर अलीवर्दी खांकी महिषी नाराज थीं। सिराजुद्दौलहने नानीके आदेशसे उनकी हत्या की थी। नवाजिश खां और स्वयं अलीवर्दी खांने महिषीके बहकानेसे इस हत्या-काण्डकी मञ्जूरी की थी। घसीटी बेगमके साथ हुसेनकुली-खांकी यारी थी। सिर्फ इतना ही नहीं,—सिराजुद्दौलहकी माता अमीना बेगमके साथ भी ऐसी ही बातका आभास "मुताखिरीन" में पाया जाता है। अलीवर्दी खांकी दोनो कन्याके चरित्रसम्बन्धमें जो बातें सुनी जाती हैं, वह सुसभ्य साहित्यमें लिखी जाने लायक नहीं हैं। अलीवर्दीकी स्त्री इसीलिये हुसेनकुलीपर नाराज हुई। इसीलिये उन्होंने उनकी हत्या सम्बन्धमें प्ररोचना की। हुसेनकुलीखां बड़ी देररहीके साथ मारे गये सही, किन्तु उनकी बदचलनी याद करनेसे सिराजुद्दौलहसे कोई सहानुभूति सून्य नहीं हो सकता।

हुसेनकुली खांके भतीजे ढाकेके हाकिम थे। अलीवर्दी खांके जीवनकालमें गुप्तघातकके हाथसे यह भी मारे गये। कोई कोई इस हत्याका भी कलङ्क सिराजुद्दौलहके माथे मढ़ते

है। किन्तु इसमें उनका कोई दोष नहीं था। नवाब अली-वर्दीखांके दामादने नवाजिश खांसे साफ साफ कहा था,—"मैं या सिराजुद्दौलह दोनो इस हत्याकाण्डके सम्बन्धमे कुछ भी नहीं जानते।" * हुसेनकुली खांके मारे जानेपर राजवल्लभने उनका पद पाया था।

राजवल्लभ निष्कलङ्क नही थे। मशहूर था, कि स्वामीकी विधवा स्त्रीके साथ उनकी प्रगाढ़ प्रसक्ति थी। इस सम्बन्धमें अङ्गरेज इतिहास लेखक ओरमीने कहा है—

"हुसेनकुलीखांके मारे जानेके बाद राजवल्लभ नवाजिशके दीवान बने। नवाजिशकी स्त्री राजवल्लभकी बातोंपर चलती। नवाजिशकी मृत्युके उपरान्त भी यही भाव रहा। कितने ही लोग अनुमान करते हैं, कि नवाजिशकी स्त्रीके साथ राजवल्लभकी जैसी घनिष्ठता थी, वह उनके धर्म्म और पदके लिये मुनासिब नही थी। †

राजवल्लभकी इसी कुप्रवृत्तिसे नवाब सिराजुद्दौलह उनसे घृणा करते। ऐसा कुव्यवहार देखकर कौन रक्त मांसका बना

---

* History of Indostan, Vol II, P 48.

† A Gentoo, named Rajah bullubh, had succeeded Hossein Cooly Khan in the post of Duan or prime minister to Nowagis, after whose death his influence continued with the widow, with whom he was supposed to be more intimate than became either his rank, or his religion. Indostan, Vol II, P, 49.

आदमी घृणा वा क्रोध नहीं कर सकता विशेषत: तेजस्वी युवक सिराजुद्दौलहके लिये तो यह बिलकुल ही असम्भव था।

सिराजुद्दौलहने सिंहासनपर बैठते ही अपनी मातृष्वसा या चाची घसीटी बेगमको क़ैद किया। अलीवरदीकी ज्येष्ठा कन्या होने घसीटी बेगम सिराजुद्दौलहकी जानी बैरन बन गई थीं। पिताकी मृत्यु से पहले वह विधवा हुईं। उनके स्वामी नवाजिशने भाईके जिस लड़केको गोद लिया था, वह इससे पहले मर चुका था। बेगमके और कोई नहीं था। फिर भी, किसी आश्रित अफ़ग़ान रमणीके पालित पुत्रके प्रति उनका पुत्रवत् वात्सल्य उत्पन्न हुआ था। इसी पालित पुत्रको बङ्गालके शासन पदपर बैठानेके सङ्कल्पसे वह सिराजुद्दौलहकी शत्रु हो गई थीं। वह जानती थी, कि सिराजुद्दौलह अलीवरदीखाको प्राणोंसे भी अधिक प्रिय थे। * वह खूब जानती थीं,

---

* सचमुच ही सिराजुद्दौलह अलीवरदीको प्राणापेक्षा प्रिय समझते थे। वृद्ध अलीवरदी, दौहित्र सिराजुद्दौलहसे एक मुहूर्त भी अलग रह नहीं सकते थे। एक बार जब उन्होंने मरहठोंके विरुद्ध चढ़ाई की, तो उनके सरदार अफ़ग़ान कर्म्मचारी उनपर नाराज हो उनकी सहायतासे मुंह मोड़ने लगे। सिराजुद्दौलह उस समय अलीवरदीके साथ थे। एक दिन आधी रातको अलीवरदीने सिराजुद्दौलहको साथ ले नाराज अफ़ग़ान कर्म्मचारियोंके खीमेमें जा उनके अफ़सरसे कहा,— 'या तो यथारीति लड़ाईमें साथ दो, नहीं तो मुझे और मेरे इस प्राणापेक्षा प्रिय दौहित्रको मार डालो।' इस बातसे

जीवितावस्थामें ढाकेके दीवान राजवल्लभके पुत्र कृष्णदासने कलकत्तेमें अङ्गरेजोंका आश्रय लिया था। कृष्णदासके जिम्मे मालगुजारीके बहुतसे रुपये निकलते थे। रुपये वसूल न होनेसे सिराजुद्दौलहने उन्हें कैद करनेका सङ्कल्प किया। कृष्णदास जगन्नाथतीर्थ जानेके छलसे विपुल सम्पत्तिके साथ कलकत्ते गये और वहां जाकर अङ्गरेज कम्पनीके शरणापन्न हुए। किन्तु अरमी साहब मालगुजारीकी बात कुछ भी नहीं लिखते।

अरमी कहते हैं,—"राजवल्लभने देखा, कि सिराजुद्दौलह इनपर नाराज है। ढाकेमें रहना निरापद न समझकर अपने पुत्रको अपनी सम्पत्तिके साथ कलकत्ते भेज दिया। उन्होंने मुरशिदाबाद—कासिमबाजारकी अङ्गरेज कोठीके मालिक वाट्स साहबसे अनुरोध किया कि कलकत्तेकी अङ्गरेज कम्पनीका कौन्सिल बिना आपत्तिके कृष्णदासको आश्रय दे। अनुरोध रक्खा हुई थी। कलकत्तेके कौन्सिलमें मालिक ड्रेक साहब उस समय आवोहवा बदलने उड़ीसे गये थे। कौन्सिलके अन्यान्य सभ्य वाट्स साहबकी बातपर निर्भर होकर कृष्णदासको आश्रय देनेपर राजी हुए।" *

---

* इसी समय कलकत्तेमें उमिचन्द्र एक धनशाली नगरवासी सौदागर थे। वह अङ्गरेजोंको रुपये पैसे ऋण देते और इस देशकी चीजें जुटाते। बङ्गाल और विहारके सर्व्वांशमें इनका रोजगार चलता था। इनका लम्बा चौड़ा वासभवन पहरेदारों द्वारा सदा रक्षित रहता। इनमें विषयबुद्धि यथेष्ट थी।

कृष्णदासपर सिराजुद्दौलहकी खफगीका कोई स्पष्ट कारण अरमी साहबने नही लिखा है। फिर भी, राजवल्लभके सम्बन्धमें अरमी साहबने जिस कलङ्कका आभास दिया है, उसीको इस विरूपत्वके कारणके नामसे निर्दिष्ट करना पडता है। वह कारण, होनेपर भी यथोचित नहीं है। किन्तु इस कलङ्ककी बात 'मुताखिरीन"मे मुहम्मदअलीखां कृत "तारीफेमुजफ्फरी मे या हरिचरणदास कृत "चहार गुलजार शुजाई मे बिलकुल ही लिखा नही हैं। * किसी कारणसे क्यो न हो सिराजुद्दौलहपर बिलकुल ही अन्याय अयौक्तिता आरोप की नहीं जा सकती।

अङ्गरेज कम्पनी उनपर बहुत विश्वास करती। सन् १७५३ ई॰मे कम्पनी उनपर नाना कारणोंसे नाराज हो गई। कृष्णदास जिस समय कलकत्ते पहुंचे थे, उस समय कासिमबाजारके वाट्स साहबकी कोई चिट्ठी नही आई थी। उमिचन्दने उस समय कृष्णदासको बडे यत्नके साथ रहनेके लिये स्थान दिया था।

* यह तीनो ग्रन्थ सिराजुद्दौलहकी मृत्युके उपरान्त रचे गये। यह तीनो फारसी भाषामें लिखे हुए हैं। "मुताखिरीन" के ग्रन्थकर्त्ताका परिचय पहले दे चुके हैं। "तारीफ मुजफ्फरी' १८०० सालमे रचा गई। ग्रन्थकर्ता मुहम्मदअली खां तिरहुत और भागलपुरकी फौजदारी अदालतके दारोगा थे। इनके पितामह शमशुद्दौलह लतफुल्लाहखां दिल्ली सम्राट फर्रुखसियर और मुहम्मदशाहके एक उच्चपदस्थ कर्मचारी

अङ्गरेजोंपर नाराज होनेपर भी कृष्णदासको आश्रय देनेके लिये सिराजुद्दौलह मातामहकी खातिर अङ्गरेजोंको इच्छानुसार दण्ड देनेमे सक्षम नही हुए। फिर भी, उन्होंने इस बातकी खबर उन्हे दी थी। इसी समय फोर्थ नामक एक अंग्रेज चिकित्सक अलीवर्दी खांकी दवा करते थे। सिराजुद्दौलहके मुंहसे कलकत्ते मे कृष्णदासकी आश्रयप्राप्तिकी बात सुनकर उसकी सत्यता निरूपण करनेके लिये अलीवर्दीखांने फोर्थसे सब बाते पूछी। फोर्थ साहबने कहा,—"यह दुश्मनोंकी उडाई अफवाह है।" सिराजुद्दौलह प्रमाण देनेपर तय्यार थे। अलीवर्दीखां प्रमाण पा न सके। इसके थोडे ही दिन बाद इस संसारसे चले गये।

अलीवर्दीखां अपनी जिन्दगीमें अङ्गरेजोंसे विरोध करनेका साहस कर नही सके। अलीवर्दी अङ्गरेजोंकी चालसा जानते थे, किन्तु साथ साथ वह यह भी जानते थे, कि अङ्गरेज क्रमशः किस तरह शक्तिविस्तार कर रहे है।

थ। इनकी लिखी तारीफेमुजफ्फरीके सम्बन्धमे अङ्गरेज इतिहास लेखक, इलियट साहब कहते हैं,—

"This is one of the most accurate General Histories of India which I know"

यानी यह टीका इतिहास है। इस इतिहासमे मालगुजारीकी बाकीका हाल है। हरिचरण नवाब कासिम अली खांके एक कर्मचारी थे। सन १७८५ ई०मे उनका इतिहास संग्रहीत हुआ।

अलीवर्दीको यही युक्तिसङ्गत जान पडा था, कि अङ्गरेज जिस सुकौशलसे धीरे धीरे भारतमे अपना इख्तियार बढा रहे है उससे उन्हे शिर उठाने न देना चाहिये। उन्हे इस बातका भी विश्वास था कि अङ्गरेजोंके कोठी बनाने और फौज जोडनेमे बाधा दिये बिना बालक सिराज किसी तरह राज्य रक्षा कर न सकेगा। वह खुद ही कोठियोको निरापद कर जाना चाहते थे, किन्तु मृत्यु शिरपर देख अनन्योपाय होकर वह सिर्फ उपदेश ही देकर अङ्गरेजोको अभिसन्धिकी बात अच्छी तरह समझा गये। *

अलीवर्दीखां राजनीतिज्ञ और बुद्धिमान थे। यह कैसे समझा जावे, कि अङ्गरेजोंके सूई बनकर घुसने और भाला बनकर फैलनेकी बात वह समझ नही सके थे। मृत्युके समय सिराजको इस तरह नसीहत कर जाना कुछ विचित्र नही जान पडता। तब प्रश्न यह उठता है, कि जीवद्दशामे उन्होंने खुद ही अङ्गरेजदमन क्यों न किया? खुद ही कर सकते किन्तु वह बरगीके बखेडे मे फंसे थे ऐसी अवस्थामे अङ्गरेजोंसे नया झगडा खडाकर राज्यमे घोर अशान्ति और अराजकताकी सृष्टि करनेकी हिम्मत उन्होंने नही की।

अलीवर्दीखांसे अङ्गरेजदमनकी सलाह पावे या न पावे अङ्गरेजोंकी अभ्युन्नतिसे स्वदेश मङ्गलमे विशेष बाधा पडनेके

---

* महाभारतके अन्यतम लेखक श्रीयुक्त निखिलनाथ राय [illegible] यह तत्त्व संग्रह किया है।

खयालसे सिराज अङ्गरेजोंपर सतत सतर्क दृष्टि रखते। सिराजने खुद ही अङ्गरेजोंके दुराकांक्षानिर्णयसे दूरदृष्टिका परिचय दिया था। अलीवर्दीखांकी जिन्दगी हीमें उनके मनमें अङ्गरेजोंके विरोधका दारुण विद्वेषानल धधक उठा था। सिराज समझ गये थे, कि दीन हीन भिखारी अङ्गरेज रोजी रोजगारके वसीले असीम रत्नप्रसविनी बङ्गभूमिमें शक्तिशाली होते जाते हैं। मातामहकी जीवितावस्थामें जो आग उनके हृदयमें धधक रही थी मातामहकी मृत्युके उपरान्त बङ्गके मसनदपर बैठनेके उपरान्तमें वह आग जल जल उठने लगी। तब स्वाधीन नवाब सिराजुद्दौलहने देखा, कि जिन अङ्गरेजोंने मुसलमान नरपतियोंसे भीख मांगकर भारतमें विपणी पत्तनके लिये एक स्थान पाया था, वही अङ्गरेज दाक्षिणात्यमें प्रभूत बलशाली हैं, बङ्गालमें वह अतीव क्षमता-पन्न हैं बीज धीरे धीरे विशाल वृक्ष बन रहा है मुट्ठीभर धूलि क्रमसे भीम गिरिकलेवर बन रही है, दीन हीन भिखारीने दुर्जय वीरत्व विक्रमसे और प्रचुर धन जन सम्पत्से बलवान् होकर मन्द्राजमें और बङ्गालमें किले तयार कर लिये हैं। बङ्गालके स्वाधीन नवाब सिराजुद्दौलहसे यह सब सहा कैसे जाता?

सिराज बचपनसे प्रतिपालक पितृस्थानीय अलीवर्दीके लालन पालनसे परिवर्द्धित और अपरिपक्व यौवनमें बङ्गालके सिंहासनपर अधिष्ठित हुए थे। सिराजुद्दौलहका यौवन [illegible] चित्त किसी किसी कालमें कलुषित [illegible] रहा। [illegible] [illegible] अङ्गरेज इतिहास लेखक उसमें असीमाक

गर्भविदारण नौका-निमज्जन प्रभृति जिन कलङ्कोंकी बात कहते हैं, उनका दृष्टान्त "मुताखिरीन," और तो क्या,—ओरमीके "इन्डोस्तान"में भी दिखाई नहीं देता। "मुताखिरीन"के मतमें वह निष्ठुर, निर्बोध और लम्पट थे। उनकी निष्ठुरताके प्रमाणमें "मुताखिरीन"में जो दृष्टान्त है, उनसे जान पड़ता है कि वह शत्रुओंको नाश करनेमें बड़ी निष्ठुरतासे काम लेते थे। साधारण प्रजाको पीड़ा देनेका कोई प्रमाण नहीं मिलता। हमें मानवजीवनमें किसी तरहकी निष्ठुरता प्रार्थनीय नहीं है किसी तरहकी निष्ठुरताकी पोषकता भी हम करना नहीं चाहते, किन्तु सभ्य जगतमें भी तो निष्ठुरता विरल नहीं है। सिराजुद्दौलह निष्ठुर हों सिराजुद्दौलह लम्पट हों किन्तु यह अस्वीकार किया नहीं जा सकेगा कि उन्होंने इस अल्प वयससे अङ्गरेज वणिकोंकी दुराकाङ्क्षा हृदयङ्गम करके आलदूरदर्शिताका परिचय दिया था। फिर भी उन्होंने अङ्गरेज विक्रमका परिणाम स्थिर करके जिस दूरदर्शिताका परिचय दिया था अपने अव्यवस्थचित्तता दोषसे उसके प्रतिविधानका प्रकृत पथ निर्णयका परिचय वह दे न सके।

अलीवरदीकी मृत्युके दो दिन बाद सिराजद्दौलहने बाल कत्ताकी अङ्गरेज कम्पनीको पत्र लिखकर कृष्णदासको माग था। इस चिट्ठीके भेजनेके सम्बन्धमें अरमीके इतिहाससे एक रहस्यतत्त्व जाना जाता है। किन्तु मुसलमानोंके इति हासमें इस रहस्यका जिक्रतक नहीं है। जो पत्रवाहक सिरा जुद्दौलहका पत्र लाये थे वह रायरामसिंहके भाई

थे।* वह एक छोटी नावसे कलकत्तेके एक साधारण सौदागरकी सूरतमें उमिचन्दके मकानमें उपस्थित हुए। उमिचन्दने उन्हें साथ ले जाकर हालवेल साहबसे उनका परिचय करा दिया। हालवेल साहब उस समय कलकत्तेके पुलिस सुपर इण्ट थे।

सिराजुद्दौलहके भेजे हुए पत्रकी व्यवस्थाकी मीमांसाके लिये कौन्सिलका एक अधिवेशन हुआ। कौन्सिलके अनेक सभ्य उस समय उमिचन्दके विरुद्ध थे। उन्होंने निश्चय किया, कि यह आदमी सिराजुद्दौलहका भेजा हुआ नहीं है यह सब उमिचन्दकी कारीगरी है, उमिचन्द भय दिखाकर कौन्सिलके साथ पूर्ववत् व्यवसायसम्पर्क करनेका प्रयास कर रहे हैं ऐसे समय सिराजुद्दौलह अपनी ज्येष्ठतात पत्नीपर आक्रमण करनेके उद्योगी हुए हैं, इसलिये सिराजुद्दौलहका आदमी भेजना सम्भव नहीं। इस तरहके सन्देहसे कौन्सिलने पत्रवाहकका अपमान करके उसे भगा दिया।

पत्रवाहकने मुरशिदाबादमें नवाब सिराजुद्दौलहके पास लौटकर अपने अपमानकी सब बातें सुनाई। कासिमबाजारके वाटस साहबने इस देशके आदमियों द्वारा सिराजुद्दौलहको सन्देहकी सब बात समझा बुझा दी।

इसपर सिराजने क्रोध संवरण किया,—रमजानके सम-

* रायरामसिंह अलीवर्दीखांके एक प्रियपात्र कर्मचारी थे। गुप्तचरोंकी अध्यक्षता ही उनका काम था।

नमें उन्होंने कोई बात नही उठाई। * मुसलमान इतिहास लेखक कहते है कि कलकत्तेकी कम्पनी कृष्णदासको सिराजु-द्दौलहके हवाले करनेपर राजी नहीं हुई। इसीलिये सिराजुद्दौलह क्रोधसे प्रज्वलित हो उठे।

सिराजुद्दौलहके क्रुद्ध होनेका और एक सुदारुण कारण उपस्थित हुआ। उन्हें खबर मिली, कि अङ्गरेज कलकत्तमें नया किला बनाते हैं। अङ्गरेजोंकी ओरसे चिट्ठी गई,— नया किला नही बनाते, फ्रान्सके साथ युद्धकी आशङ्का है इसीलिये पुराने किलेकी मरम्मत कर रहे हैं।

सिराजुद्दौलहके नाराज होनेमें असम्भव क्या है? वह एक स्वाधीन तेजस्वी नवाब थे। उनके राज्यके एक अपराधीने अङ्गरेजोंका आश्रय लिया सिराजुद्दौलहने उसे माग भेजा, किन्तु अङ्गरेजोंने उनकी बात नही रखी। आज यदि कलकत्तेसे कोई अपराधी फ्रान्स्डाङ्ग भाग जावे और अङ्गरेज राज यदि उसे मांगनेपर न पावें, तो क्या अंगरेज राजको क्रोध न आवेगा?

इसी समय सिराज पुरनियामें मंझले व्य छतातसत अ्यद अहमदके पुत्र नवाब शौकतजङ्गपर फौज लिये चढ़े जाते थ किन्तु राजमहलके पास अङ्गरेजोंकी चिट्ठी पाकर क्रोध-व्यञ्जित वालेवरसे वह लौट आये।

माना कि नया किला नही अङ्गरेज आत्मरक्षार्थ पुराने ही किलेकी मरम्मत करते थे। किन्तु जो सिराजुद्दौलह सहज

---

* Ormes History of Indostan Vol II.

सुहृतोंने अङ्गरेज वणिकोंके भविष्यत् छाया-चित्रकी कल्पना करके खटका करते थे जो सिराजुद्दौलह स्थिर प्रत्येक पलक विक्षेपसे ब्रटिश सिंहके विशाल वदनको व्यादित समझते थे जो सिराजुद्दौलह उस व्यादित-वदनके भीतर वणिकके विराट विश्वोदरमें समग्र भारतभूमि निहित देखते थे, अङ्गरेजोंका इस संस्कार भी उन्हीं सिराजद्दौलहको सहन कैसे होगा?

कलकत्ता जय।

नवाबने कुछ भी देर न कर कासिमबाजारके अङ्गरेजी किलेपर आक्रमण करनेके लिये तीन हजार सिपाही भेजे। सन् १७५६ ई॰ की २०वीं मईको इस फौजने कासिमबाजार पहुंचकर अङ्गरेजी किलेको घेर लिया। २री जनको स्वयं नवाब बाकी फौज लेकर आ मौजद हुए।

कासिमबाजार किलेके आदमियोंने आत्मरक्षाके लिये युद्ध न करके सिराजद्दौलहके हाथ आत्मसमर्पण किया। * कलकत्तेकी अङ्गरेज कम्पनी कासिमबाजार पतनका समाचार पाकर अत्यन्त भीतिग्रस्त हुई। † इनमें एक तृतीयांश

* अरमी कहते हैं—सिराजुद्दौलहके सैनिकोंका अत्याचार असह्य समझकर कासिमबाजारके अङ्गरेज सेनापति एनसाइन इलियटने गोली मार आत्महत्या कर ली।

† Thornton's History of India Vol. I. p. 183.

अधिक अङ्गरेज नहीं थे। इसमे सन्देह है, कि इनमे प्रकृत रणक्षम कोई था या नहीं। किलेमे कई शिक्षित सिपाही थे। कलकत्तेमें जरूरत पड़नेपर लड़ने लायक कितने ही यूरोपवासी और देशवासी थे किन्तु उन्होंने जङ्गी कामोंकी वैसी शिक्षा नहीं पाई थी। कितने ही बन्दूकका सीधा उलटातक नहीं जानते थे। * किलेकी फौज और बाहरकी अमाली फौजमें सब मिलाकर कुल ५१४ सिपाही थे। शहरके कोई ३ हजार आदमियोंने आकर किलेमे आश्रय लिया। दुर्ग भी ऐसा जबरदस्त नहीं था। जितनी बारूदादि थी, उससे पूरे तीन दिन भी सामना किया नहीं जा सकता था। जो कुछ था उसमे अधिकांश पुराना गला पचा। तोपोंकी गाड़ी नहीं था। कितनी ही निकम्मी तोपें किलेकी दीवारके पास पड़ी थी।

सहायताके लिये बम्बई और मन्द्राज आदमी भेजे गये थे, किन्तु वहांसे समयपर सहायता आ पहुंचनेकी सम्भावना किसी तरह की नहीं जा सकती थी। डच और फ्रान्सीसियोंसे सहायता मांगी गई थी। डचोंने सहायता देनेसे इनकार कर दिया था। फ्रान्सीसी राजी हुए थे सही किन्तु उन्होंने अङ्गरेजोंको कलकत्ता छोड़कर चन्द्रनगर चले जानेके लिये कहा था। अवश्य ही इस प्रस्तावसे अङ्गरेज सम्मत नहीं हुए। इसी समय नवाबने भी डच और फ्रान्सीसियोंसे सहायता मांगी थी किन्तु मिली नहीं। नवाब मन ही मन

* Holwell's India Tracts.

अत्यन्त असन्तुष्ट हुए थे सही, किन्तु उन्होंने अपना असन्तोष कार्य्यसे प्रकाश नहीं किया था। उन्होंने समझा था कि इस समय उनसे झगड़नेसे वह लोग अङ्गरेजोंके साथ मिल जावेंगे। इससे अनर्थ घोरतर घनीभूत हो जावेगा। सिराजुद्दौलहकी यह अवस्थाभिज्ञता और दीर्घदर्शिताका परिचय है।

सिराजुद्दौलहने ६वीं जूनको ससैन्य कलकत्ते की ओर यात्रा की। १५वीं जूनको सब फौज हुगलीमें आ पहुंची। इससे पहले ६वीं जूनको कलकत्ते में उमिचन्द्रके भवनमें एक भयानक घटना संघटित हुआ था। नवाबके गुप्तचरके अध्यक्षने उमिचन्द्रको एक चिट्ठी भेजी थी। उसमें उमिचन्द्रको सावधान होनेका आभास दिया गया था। अपने परिवार और सम्पत्तिको किसी निरापद स्थानमें रख आनेका परामर्श भी इस पत्रमें था। यह चिट्ठी किसी तरह अङ्गरेजोंके हाथ पड़ गई। इसके पहले ही अङ्गरेज कम्पनी उमिचन्द्रपर नाराज थी। इस पत्रसे उसने उमिचन्द्रपर तरह तरहके सन्देह करके उन्हें किलेमें बंद कर दिया। मकानकी चारों ओर हथियार बन्द तीन सन्तरी नियुक्त किये गये। उमिचन्द्रका साला हजारीमल भीतरी महलमें छिपा हुआ था। एक सिपाही उसकी खबर पाकर उसे गिरफ्तार करने गया किन्तु उमिचन्द्रके प्राय तीन सौ नौकरोंने इसमें बाधा दी। दोनों ओरसे चल गई। खासी मार काटमें दोनों ओरके कितने ही आदमी आहत हुए। एक जनअभिमानी कर्म्मचारीने परिवारवर्गकी रक्षा असाध्य देखकर मकानमें आग लगा दी। सम्भ्रान्त स्त्रियां थीं स्त्रियोंका शत्रुसे पकड़कर कलङ्कित होनेके भयसे उन्होंने

पहले यावतीय रमणियोंको (१३ को) हत्या की। इसके बाद अपना भी गला काट लिया। किन्तु इससे वह मरे नहीं। इस समय कृष्णदास उमिचन्द्रके मकानमें थे। अङ्गरेजी किलेसे आदमी गये और उन्हें वहांसे ले आये।

हुगली पहुंचकर सिराजुद्दौलहने बड़े तेजके साथ ससैन्य कलकत्तेकी यात्रा की। १६वीं जूनको कलकत्ता-दुर्गवासियोंको नवाबके आनेका समाचार मिला। सुहूर्त्तभरमें हलचल पड़ गई। बड़ी घबराहट फैली। सभी अफसरी पानेके उद्योगी हुए। कोई किसीकी बात न मानता। उसी समयके किलेके एक आदमी लिख गये है,—"सभी सलाह देनेके लिये तय्यार थे, किन्तु प्रकृत सलाहकी शक्ति किसीमें नहीं थी।" *

शत्रुओंकी ओरसे अविरलधारसे अङ्गरेजी किलेपर गोले बरसने लगे। दुर्गवासियोंने चेष्टा की थी किन्तु उन असंख्य अग्निवर्षी गोलोंके सामने कबतक आत्मरक्षा की जा सकती थी? दुर्गरक्षा कठिन देखकर १८वीं जूनको दुर्गस्थ स्त्रियां जहाजपर भेज दी गईं। उन्हें जहाजपर पहुंचानेका भार लेकर मानिङ्गहम और फ्राकलाण्ड नामक दो सिविलियनपुङ्गव जहाजसे भागे। उससे कितनों होने उनका पथानुसरण किया। गवरनर ड्रेक और सेनापति कप्तान मिनचिनने भी जहाजकी राह देखी। जहाजकी ओर भागनेमें नाव डूबनेसे कितने ही लोग मरे।

दुर्ग अब अध्यक्षहीन रहा। जो लोग दुर्गमें थे, उन लोगोंने सलाहानुसार आत्मरक्षार्थ प्रयासी होकर कौन्सिलके

---

* Cook's Evidence in First Report of Select Committee of the House of Commons, 1772.

अन्यतम सभ्य हालवेल साहबपर कर्तृत्वभार अर्पण किया। हालवेल साहब हिम्मतसे छाती बांधकर दुर्ग रक्षाके लिये शत्रुकी ओर गोले बरसाने लगे।*

दुर्गपर निशान लहराने लगा। भगेले जहाजियोंसे सहायता देनेके लिये सङ्केत किया गया। जहाज नदीके किनारेकी ओर आने लगा किन्तु दुर्भाग्यक्रमसे बालूमें अटक गया। दुर्गवासियोंकी सहायताको कोई न आया। किसी किसीने कहा—यह सब कापुरुष अङ्गरेज कुलाङ्गार हैं। कापुरुषता अङ्गरेज चरित्रमें महाकलङ्क है। इन सब कापुरुष अङ्गरेजोंका नाम लेनेसे लज्जा घृणासे अङ्गरेजोंका शिर नीचा होता है। हालवेल साहब दो दिनोंतक बराबर लड़ते रहे, किन्तु रिपुविक्रमसे शत्रुसैन्यने क्रमसे आगे बढ़कर शहरके घर घरमें आग लगा दी। क्रमशः शत्रुने किलेपर कबजा कर लिया।

दुर्ग अधिकृत होनेपर नवाब सेनापति मीरजाफरके साथ दुर्गमें प्रवेश किया। उमिचन्द्र और कृष्णचन्द्र उनके सामने लाये गये। किसीके प्रति असद्व्यवहार नहीं किया गया। इसके उपरान्त हालवेल साहबको अभय प्रदान किया गया। हालवेल साहबने अपनी बनाई किताबमें यह बात स्वीकार की है।†

* इस समयके लोग कहते हैं, कि हालवेल साहबमें साहस वीर्य नहीं था। कोई उपाय न रहनेकी वजहसे उन्हें इस समय लड़ना पड़ा था। Ives Journey P. II.

† Halwell's India Tracts

"ब्लाक होल" वा "अन्धकूप।"

अब वह लोमहर्षण अन्धकूप विवरण है। अङ्गरेजी इतिहासमें जिस अन्धकूपका भीषण वर्णन पढ़नेसे भयसे, विस्मयसे अभिभूत होना पड़ता है, इस बार उसी अन्धकूपका विवरण करेंगे। अन्धकूपका वैरनिर्य्यातन भारतके अङ्गरेज राजत्वकी नीव है। अन्धकूपके लिये नवाब सिराजुद्दौलहपर आज भी अजस्र धारसे अभिसम्पात वर्षित होता है। अन्धकूपमें सिराजुद्दौलहका पैशाचिकत्व अप्रक्षालनीय है।

ओरमी, आइविस, ष्टुआर्ट प्रभृति प्राचीन इतिहास-लेखकोंसे लेकर वर्त्तमान कालके लेथब्रिज विवरिज पर्य्यन्तने अन्धकूपका थोड़ा बहुत वर्णन किया है। उस वर्णनका कुछ परिचय लीजिये।

१ सौ ४६ आदमी कैद हुए। एक बीस वर्ग फुट लम्बी चौड़ी कोठरीमें यह सब भर दिये गये और उस कोठरीका द्वार बन्द कर दिया गया। * यह कोठरी अपराधी सैनिक पुरुषोंके कारागारस्वरूपसे काममें लाई जाती। २०वीं जून,—दारुण तपनका दिन था। रातके समय भयानक तपन पड़ रही थी। इस कोठरीमें सिर्फ दो छोटे छोटे गवाक्ष थे। १४६ प्राणियोंके देहसंघर्षणसे और दारुण ग्रीष्मके अत्यधिक प्रादुर्भावसे इस बन्द कोठरीमें रहना बड़ा ही कठिन था। धीरे धीरे निश्वास ही असह्य हो उठा। सभीने आत्मरक्षाके लिये द्वारोंपर आघात करके उसे तोड़ डालनेकी चेष्टा की।

---

* कोई कोई कहते हैं १८ वर्ग फुट।

चेष्टा विफल हुई।—सभी उन्मत्त हुए। कैदी हालवेल* कभी डांटकर कभी खुशामदकर सबको शान्त करनेकी चेष्टा करने लगे। उन्होंने दरवानोंको कहा,—"भाई! तुम्हें एक हजार रुपये दूंगा, तुम हमें इस कोठरीसे निकालकर दो कोठरियोंमें बन्द करो।" दरवानने चेष्टा की, किन्तु कोई उपाय नहीं हुआ। हालवेलने इसके उपरान्त उसे उससे अधिक रुपये देना स्वीकार किया। दरवान चला गया, किन्तु लौटकर उसने कहा,—"बड़ी मुशकिल है, नवाब सोते हैं, उन्हें कौन जगा सकता है?"

धीरे धीरे यन्त्रणा बढ़ी। पसीनेकी धारा बही। प्याससे छाती फटने लगी। दम लेना प्रायः मुशकिल हो गया। सबने अपने अपने कपड़े उतार डाले। टोपियां उतार डालीं। वेदनासे घोर आर्त्तनाद उठा। अविराम पसीना बहनेसे, एकाएक बहुतेरे कितने ही लोग गिर पड़े। खड़े आदमियोंके पैरोंतले पड़कर वह लोग मर गये। सिर्फ आर्त्तनाद ही

* सन् १७६४ ई०में इन्हीं हालवेल साहबने विलायतमें India Tracts' नामकी किताब छपाई। इस किताबमें एक पत्रपर अन्धकूपका विवरण रत्ती रत्ती लिखा गया है। दूसरे लेखकोंने उन्हींका वर्णन ग्रहण किया है। उन्होंने एक जगह लिखा है—'मैं भी कैद हुआ था। पसीनेसे मेरी पोशाककी आस्तीन भीग गई थी। भयानक प्याससे मैंने वही चूस चूसकर भीगी आस्तीन चाटी थी।'

देता था। "पानी पानी।" की चिल्लाहट हुई। जमादारने पानीकी मशक ला लाकर हवादानके पास रखी। सभी त्राहि त्राहि पुकारते हवादानकी ओर लपके। किन्तु पानीसे यन्त्रणा बढ़ गई। सभी आगे पानी पीनेकी चेष्टा करते थे। जो बलवान् था, वह दुर्बलको हटाकर पानी पीनेके लिये अग्रसर हुआ। दुर्बलने गिरकर प्राण त्याग किये। हवादानके पास खड़े होकर, किसी किसीने टोपोमें पानी भर भरकर पीनेके लिये लोगोंको दिया, किन्तु उससे प्यास नहीं मिटी। प्याससे विषम विकार उत्पन्न हुआ। पहरेदार देखकर हंसी दिल्लगी करने लगे। किसी किसीने हवादानके पास चिराग रख उसके प्रकाशमें कैदियोंकी दुरवस्था देख उनकी हंसी की। गोली खाकर मरनेके लिये कोई कोई पहरेदारोंको गालियां देने लगे। कोई अन्तिम समय समझ भगवानका नाम लेने लगे। धीरे धीरे,—सब मर गये,—सिर्फ २२ प्राणी बचे। हालवेल अचेत होकर मृतवत् पड़े थे। सवेरे कारागारका द्वार खोला गया। जीते कैदी नवाबके पास भेजे गये। मरे हुओंकी लाशें पयःप्रणालीमें गाड़ दी गईं।

ऐसा ही भीषण वर्णन सब अङ्गरेजी इतिहासोंमें देखोगे। दो चार अङ्गरेजी इतिहास लेखकोंके सिवा बाकी सब अन्धकूपकी निष्ठुरताके लिये सिराजुद्दौलहको जिम्मेदार ठहराते हैं।

मालिसन साहबके मतसे अन्धकूपकी निष्ठुरता सिराजुद्दौलहपर आरोपित हो नहीं सकती। यह उनके अधीनस्थ कर्मचारियोंका काम था। उन्होंने अङ्गरेज कैदियोंको

मारनेकी आज्ञा नहीं दी थी। वह हालवेलकी बातके प्रमाणपर ऐसे मत-पोषणमें सक्षम हुए हैं। *

इतिहास-लेखक टरेन्स कहते हैं,—"इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि सिराजुद्दौलहकी आज्ञासे यह काम किया गया। अङ्गरेज कैदियोंकी हत्याकी इच्छा रहनेसे वह कभ २६ आदमियोंको यह भीषण बात मशहूर करनेका अवसर न देते। †

जो सब इतिहास-लेखक अन्धकूपकी बात उठाकर, नवाब सिराजुद्दौलहको अति निठुर समझ, उनपर कटाक्ष करते हैं, टरेन्स उन्हें 'ग्लानको'का हत्याकाण्ड स्मरण करा देना चाहते हैं। इयटर साहब भी सिराजुद्दौलहको सरासर दोष लादनेके लिये प्रस्तुत नहीं हैं।

अन्धकूप हत्यामें मेकालेने सर्वापेक्षा घोरतर घनीभूत रङ्गसे सिराजुद्दौलहकी प्रकट पैशाचिक मूर्ति अङ्कित करके नयनचक्षु गोचर की है। ‡

अन्धकूपकी बात किसी अङ्गरेजी इतिहासमें अस्वीकृत नहीं है, किन्तु सिराजुद्दौलहके दायित्व सम्बन्धमें मतविरोध है। किन्तु अन्धकूपकाण्डके अस्तित्वस्वीकारमें हम सम्पूर्ण असम्मत हैं। पूर्वोक्त तीनो फारसी भाषाके इतिहासमें

---

* Malleson's Decisive Battles of India P. 46.

† Torrens Empire in Asia p. 26

‡ Lord Clive in Critical Historical Essays P. 510.

इसका बिलकुल उल्लेख नही है। मुताखिरीन" एक प्रमाण इतिहास है। मुताखिरीन कहता है,—"दुर्ग अधिकार करनेपर लूट ताराज हुई थी। कितने ही अङ्गरेज कैद किये गये। कितनी ही बीबिया मीरजाफरके अनुगत अनुचर मिरजा अमीरबेगके हस्तगत हुई। मिरजाबेग पभुकी अनुमति लेकर उन्हे जहाजपर पहुंचा आये। *

---

* मिष्टर डिरेग तङ्ग होकर मुजनरिवाना कई आदमियोसे जहाजपर सवार होकर अलग हो गया, और बाकी मांदह शामतक गोला बारूद रहा लडते रहे। आखिरको बाज मारे और बाज पकड़े आये और बड़ा माल और जिन्स नफीस कम्पनिये अङ्गरेज और दीगर सौदागरे हिन्द और इङ्गलिस्तान और अरमन वगैरहकी कोटियोंसे लश्करके लुच्चोंने लूट ली। यह हाल २२वीं तारीख रमजानके, सन् ११६६ हिजरीमें दो महीने बड़े दिन बाद महाबतजङ्गके मरनेसे वाके हुआ।

मिष्टर वाटस् वगैरह (जो कासिमबाजारकी कोठीमें थे) जिन्दा कैद हुए, और कई औरते, इङ्गलिस्तानी, मिरजा अमीर बेगके (जो कि रफीक महम्मद जाफरखांका था) हाथ आईं। लेकिन मिरजाय मजकूरने कमाल अमानत और दियानतसे मीर महम्मद जाफरखांको खबर करके पोशीदा सिराजुद्दौलहसे, उनको मिष्टर डिरेगके जहाजपर, जो लश्करसे दश बारह कोस था पहुंचा दिया, और कल कत्ताकी वीरानीके बाद मानिकचन्दको, जो दीवान था, राजा ...मानने पाच हजार सवार आठ नौ हजार प्यादेसे कल

मुताखिरीनके अङ्गरेजी अनुवादक कहते हैं, कि यह घटना समस्त बङ्गाल, और तो क्या शायद कलकत्तेमें भी कोई जान न सका। किन्तु आरमी कहते हैं, कि इस घटनाके उपरान्त कितने ही अङ्गरेजोंने कलकत्तावासियोंकी कुटियोंमें आश्रय लिया था। तब कैसे कहें, कि कलकत्तेका कोई इसे जान नहीं सका?

मुहम्मद अलीखांके, "तारीफे मुजफ्फरी" ग्रन्थमें अन्ध-कूपका कोई उल्लेख नहीं है। अङ्गरेज इतिहास-लेखक इस ग्रन्थको ठीक बताते हैं। इस ग्रन्थमें लिखा है,—"ड्रेक साहबके भागनेपर किलेके बाकी लोगोंने बड़ी हिम्मतके साथ युद्ध किया, किन्तु क्रमशः उनकी बारूद तमाम हो गई, दुर्ग शत्रुओंके हाथ पड़ा। लड़ाईमें कितने ही लोग मारे गये, कितने ही बन्दी कैद किये गये।"

हरिचरणदासकृत 'चहार गुलजार'में अन्धकूपका नाममात्र नहीं है।

अन्धकूपके प्रकृत अस्तित्वका प्रमाण क्या है? सचमुच ही क्या अन्धकूपका विवरण कल्पना नहीं जान पड़ता? अन्धकूपको अमूलक समझ सन्देह करनेका और भी अकाट्य प्रमाण है। कलकत्ता पुनर्ग्रहणसङ्कल्पसे मन्द्राजसे आकर वृटिश एडमिरल वाटसन साहबने नवाबको जो पत्र लिखा

कलसे होशियार सिराजुद्दौला आप मुरशिदाबाद अपने दारुलअमारत (को चला आया। खुलासाय तवारीख सिया रुल मुताख्रिरी।

था उससे सन्देह घनीभूत हो जाता है। उनके उस पत्रमें अन्धकूपकी निष्ठुरताका कोई उल्लेख नहीं है। *

वाटसनकी चिट्ठीमे अन्धकूपका आभासमात्र नही है। लोग कहते हैं कि जिस अन्धकूपका समाचार पाकर वैरनिर्य्यातनकल्पसे वाटसन और क्लाइव बङ्गाल आये थे वाटसन और क्लाइवके पत्रमें उसका उल्लेखमात्र नहीं है। वाटसनके पत्रमें है,—"हमारे कारखाने लूट लिये बहुतोको मार डाला।"

उस भीषण "अन्धकूप की बात कहां है? उस निर्म्मम निष्ठुरताका आभास कहां है? इतनी बडी लडाईमे कुछ आदमियोके मारे जानेमे आश्चर्य क्या है? पत्रमे सिर्फ यही भर्त्सना-सूचना है, कि युद्धमें कितने ही लोग मारे गये हैं।

एक छोटी कोठरीमें एक सौ छियालीस नरजीव बन्द हुए, "पानी पानी"का आर्त्तनाद उठा, प्यासकी यन्त्रणासे एक

---

* नवाबने अङ्गरेजोंको और अङ्गरेजोने नवाबको कितनी ही चिट्ठिया लिखी थीं। अवश्य ही नवाबकी चिट्ठियां फारसी भाषामें लिखी गई थीं। आइविस साहबने उनका अङ्गरेजीमें अनुवाद किया था आइविस साहब एडमिरल वाटसनके जहाजके डाक्टर थे। इन्ही आइविस साहबने Voyage from England to India नामकी जो पुस्तक लिखी है, उसमें अङ्गरेज और नवाबकी चिट्ठिया और मुलहनामे छपे है। पुस्तकके बीचमें उन सबको प्रकाश करना उचित न समझ उनका अनुवाद इस पुस्तकके परिशिष्टमे जोड़ दिया गया है।

में तेईस प्राणी मर गये, बचे हुए तेईस अधमरे हो गये। किन्तु इस चिट्ठीमें उस दारुण हृदयका उस निर्म्मम निष्ठुरताका यातना-विकाश कुछ भी नहीं हुआ। अन्धकूप सत्य होनेसे जिस पत्रकी पंक्ति पंक्तिसे, अक्षर अक्षरसे, मर्म्मतापका तप्तश्वास विच्छुरित है, उसी पत्रमें अन्धकूपका वर्णन आग्नेय अक्षरोंसे लिखा जाता। पत्रमें उस "कूप की बात, उस "कूप"की एक उंगलीकी भी बात लिखी नहीं है। ऐसे पत्रसे' पिपासित रुद्ध-श्वासमृत प्राणिगणकी प्रेतात्मा और उनके शोणितसम्बन्ध जीवित आत्मीय जनकी जीवात्मा क्या सन्तुष्ट हो जाती?

वाटसनके पत्रमें अन्धकूपकी बात नहीं है, क्लाइवके भी पत्रमें नहीं है। क्लाइव जब मन्द्राजसे कालेपानी पहुंचे थे, तब उन्होंने सिराजुद्दौलहको पत्र लिखा था। इस पत्रमें यह बड़ी बात थी,—"ड्रेककी अनधिकारचर्चासे जो अपराध हुआ है, उसे क्षमा कीजिये, मैं रुपये देता हूं, पहलेकी तरह कोठी कायम करनेकी अनुमति दीजिये, आपके राजत्वमें फिर अङ्गरेजोंका वाणिज्य प्रतिष्ठित हो जानेसे दोनो ओरका मनोमालिन्य दूर हो जावेगा।" *

क्या अब भी न कहेंगे, कि अन्धकूपकी बात गलीक है? क्या फिर भी मनमें नहीं आता कि यह एकमात्र हालवेलकी कल्पना है? दुरन्त दुराचार क्लाइवने वैरनिर्य्यातनके लिये बङ्गाल आकर बङ्गालके नवाबको जो चिट्ठी लिखी, उसमें नवाबके दुरपनेय कलङ्क अन्धकूपका उल्लेख बिलकुल ही नहीं

* मुताखिरीन।

है, वल्कि स्पष्टाक्षरसे अङ्गरेज पक्षकी त्रुटि स्वीकार की गई है। अन्धकूप सत्य होनेसे, वैरनिर्य्यातनकी आकर वह बात न करनेके पात्र क्लाइव नहीं थे।

इसके उपरान्त ईष्ट इण्डिया कम्पनीके चेयरमेनको नवाबके साथ सन्धि करनेके सम्बन्धमें क्लाइवने जो पत्र लिखा था उसमें भी अन्धकूपकी कोई बात नहीं लिखी। * उस समयके अन्यान्य अङ्गरेज हाकिमोंसे क्लाइवकी जो रञ्जिश हो गई थी, इस पत्रमें उसका उल्लेख था, और थीं यह कई बातें,— "कलकत्ते के अभागे अङ्गरेज अधिवासियोंके लिये नवाबको जो कुछ कहना था, उसके कहनेमें हमने कोई त्रुटि नहीं की है।" इस पत्रमें अन्धकूपका आभासमात्र नहीं है। अङ्गरेज इतिहास लेखक थरनटन साहबने लिखा है,—'नवाबके साथ जो सन्धि हुई है, उसमें नवाबकृत अनिष्टका क्षतिपूरण जोड़ लिया गया है किन्तु अन्धकूपका कोई क्षतिपूरण जोड़ा नहीं गया। † अन्धकूप होता, तब तो उसका क्षतिपूरण जोड़ा जाता। अन्धकूप उस समयतक नहीं था, इसके बाद उसकी कल्पना हुई। विधाता क्लाइवको यदि अन्धकूप सम्बन्धी भविष्यत्का हाल जाननेकी शक्ति देते तो जो क्लाइव जाल फरेब करनेमें तनिक भी कुण्ठित नहीं हुए वह अन्धकूपकी कल्पनामात्रसे ही नवाबसे क्षतिपूरण मांगनेमें तिल परिमाणसे भी लज्जानुभव न करते। क्लाइव मन्द्राजसे नवाबके नाम जो सब पत्र लाये थे, उनमें भी

---

* Thornton's British India Vol I. P. 216.

† सन्धिकी शर्त्तें आगे प्रकाशित की गई हैं।

अन्धकूपका आभासमात्र रहनेसे साहब निश्चय ही उसी आभासमात्रसे अन्धकूपका सर्व्वनाशकर एक भीषण विकट विशाल चित्र अङ्कित कर जाते।

अन्धकूप नही था। अन्धकूपकी बात अलीक है। आजकाल हालवेल साहबका "नेरेटिव" और "सेलेक्ट कमिटी" की रिपोर्ट अन्धकूपके अकाट्य प्रमाणस्वरूपसे परिचित हैं। यदि पलाशीके पहले यह सब प्रकटित होते तो उनसे सन्देह करनेके पथमें बहुत कुछ विघ्न होता। पलाशीमें जब अङ्गरेज-भाग्य निर्णीत हो गया जब पलाशीकी वह कलङ्ककहानी जगन्मय विघोषित हो चुकी, तब हालवेलका 'नेरेटिव और उसके बहुत दिनोंके बाद 'सेलेक्ट कमिटी' की रिपोर्ट प्रकाशित हुई।

अन्धकूपमें जिन सब आदमियोंके मारे जानेकी बात कही जाती है, उन सब आदमियोंके स्मरण चिह्न स्वरूप हालवेल साहबने अपने खर्चसे एक स्तम्भ * प्रस्तुत कराया था। अन्धकूप हत्याके उल्लेखनिर्णयमें जिन सब इतिहासोंके नाम दिये हैं उन सब इतिहासोंमें इस स्मरण स्तम्भके सम्बन्धमें किसी बातका उल्लेख नही है। इससे पहले कलकत्तेके हलनुब कम्पनी द्वारा प्रकाशित किसी ग्रन्थके पढ़नेसे मालूम हुआ था, कि सन् १८१८ ई० में "कष्टम हाउस" बननेके समय यह स्मरण-स्तम्भ तोड़कर फेंक दिया गया था। वष्टिड साहबने भी इस बातकी घोषणा की थी। वष्टिड साहबने कहा

* इस स्तम्भमें जो कई बातें लिखी गई हैं, वह यह हैं,—

था, कि अन्धकूपमें जो लोग मारे गये, सिर्फ उन्हीके लिये नही जिन लोगोंने दुर्ग रक्षार्थ आत्मप्राण विसर्ज्जन किये थे, उनके स्मरणके लिये भी यह स्तम्भ बनवाया गया था। अब प्रश्न

To

THE MEMORY

of

Edw Eyre Wm. Baillie The Rev. Fervas Bellamy. Messers, Jenks, Revely, Law, Coaler, Valicourt, Jebb, Torriano, E. Page S, Page Grub, Street, Harod, P Johnstone, Ballard, N. Darke, Carse, Knapton, Gesling, Dod, Dalrymple, Captains Glayton, Buchanan, Witherington, Lieuts, Bishop, Hays, Blagg, Simpsom, J. Bellamy, Ensigns Paccard Scot, Hastings, C. Wedderburn, Dumbleton, Sea Captains Hunt, Osburne, Purnell, Messers. Carey, Leech, Stevenson, Guy, Porter, Parker, Caulker, Bendell, Atkinson, who with sundry other Inhabitants. Military and Militia to the Number of 123 Persons, were by the tyranic violence of Sirajud-Dowla, Suba of Bengal suffocated in the Blak Hole Prison of Fort William in the Night of the 20th Day of June 1756, and promiscuously thrown the succeeding morning into the Ditch of the Ravelin of the Place.

This

Monument is Erected

by

Their Surviving Fellow Sufferer,

J Z. HOLWELL

है कि ऐसा पवित्र स्मरण-स्तम्भ तोड़ क्यों डाला गया? यह क्या कम सन्देहोत्पादक है? यह न होनेपर भी अन्धकूपकी बात यदि दरअसल कल्पना की गई है, तो एक "स्मरण स्तम्भ"की कल्पना कर लेना या "स्मरण-स्तम्भ" खड़ा कर देना क्या बहुत मुश्किल बात है? यह भी ठीक नहीं है, कि ठीक किस समय यह स्तम्भ खड़ा किया गया। *

हालवेलकृत ग्रन्थके जिस पत्रमें अन्धकूपका विषय वर्णित है, उसे पढ़नेसे जान पड़ता है, कि हालवेल साहबने सन् १७५६ ई०की २८वीं फरवरीको डेविड साहबको वह पत्र लिखा था। † किन्तु वाटसन साहबने सन् १७५६ ई० के दिसम्बर महीनेमें नवाबको जो पत्र लिखा है, उसमें अन्धकूपकी बातका आभासमात्र नहीं है। "किमाश्चर्य्यमतः परं।" अ,जकल

---

* बष्टिड कहते हैं,—There is no record that I know of to show in what year this monument was put up. As Holwell got himself painted in the supposed act of supervising its erection, it raises the presumption that, the structure took place before he left India in 1760 Echoes from Old Calcutta 2nd Edition P. 46,

† बष्टिडने लिखा है,—सन् १७५७ ई०में हालवेलका स्वास्थ्य नष्ट हुआ। वह साइरेन जहाजसे विलायत भेजे गये। और २८ ... नाद विलायत पहुँचे। जहाजपर ...टेकर

अन्धकूपके महाविस्तार ममन्धमें नानारूप "धींगाधींगी" देख कर भी सन्देह द्रढीभूत होता है। *

चारो ओरकी अवस्थाकी सूक्ष्मभावसे आलोचना करने-पर अन्धकूपकी बात कल्पना ही समझी जाती है। हालवेल का यह कल्पना अहेतुक नहीं है। यह कल्पना क्यों हुई? फ्रान्सीसी हाकिम डुप्ले ने भारतमें अपने देशके हाकिमोंकी सहानुभूति और सहायता नहीं पाई। इसीलिये उनका अध:पतन हुआ। उनके अध:पतनसे भारतमें फ्रान्सीसि योंका अध:पतन हुआ। हालवेलको इस बातकी चिन्ता थी, कि कहीं भारतके अङ्गरेज भी अपने देशके हाकिमोंकी सहानु-

---

उन्होंने अन्धकूपका विवरण लिपिबद्ध किया।' इतने दिनोंतक भारतमें रहकर उन्होंने यह बात नहीं लिखी, और समुद्र वक्षमें मारडेनकी निभृत कोठरीमें बैठकर उन्होंने क्यों लिखा, इसका उत्तर कोई दे सकता है?

* इस पुस्तकका लिखना आरम्भ करनेके बाद एक मित्रने कहा था,—"क्यों भाई! तुम कहते हो, कि अन्धकूप नहीं है, किन्तु यह जो अन्धकूपकी कोठरी और स्थान निर्द्दिष्ट हो रहा है, यह क्या है? अभी उसी दिन पोष्टआफिसमें अन्धकूपको कोठरी निकली है। आज भी पोष्टआफिसकी उत्तर ओरके फाटकपर लिखा हुआ है—

'The stone pavement close to this, marks the posi tion and size of the prison cell in old Fort William, known in history as the Black Hole of Calcutta'

मनि और सहायताके अभावमें भारतमें शायद खड़े होनेकी-जगह न पावें। इसी चिन्ताके फलसे सिराजुद्दौलाके चरितमें परम नृशंसताका आरोप करके हालवेलकी कल्पनाने अन्धकूप तयार किया। अन्धकूपके विभीषण विवरण वर्णनमें विलायती हाकिमोंके हृदयमें निश्चय ही ममवेदनाका आविर्भाव हुआ था। एक स्वाधीन नवाब अकारण ही राज्यच्युत किया गया है, शायद अङ्गरेजोंके नाम यह एक सुदारुण कलङ्क विघोषित हो, इस चिन्तासे भी स्वदेशप्रिय और स्वदेशके सुनामप्रत्याशी हालवेलके मनमें उस कलङ्कको पोंछनेकी उत्कट वासना होना असम्भव नहीं है। वह कलङ्क पोंछनेका प्रत्यक्ष पथ सिराजुद्दौलाके चरित्रपर कलङ्कारोप है। उस कलङ्कारोपकी सहायतासे अन्धकूप हत्याकी सृष्टि है। आजकल जैसे भारतके अङ्गरेज राजत्वमें किसी तरहका अनर्थ वा अकार्य्य होनेसे विलायती पारलीमेण्टमें एक दल उसपर गुल गपाड़ा करता है, उस समय भी विलायतमें वैसा ही एक दल था। हालवेल साहबको इस बातका भी भय था कि यह दल ईष्ट इण्डिया कम्पनीको बात उठाकर शोर मचावेगा। कौन कह सकता है, कि उन्होंका मुँह बन्द करनेके लिये हालवेल साहबने अन्धकूपकी सृष्टि नहीं की?

इसके अतिरिक्त जिस जगह अन्धकूपकी कोठरी बनाई गई है, वहां एक पत्थर लगाया गया है। इस बातसे नवाबने जैसे [illegible] था,— तहखाना जानेपर कितने ही लोग एक स्वरसे नि[illegible] कहते हैं कि इसी जगह मालिकोंका मकान था। [illegible] ही था। इसपर किसने कोई ध्यान न दिया।

'अन्धकूप'के सम्बन्धमें इस समय अनेक लोगोंके मनमें अविश्वास उत्पन्न हुआ है। कुछ लोगोंने अन्धकूपपर अविश्वास करके प्रबन्धादि लिखे हैं। डाक्तर भोलानाथ चन्द्रने एक अङ्गरेजी मासिकपत्रमें स्पष्ट ही लिखा है, कि अन्धकूपका अस्तित्व अविश्वास्य है। उसका प्रमाण यह है,—अट्ठारह वर्ग फुट कोठरीमें एक सौ छियालीस आदमी किसी तरह आ नहीं सकते। *

भोलानाथ बाबूकी बात उड़ा देनेकी नहीं है। जबरदस्त प्रमाण न होनेपर भी अन्धकूप कल्पना सम्बन्धमें यह एक प्रमाण है। कोठरीकी नाप और आदमियोंके हिसाबमें भूल हो सकती है। और एक सुलेखकने हालवेलके कैदियोंके हिसाबको कल्पनासम्भूत प्रमाणित करनेका प्रयास किया है। आप राजशाहीके वकील श्रीयुक्त अक्षयकुमार मैत्रेय हैं। आपने भारतीमें "सिराजुद्दौलह" शीर्षक एक प्रबन्ध धारावाहिक रूपसे लिखा है। प्रबन्धमें एक स्थानमें लिखा है, हालवेल कथित १४६ कैदियोंका कारारुद्ध होना विशेष सन्देहजनक है। इसका प्रमाण यह है, कि जिस दिन हालवेल साहबने दुर्ग रक्षाका भार ग्रहण किया, उस दिन दुर्गमें १७० आदमियोंके होनेकी बात इतिहासमें लिखी है। इन १७० आदमियोंमें दो दिनोंकी लड़ाईमें कितने ही मारे गये थे, कितने ही भाग गये थे और कितने ही मीरजाफरकी कृपासे निरापद कलकत्ते पहुंचे थे। तब १४६ आये कहांसे? आदमियोंकी

* The Calcutta University Magazine, June, 1895.

हिसावके सम्बन्धमें अक्षय बाबूने जिस युक्तिकी अवतारणा की है, उसपर बिलकुल ही निर्भर किया नहीं जा सकता। एक बात यह है, कि जब मरे और भागे हुए आदमियोंका हिसाव नहीं है तो हालवेलका हिसाव एकबारगी ही उड़ाया नहीं जा सकता। और एक बात है, ग्रसी साहबने सह्याद्रमें लिखा है कि २० आदमी हत और आहत हुए थे, ७ आदमी चोट चपेट खा गये थे और ७० आदमी भागे थे। ऐसी अवस्थामें एकाएक कैसे कहें कि हालवेल साहबके हिसावमें त्रुटि है। किन्तु हालवेलके चरित्र और अवस्थाकी आलोचना करनेसे मनमें आता है, कि सिराजुद्दौलहकी निष्ठुरताके प्रमाणके लिये कारागृहकी नाप घटा और कैदियोंकी संख्या बढ़ा देनेकी कल्पना असम्भव नहीं है। जो हो यह जबरदस्त प्रमाण न होनेपर भी एक प्रमाण है। जबरदस्त प्रमाण इतिहासका प्रमाणाभाव है।

अन्धकूप अलीक हो समझा गया। वाटसन या क्लाइव किसीके पत्रमें अन्धकूपकी बात नहीं है। वल्कि सिराजुद्दौलहने अङ्गरेज कम्पनीके दुर्गादि लूटनेके सम्बन्धमें अपनेको निर्दोष प्रतिपन्न करके अपने सिपाहियोंपर बहुत कुछ दोषारोपण किया है। अन्धकूप अलीक है। किन्तु सिराजुद्दौलहने कलकत्तेपर आक्रमणकर जो अङ्गरेजोंको भगाया था, वह सर्ववादिसम्मत है।

सिराजुद्दौलह कलकत्तेपर कब्जाकर १ ली जुलाईतक कल कत्ते रहे थे। उन्होंने अपनी जयके कीर्त्तिगौरवस्वरूप कलकत्तेका नाम अलीनगर यानी 'जगदीशपुर' नामसे बदल दिया था।

विजय और सिराज।

अङ्गरेज इतिहास-लेखकगण कहते हैं,—नवाबके कलकत्त के अवस्थितिकालमे अन्धकूपमुक्त जीवित हालवेल नवाबके सामने लाये गये। नवाबने उनके प्रति किसी तरहकी समवे दना या दूसरे म्रत कैदियोके लिये दुःख प्रकाश नही किया, बल्कि गुप्तधन दिखा देनेके लिये उन्होने हालवेलको सताया था। हालवेलने कहा, कि किसी तरहका धन छिपा हुआ नही है। इसीलिये नवाबने उन्हें कैद करनेकी आज्ञा दी। जिसपर हालवेलकी कैदका भार दिया गया, उसने उन्हे बडी ... पकडकर कैद किया। उन्हीके साथ कोर्ट और वालकट साहब भी कैद किये गये। अवशिष्ट व्यक्ति छुटकारा पा गये। जिन अङ्गरेज रमणियोंने अन्धकूपसे छुटकारा पाया था, वह मीरजाफरके महलमें भेज दी गई थी। *

मुताखिरीनमे यह सब बातें नही है। जब अन्धकूप हीकी बात नही है तो जिन्हे अङ्गरेज इतिहास-लेखकोंने अन्धकूपसे छूटा बताया है, वह नवाबकी समवेदनाके पात्र क्योंकर हो सक ते थे? किन्तु विजेता नवाबके हालवेलसाहबसे गुप्तधन पूछनेमें विचित्रता ज्ञान नही पडती। अङ्गरेज वणिकोंके लिये नवाबके बहुतसे रुपये खरच हुए थे। इस क्षतिपूरणकी प्रत्याशासे नवाबको अङ्गरेजोंका गुप्त धन ढूंढ निकालनेकी चेष्टा करनी

असम्भव नहीं है। * ऐसा विश्वास होना भी अस्वाभाविक नहीं है, कि चतुर हालवेल जान बूझकर भी रुपये बाहर नहीं निकालते। यह बात मुताखिरीनमे नहीं लिखी है, कि मीरजाफरने अङ्गरेज रमणियोंको जनानखानेमें भेज दिया था। बल्कि मुताखिरीनमें यही लिखा है, कि मीरजाफरकी सहायतासे कितनी ही अङ्गरेज रमणी और पुरुषोंने भागनेकी राह पाई थी।

२ री जुलाईको नवाबने कलकत्ता परित्याग करके मुरशिदाबादकी यात्रा की। जानेसे दो तीन दिन पहले उन्होंने पराजित अङ्गरेजोंको शहरमे रहनेका हुक्म दिया था। उमिचन्दने इन सब अङ्गरेजोंके रहने खानेकी यथायोग्य व्यवस्था कर दी थी। माणिकचन्द्रने कलकत्तेकी हाकिमीका भार पाया था। †

मणिकचन्द्रका आधिपत्य देखकर मीरजाफर, रहीमखां

---

* अरमीने लिखा है,—अङ्गरेजोंको वाणिज्य करनेका अधिकार देकर जो छूट दी गई थी अनेक नीचमना नीचपदवी अङ्गरेज वणिकोंने इस देशके और दूसरे देशके वणिकोंके हाथ वह छूट बेच दी थी। इस तरहका वाणिज्य करनेका अधिकार इस देशके या अन्य देशके वणिकोंको नहीं था, इसलिये इस तरह छूट बिकनेसे नवाबको बहुत रुपयोंकी क्षति हुई थी। नवाबके अङ्गरेजोंपर चिढ़नेका यह भी एक कारण है।

† यहां इतिहास लेखकोंमें मतभेद है। मुताखिरीनमें लिखा है, कि माणिकचन्द्र बर्दवानराजके दीवान थे। उन्होंने ना हजार पैदल और ६५ हजार सवारोंकी सरदारी पाई थी।

प्रभृति नवाबके पुराने कर्म्मचारी विद्वेषविषमें जर्जरीभूत हुए थे। पहले जब नवाबने मोहनलालको मन्त्रिपदपर और मीर मदनको सेनापतिपदपर अधिष्ठित किया था, तभी मीरजाफरके हृदयमें विद्वेष-बीज रोपित हुआ था। * अब माणिकचन्द्रके आधिपत्यमें वह अङ्कुरित हुआ। मीरजाफरका विद्वेष हो सकता है। कारण, समग्र बङ्गके मसनदकी ओर युवक सिराजपर आधिपत्य स्थापनकी उत्कट लालसासे मीरजाफर उद्भ्रान्त हो पड़े थे। सिराजुद्दौलह क्या उसे समझते नहीं थे? सिराजुद्दौलह जानते थे, कि एक दिन बङ्गके मसनदके लिये यही मीरजाफर वृद्ध मातामह अलीवर्दी खांके विरुद्ध उठ खड़े हुए थे। † सुचतुर सिराज किस साहससे इन्हीं मीरजाफरपर विश्वास स्थापन करते? मीरजाफरपर विश्वास न रहनेहीसे सिराजने अपना राजपथ साफ रखनेके लिये मोहनलाल और मीरमदनको उस पदपर अभिषिक्त किया था। यह नियोगका अपव्यवहार नहीं हुआ। पाठक! बादको आप देखेंगे, कि यही दोनो पुरुष प्रभुकी रक्षा करनेके लिये किस तरह आत्मविसर्ज्जन करनेपर उद्यत हुए थे और मीरजाफरने

अङ्गरेज इतिहास लेखकोंका कहना है, कि माणिकचन्द्र हुगलीके फौजदार और हजार सिपाहियोंके अफसर थे।

* मोहनलालने महाराजकी उपाधि पाई थी। उनपर पांच हजार सवारोंकी अफसरीका भार अर्पित हुआ था। Stewart's History of Bengal P. 309.

† मुताखिरीन

जिस तरह षड्यन्त्रका जाल फैलाकर सिराजका सर्व्वनाश किया था।

माणिकचन्द्रने कलकत्तेकी हाकिमी पाकर अङ्गरेजोंके साथ सद्व्यवहार किया था। एक दिन एक अङ्गरेज सिपाहीने मतवाले हो एक मुसलमानकी हत्या की थी। माणिकचन्द्रने क्रुद्ध होकर सब अङ्गरेजोंकी हत्याकी आज्ञा दी। अङ्गरेज डरकर फ्रान्स डच जर्म्मनकी कोठोमें भाग गये। इसके उपरान्त वहांसे उन लोगोंने आकर फलतेमें आश्रय लिया। उन्हें फलतेके पास नदीमें जहाजपर रहना पड़ा था।

नवाब मुरशिदाबाद जानेके समय हुगली होकर गये। हुगलीमें उन्होंने साढ़े चार लाख रुपये और फ्रान्सीसियोंने साढ़े तीन लाख रुपये नजर किये। मुरशिदाबादमें उपस्थित होकर नवाबने ११वीं जुलाईको मातामहीके अनुरोधसे कैदी हालवेल और उनके साथियोंको छोड़ दिया। इससे पहले हुगलीमें कैदी वाट्स और उनके साथीने मुक्ति लाभ किया था।

अङ्गरेजोंको कलकत्तेसे भगाकर सिराज बहुत कुछ निश्चिन्त हो गये थे। अवश्य ही अङ्गरेज इससे निश्चिन्त नहीं हुए थे। और निश्चिन्त नहीं थे सेनापति मीरजाफर, र्पीसखां प्राचीन कर्मचारी उमरखां, राय दुर्लभ और जगतसेठ। इनके हृदयमें विद्वेषकी आग धाय धाय जल रही थी। वह अति तत्परतासे और सावधानीसे सिराजके सर्वनाश करनेकी षड्यन्त्रसाधनामें प्रवृत्त थे। सिराजको सिंहासनच्युत करके पूरनियाके नवाब शौकतजङ्गको बङ्गालके

सिंहासनपर बैठानेके मतलबसे सांघातिक षडयन्त्र किया गया था। निर्बोध शौकतजङ्गको बङ्गालके मसनदकी मरीचिकाने मुग्ध करके षडयन्त्रकारियोंने शौकतजङ्गको चुपके चुपके पत्र लिखा था।

शौकतजङ्ग षडयन्त्रके मोहजालमें फंस सिराजको सिंहासनच्युत करनेके लिये दृढ़प्रतिज्ञ हुए थे। उनके सुविज्ञ सुचतुर शिक्षकने उन्हें इस काममें पड़नेसे मना किया था। * उन्होंने साफ साफ कहा था,—"षडयन्त्रकारी आज तुम्हें उत्साहित कर रहे हैं किन्तु कौन कह सकता है कि कल यही तुम्हें भगा न देंगे?' शौकतजङ्ग यह सदुपदेश सुननेके पात्र नहीं थे। वह दुष्टोंके कुपरामर्शसे बुद्धिमान् सचिवकी बात अग्राह्यकर सिराजुद्दौलहके साथ युद्ध करनेके लिये दृढ़सङ्कल्प हुए थे। उन्होंने नाना उपायोंसे दिल्लीके सम्राटसे आदेशपत्र मंगा अपनेको बङ्गाल, बिहार और उड़ीसेका नवाब मशहूर किया।

सिराजने राय दुर्लभके भाई रामबिहारीको पुरनिया—वीरनगरके फौजदारके पदपर नियुक्त किया। सिराजने शौकतजङ्गको एक पत्र लिखा कि वह रामबिहारीके हाथ वीरनगरका भार अर्पण करें। रामबिहारीने राजमहलके पास पहुंचकर शौकतजङ्गके पास सिराजुद्दौलहका पत्र भेज दिया। शौकतजङ्गने सिराजका पत्र पाकर सलाहके लिये मन्त्रियोंको बुलाया मन्त्रियोंमें सय्यद गुलाम हुसेनने सलाह

* यही मुताखिरीन रचयिता सय्यद गुलाम हुसेन हैं।

थी—"इस समय सिराजुद्दौलहको सौजन्यके साथ एक चिट्ठी लिखी जाय। बरसात शिरपर खड़ी है। ऐसे समय कोई झगड़ा उठानेपर लड़ना मुशकिल होगा। बरसात बीतनेपर लड़नेमें आसानी होगी। इस समय अङ्गरेजोंसे सहायता पानेकी बहुत आशा है।" *

शौकतजङ्गने सय्यद गुलामहुसैनकी सलाह न मान सिराजुद्दौलहको इस मर्म्मकी एक चिट्ठी लिखी—"मैं बङ्गाल, बिहार और उड़ीसेका नवाब हूं। तुम्हारी कोई क्षति न करूंगा। सब राज्य धन मुझे सौंप पूर्व्व बङ्गमें जहां इच्छा हो चले जाओ।" रामबिहारीके पास राजमहल यह पत्र भेजा गया। अवश्य ही रामबिहारीके पाससे यह चिट्ठी सिराजको मिली। पत्र पाते ही सिराजुद्दौलहका कोपानल जल उठा। उन्होंने उसी समय अपने सेनापतियोंको लड़ाईके लिये तय्यार होनेकी आज्ञा दी। बिहारके सरकारी शासनकर्त्ता राजा रामनारायणको हुक्म मिला कि वह फौज लेकर पुरनियापर आक्रमण करें। इसके उपरान्त सिराज स्वयं फौज लेकर राजमहलकी ओर चले। उनके सेनापति राजा मोहनलाल और एक फौजके साथ दूसरी ओर चले।

सिराजकी चढ़ाईकी खबर पाकर शौकतजङ्गने अपने

सिंहासनपर बैठानेके सङ्कल्पसे साङ्घातिक षडयन्त्र किया गया था। निर्ब्बोध शौकतजङ्गको बङ्गालके मसनदकी मरीचिकामें मुग्ध करके षडयन्त्रकारियोंने शौकतजङ्गको चुपके चुपके पत्र लिखा था।

शौकतजङ्ग षडयन्त्रके मोहजालमें फंस सिराजको सिंहासनच्युत करनेके लिये दृढ़प्रतिज्ञ हुए थे। उनके सुविज्ञ सुचतुर शिक्षकने उन्हें इस काममें पड़नेसे मना किया था। * उन्होंने साफ साफ कहा था,—"षडयन्त्रकारी आज तुम्हें उत्साहित कर रहे हैं, किन्तु कौन कह सकता है, कि कल यही तुम्हें भगा न देंगे?" शौकतजङ्ग यह सदुपदेश सुननेके पात्र नहीं थे। वह दुष्टोंके कुपरामर्शसे बुद्धिमान् सचिवकी बात अग्राह्यकर सिराजुद्दौलहके साथ युद्ध करनेके लिये दृढ़सङ्कल्प हुए थे। उन्होंने नाना उपायोंसे दिल्लीके सम्राटसे आदेशपत्र मंगा अपनेको बङ्गाल, बिहार और उड़ीसेका नवाब मशहूर किया।

सिराजने राय दुर्लभके भाई रामबिहारीको पुरनिया—वीरनगरके फौजदारके पदपर नियुक्त किया। सिराजने शौकतजङ्गको एक पत्र लिखा कि वह रामबिहारीके हाथ वीरनगरका भार अर्पण करें। रामबिहारीने राजमहलके पास पहुंचकर शौकतजङ्गके पास सिराजुद्दौलहका पत्र भेज दिया। शौकतजङ्गने सिराजका पत्र पाकर सलाहके लिये मन्त्रियोंको बुलाया, मन्त्रियोंमें सय्यद गुलामहुसेनने सलाह

* यही मुताखिरीन रचयिता सय्यद गुलामहुसेन हैं।

दी—"इस समय सिराजुद्दौलाको सौजन्यके साथ एक चिट्ठी लिखी जाय। बरसात शिरपर खड़ी है। ऐसे समय कोई झगड़ा उठानेपर लड़ना मुश्किल होगा। बरसात बीतनेपर लड़नेमें आसानी होगी। उस समय अङ्गरेजोंसे सहायता पानेकी बहुत आशा है।' *

शौकतजङ्गने सय्यद गुलामहुसेनकी सलाह न मान सिराजुद्दौलाको इस मर्मकी एक चिट्ठी लिखी—"मैं बङ्गाल, बिहार और उड़ीसेका नवाब हूं। तुम्हारी कोई क्षति न करूंगा। तुम राज्य धन मुझे सौंप पूर्व बङ्गमें जहां इच्छा हो चले जाओ।' रामबिहारीके पास राजमहल यह पत्र भेजा गया। रास्ते ही रामबिहारीके पाससे यह चिट्ठी सिराजको मिली। पत्र पाते ही सिराजुद्दौलाका कोपानल जल उठा। उन्होंने उसी समय अपने सेनापतियोंको लड़ाईके लिये तयार होनेकी आज्ञा दी। बिहारके सरकारी शासनकर्त्ता राजा रामनारायणको हुक्म मिला कि वह फौज लेकर पुरनियापर आक्रमण करें। इसके उपरान्त सिराज स्वयं फौज लेकर राजमहलकी ओर चले। उनके सेनापति राजा मोहनलाल और एक फौजके साथ दूसरी ओर चले।

सिराजकी चढ़ाईकी खबर पाकर शौकतजङ्गने अपने

सिपहसालारोंको लड़नेकी आज्ञा दी। नवाबगञ्जके पास एक जगह शौकतजङ्गका लश्कर पड़ा। जिस जगह लश्कर पड़ा, उसके सामने जलाभूमि और चारों ओर झील थी। जलमें सिर्फ एक राह थी। शौकतजङ्गके सेनापतियोंने पर स्पर विच्छिन्न भावसे खीमे डाले थे। इसके बाद स्वयं शौकत-जङ्ग फौजके साथ आये। इसी समय सिराजकी फौजने आगे बढ़कर शौकतके खीमेकी ओर गोले बरसाये।

दोनो ओरसे गोले चले। किन्तु शौकतजङ्गकी फौजमें शृङ्खला नहीं थी। इस विशृङ्खल अवस्थामें शौकतजङ्गके श्यामसुन्दर नामे एक हिन्दू सैन्याध्यक्ष असम साहस और विपुल वीर्यके साथ लड़े थे।

शौकतजङ्ग भङ्गके रङ्गमें डूबे, तवायफोंकी मधुर तानसे विमोहित थे। इधर सिराजसैन्यके प्रबल प्रतापके सामने उनकी फौजके पैर उखड़ गये। विषम अवस्था देख सेना पति भङ्गमत्त श्लथशक्ति शौकतजङ्गको एक हाथीपर चढ़ा युद्धक्षेत्रमें लाये। युद्धक्षेत्रमें आते ही सिराजसैन्यके एक गोलेकी चोटसे हाथीसे गिर उन्होंने प्राण विसर्ज्जन किया। शौकतजङ्गकी यह अवस्था देख उनकी फौज भागी।

दो दिनके बाद राजा मोहनलालने पुरनियामें प्रवेशकर धन-रत्नराशि हस्तगत किया और अपने पुत्रको पुरनियाका शासनकर्त्ता बना अन्तःपुरकी स्त्रियोंको मुरशिदाबाद भेज दिया। *

---

* शौकतजङ्गका समस्त थोड़ा हाल मुताखिरीनमें वर्णित है।

अङ्गरेजोंको विताड़ित, शौकतजङ्गको मारकर, इन दोनों शत्रुओंसे निस्तार पा सिराजने अपनेको बहुत कुछ निश्चिन्त ख्याल किया था। जयोल्लासमें सुरशिदाबाद पूर्ण प्रवाहमें उद्वेलित हो उठा। अभागा सिराज यह समझ नहीं सके, कि हृदयतलमें कैसे पूर्णप्रदीप्त नित्य पूर्णमान् महापवक भीतर वह अवरुद्ध है। उस समय वह समझ नहीं सके, कि नवाबी समनदकी महालक्ष्मी भविष्यत् विभीषिकाकी विशाल विराट यवनिकाको धीरे धीरे आकुञ्चित करती हुई मस्तक पदस्पर्श किस ओर अग्रसर हो रही है।

मन्द्राजमें मन्त्रणा।

सिपहसालारोंको लड़नेकी आज्ञा दी। नवाबगञ्जके पास एक जगह शौकतजङ्गका लशकर पड़ा। जिस जगह लशकर पड़ा, उसके सामने जलाभूमि और चारो ओर झील थी। जलमें सिर्फ एक राह थी। शौकतजङ्गके सेनापतियोंने परस्पर विच्छिन्न भावसे खीमे डाले थे। इसके बाद स्वयं शौकतजङ्ग फौजके साथ आये। इसी समय सिराजकी फौजने आगे बढ़कर शौकतके खीमेकी ओर गोले बरसाये।

दोनो ओरसे गोले चले। किन्तु शौकतजङ्गकी फौजमें शृङ्खला नहो थी। इस विशृङ्खल अवस्थामें शौकतजङ्गके श्यामसुन्दर नामे एक हिन्दू सैन्याध्यक्ष असम साहस और विपुल वीर्य्यके साथ लड़े थे।

शौकतजङ्ग भङ्गके रङ्गमें डूबे, तवायफोंकी मधुर तानसे विमोहित थे। इधर सिराजसैन्यके प्रबल प्रतापके सामने उनकी फौजके पैर उखड़ गये। विषम अवस्था देख सेनापति भङ्गमत्त अथशक्ति शौकतजङ्गको एक हाथीपर चढ़ा युद्धक्षेत्रमें लाये। युद्धक्षेत्रमें आते ही सिराजसैन्यके एक गोलेकी चोटसे हाथीसे गिर उन्होंने प्राण विसर्ज्जन किया। शौकतजङ्गकी यह अवस्था देख उनकी फौज भागी।

दो दिनके बाद राजा मोहनलालने पुरनियामें प्रवेशकर धन-रत्नराशि हस्तगत किया और अपने पुत्रको पुरनियाका शासनकर्त्ता बना अन्तःपुरकी स्त्रियोंको मुरशिदाबाद भेज दिया। *

---

* शौकतजङ्गका लम्बा चौड़ा हाल मुताखिरीनमें वर्णित है।

अङ्गरेजोंको विताड़ित, शौकतजङ्गको मारकर, इन दोनों शत्रुओंसे निस्तार पा सिराजने अपनेको बहुत कुछ निश्चिन्त खयाल किया था। जयोल्लाससे मुरशिदाबाद पूर्ण प्रवाहसे उद्वेलित हो उठा। अभागे सिराज यह समझ नहीं सके, कि षड़यन्त्रके कैसे पूर्णप्रदीप्त नित्य पूर्णमान् महाचक्रके भीतर वह अध्युषित है। उस समय वह समझ नहीं सके, कि नवाबी ममनदकी महालक्ष्मी भविष्यद् विभीषिकाकी विशाल विराट यवनिकाको धीरे धीरे आकुञ्चित करती हुई सतर्क पदक्षेपसे किस ओर अग्रसर हो रही है।

मन्द्राजसे मन्त्रणा।

सिराज निश्चिन्त थे, किन्तु क्या अङ्गरेज भी निश्चिन्त थे? कलकत्ता दुर्गके अधःपतनसे भारतके ब्रटिश वणिकोंका भविष्यद् दुर्भाग्य सूचित हुआ था। वणिकके लिये वाणिज्य-विलुप्तिकी आशङ्काकी अपेक्षा दुर्भावना वा दुर्भाग्यसूचना और क्या हो सकती है? कलकत्तेमें जब अङ्गरेज वणिक इतने हृतगर्व्व और हृतविक्रम हो चुके थे, तो वाणिज्य सम्टद्धिकी सम्भावना कहां थी? इसीलिये कलकत्ता-दुर्गके पतन समाचारसे मन्द्राजकी अङ्गरेज कम्पनीकी प्रभु-शक्ति तूफानी समुद्रकी तरह चञ्चल हो उठी थी। दक्षिणात्यमें "आरकट अवरोध" के बाद-से नाना समरोंमें अङ्गरेज कम्पनीने विजय लाभ करके वाणि-

अङ्गरेजोंने सम्बन्धमें बड़ी आशा कर ली थी। इसकी अपेक्षा और भी एक ऊंची आशाको वह मन ही मन पाल रही थी। सचमुच उसी समय भारतकी शासनशक्तिका आधार अङ्गरेज वणिकोंके मनमें उद्भूत हुआ था। ऐसी अवस्थामें कलकत्ता पतन समाचारसे मन्द्राजके हाकिमोंके सम्मोहित होनेमें विचित्रता क्या है? किन्तु इस दारुण सम्वादसे कलकत्तेके पुनरुद्धारके लिये एक उत्कट उत्तेजना उत्थित हुई थी।

१५ वी जुलाईके पहले मन्द्राजमें कासिमबाजार पतनका समाचार नहीं पहुंचा था। जिस समय सिराजने कलकत्ते-पर आक्रमण किया, उस समय ड्रेक साहबने और उनके पीछे अन्यान्य अङ्गरेजोंने भागकर फलतेमें आश्रय लिया था। वह फलतेके पास ही जहाजमें रहते थे। फलता अस्वास्थ्यकर होनेकी वजह कोई हिम्मत करके जहाजसे नहीं उतरा। वहांके कितने ही मकान गोलोंकी मारसे टूटकर जीर्ण हो गये थे। इसलिये जहाजपर रहनेके सिवा और कोई उपाय नहीं था। फलतेमें डचोंके जहाजोंका प्रधान अड्डा था। नवाबके भयसे डच और अन्यान्य अधिवासी अङ्गरेजोंकी किसी तरहकी सहायता करनेके लिये अग्रसर नहीं हुए थे। नवाबके कलकत्ता परित्याग करनेपर इस देशके लोगोंने अङ्गरेजोंको खाने रहनेकी सहायता दी थी।

भागी हुई अङ्गरेजमण्डलीने इस दारुण दुर्दशाके लिये ड्रेक साहबको दोषी ठहराया था। मनोभङ्गसे और मतभेदसे सचमुच ही उस समय अङ्गरेजोंमें विषम विशृङ्खला उपस्थित

हुई थी। फिर भी, अङ्गरेजोंके सौभाग्यकी बात यह थी, कि ऐसी विशृङ्खला रहनेपर भी सबने गवरनर और कौन्सिलकी बड़ाई मानी थी। जुलाई माससे पहले गवरनर ड्रेक साहबने एक फौजी कर्म्मचारीके साथ मिविलियन मानिङ्हम साहबको मन्द्राज भेज दिया था। मन्द्राजके हाकिम उनके मुंहसे अङ्गरेजोंका दुःसमाचार पाकर व्यथित हुए थे। विशेषतः इसी समय इङ्गलण्डसे समाचार मिला था कि फ्रान्सके साथ लड़ाई हो रही है। तब सभी सलाहें करने लगे, कि अब क्या करना चाहिये। तय पाया, कि बङ्गालसे अङ्गरेजोंको दुर्गादि सुदृढ़ करना चाहिये। इस तरह कर्त्तव्य निर्द्धारण करके मन्द्राजके हाकिमोंने २ सौ ३० सिपाहियोंके साथ मेजर किल पेटरिकको बङ्गाल भेज दिया।

५ वीं अगस्तको मन्द्राजके हाकिम कलकत्ता पतनका समाचार पा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। इस समय पिगट साहब मन्द्राजके गवरनर थे। उन्होंने सबसे सलाह करके निश्चय किया, कि जिस तरह बने वैरनिर्य्यातन करके कलकत्ता का उद्धार साधन करना चाहिये। स्वयं पिगट बदला लेनेके लिये सैन्याध्यक्षपद ग्रहण करनेपर प्रस्तुत हुए, किन्तु दुःखका विषय यह था, कि वह रणकौशल नहीं जानते थे, इसके अतिरिक्त वह जितने सिपाही लेकर लड़ने जाया चाहते थे, उनके साथी हाकिम उतने सिपाहियोंको जमा कर देना असम्भव समझते थे। इसलिये पिगटकी सिपहसालारी पानेकी चेष्टा विफल हुई।

इस विपत्तिसे बचनेका उपाय क्या है? कलकत्तेके

पुनरुद्धारके सिवा भारतमे अङ्गरेजोंका अस्तित्व नामम्भव है। इसलिये यह बडी चिन्ताका विषय हुआ, कि वह सागर लङ्घनवत् दुष्करादपि दुष्कर कार्य्य-भार किसे समर्पित किया जाव। जो इच्छा करते ही रणक्षेत्रमें मुहूर्त्तभरमे ५०। ६० हजार सिपाही ला सकते थे, उनके मुकावले एक हजार सिपाही लडाना अमानुषिक असम साहसका काम था। वह साहस किसमे है? करनल आलडरकन साहसी पुरुष थे सही किन्तु इस वातकी उन्हें कुछ भी अभिज्ञता नही थी, कि कहा किस भावसे युद्ध करना चाहिये। उनपर विश्वास न करनेका और भी एक कारण था। वह इङ्गलण्डेश्वरकी भेजी एक फौजके अध्यक्षस्वरूप भारतमे वैठ हुए थ, इटिश वणिककम्पनीकी शासनशक्ति माननेके लिये वह किसी तरह वाध्य नही थे, इसलिये उनपर लडाईका भार रखना किसी तरह युक्ति युक्त समझा नही गया। कलकत्ता-पतनका वदला लेने लायक एक करनल लारेन्स थे। वह यदि वीमार न होते, तो वही चुने जाते।

उच्चपदस्थ कर्म्मचारियोमे वाकी रह गये, गरकट-विजयी वीर क्लाइव। क्लाइवकी साहसप्रतिष्ठा उस समय पूर्णमात्रासे समुत्थित थी। जव दूसरे उच्चपदस्थ कर्म्मचारियोंके लडनेके लिये कलकत्ते जानेमे एक न एक विघ्न आ उपस्थित होने लगा, तव एकवारगी ही सवकी दृष्टि उस दुःसाहसिक दुरन्त क्लाइवकी ओर गई। सवसे पहले अरमी साहवने * क्लाइवके सेनापति

---

* उन्होने 'History of Indostan नामक ग्रन्थ लिखा है।

बनानेके लिये प्रस्ताव किया। करनल लारेन्सने यह प्रस्ताव समर्थित किया। तब सबने मिलकर क्लाइवको सेन्याध्यक्षपदपर अभिषिक्त किया। सिर्फ एक हजारसे ऊपर ऊपर सिपाहियोंके साथ विपुल बलसम्पन्न दुर्लर्ष नवाब सिराजुद्दौलहसे युद्ध करना बहुत आसान बात नहीं थी। क्लाइवने उसे समझकर भी अपना गौरव बिगड़नेके भयसे केवल अमीस साहबपर निर्भर करके सहयोगियोंकी अम्लायमान अभिषेक वाणी मस्तकपर ले ली थी।

सिद्धान्त हुआ कि कलकत्तेके भूतपूर्व्व गवरनर और कौन्सिल असामरिक और व्यवसायिक शक्ति सञ्चालन करेंगे, किन्तु कुल सामरिक मामलोंमें क्लाइव सम्पूर्ण स्वाधीनभावसे चलेंगे। मिष्टर मानिङ्गहमने इसपर आपत्ति की। कलकत्तेके आक्रमणकालमें इन्हीं मानिङ्गहम साहबने सबसे पहले भागनेकी राह दिखाई थी और दूसरे भागे हुए लोगोंके प्रतिनिधिस्वरूप मन्द्राज भेजे गये थे। आपत्ति बडी मजबूतीके साथ उठाई गई थी, किन्तु किसी तरह भी टिक नहीं सकी।

आलडरकनको सैन्याध्यक्षपद न मिलनेसे क्षोभरोषसे उनके मनमें बडी जलन पैदा हुई। प्रत्यक्षप्रमाणसे वह जलन फट फूटकर बाहर निकली थी।

क्लाइवको स्थलभागमें सैन्यसञ्चालनका अधिकार मिला, एडमिरल वाटसन जङ्गी जहाजके अध्यक्ष पदपर नियुक्त हुए। बङ्गालके वैरनिर्य्यातनके लिये सिर्फ नौ सौ अङ्गरेज और पन्द्रह सौ देशी सिपाही संगृहीत किये गये। क्लाइव और वाटसन अमीस साहबके साथ अथाह सागरमें फांद पडे। यह

मुट्ठीभर फौज उन्होंने पांच जङ्गी जहाजोंपर चढ़ाई। * पांच जङ्गी जहाजोंपर २६४ तोप थी। इसके अतिरिक्त रसदादिके लिये उन्होंने और पांच जहाज साथ लिये थे। एडमिरल वाटसनने एक जहाजपर अपनी पताका उड़ाई। क्लाइव एक दूसरेपर सवार हुए। दाक्षिणात्यके नवाब सलाबतजङ्ग और अरकटके नवाब महम्मदअलीने सिराजुद्दौलहको भयमैत्री दिखाकर, इस भावकी चिट्ठी लिखी थी कि उन्होंने अङ्गरेज वणिकोंकी जो क्षति की है उसे शीघ्र ही पूरण कर दें। क्लाइवने यह चिट्ठियां साथ ले ली थीं। †

सब तय्यार था। लङ्गर उठानेकी देर थी। ऐसे समय घोर विभ्राट उपस्थित हुआ। मन्द्राजके वृटिश वणिकोंने अपने जहाजोंमें आलडरकानके अधीनस्थ इङ्गलैण्ड जानेके लिये ही सिपाही, तोप और रसद चढ़ा दी थी। अलडरकानने पहले अपमानका बदला लेनेके लिये अवसर देख वणिकपोतसे अपने कुल सिपाही आदि उतार लिये। सिपाहियोंकी संख्या प्रायः दो सौ होगी।

साहसी निर्भीक क्लाइवने इससे तनिक भी विचलित न हो अदम्य वीरदम्भसे हिम्मत बांध सन् १७५६ ई०की १६वीं अक्तोबरको मन्द्राज बन्दर परित्याग किया।

---

* पांच जङ्गी जहाजोंके नाम—केण्ट, कम्बरलैण्ड, टाइगर, सलसबरी और ब्रिजवाटर।

† इन चिट्ठियोंमें अन्धकूपका उल्लेखमात्र नहीं था।

कलकत्ते में क्लाइव।

राहमें तूफानसे कितने ही विघ्न संघटित हुए थे, किन्तु जिनपर विधि सुप्रसन्न है उनपर विपद कैसी? सभी विपद झेलकर क्लाइव और वाटसन १५वीं दिसम्बरको फलतेमें आ उपस्थित हुए। दो छोड़कर बाकी सब जहाज २०वीं सितम्बरको वहां आकर उनमें मिल गये। कम्बरलण्ड जहाज सबसे बड़ा था। उसीपर एडमिरल पिगट साहब थे। उनके साथ कोई ढाई सौ अङ्गरेज सिपाही थे। यह जहाज नहीं आया और नहीं आया, मलबरी नामक एक जहाज। इसमें बहुतसी तोपें थीं।

क्लाइवने किसीका इन्तजार नहीं किया। इससे पहले क्लाइवने बङ्गोपसागरसे पहुंचते ही नवाब सिराजुद्दौलहको एक चिट्ठी लिखी थी। उस पत्रका मर्म्म पहले ही प्रकाशित हो चुका है। किन्तु इस पत्रका उन्हें जवाब नहीं मिला। जो हो, वह लड़ाइके लिये ही तय्यार थे। २री अगस्तको मेजर किलपेट्रिकने २ सौ ३० सिपाहियोंके साथ फलतेमें पहुंचकर छावनी डाल दी थी। यहां प्रायः आधे सिपाही बीमार होकर मर गये थे। जब क्लाइव आ उपस्थित हुए, तो पेट्रिकके अधीन तीससे अधिक लड़ने लायक सिपाही नहीं थे, क्लाइवने इसका भी खयाल न किया और वह सीधे कलकत्ते जानेके लिये तय्यार हुए।

सिराजुद्दौलहके नाम क्लाइव जो सब चिट्ठियां लाये थे,

उन्हें उन्होंने नवावके पास पहुंचानेके लिये कलकत्तेके उस समयके गवरनर माणिकचन्द्रके पास भेज दिया। माणिचन्द्रने जवावमें लिख भेजा—"पत्र नवावको भेज नहीं सकता।"

१५वीं दिसम्बरको वाटसन साहबने नवावको चिट्ठी लिखी थी। अन्धकूपविचारमें इस पत्रका मर्म्म प्रकाशित किया जा चुका है। कलकत्ता और हुगली पुनरधिकृत होनेसे पहले वाटसनको इस पत्रका कोई उत्तर नहीं मिला।

युद्ध अनिवार्य्य समझकर वाटसन और क्लाइवने कलकत्तेकी यात्रा की। २७वीं दिसम्बरको वह मायापुर पहुंचे। यहीं सिपाहियोंने जहाजसे उतरकर बजबज किलेकी ओर यात्रा की। *

क्लाइवने स्थल-पथसे सैन्य सञ्चालनकर दारुण कष्टसे बज बजके पासकी एक जगहपर अधिकार कर लिया। वहीं पथश्रमक्लान्त सिपाही निद्रित होनेपर शत्रुगण द्वारा आक्रान्त हुए। आक्रमणसे जागरित होकर सब भीत, चकित और स्तम्भित हुए। केवल क्लाइवके रणोत्साहवाक्यसे उत्तेजित होकर वह शत्रुओंके साथ अदम्य विक्रमके साथ जूझे थे। माणिकचन्द्रके साथ तीन हजार सवार और पैदल फ़ौज थी। एकाएक एक गोला उनकी बगलसे निकल गया। इससे वह डरे। हाथी लौटा दिया और भाग गये।

क्लाइव जिस समय खुशकीपर माणिकचन्द्रसे लड़ रहे थे

---

* बजबज कलकत्तेसे दक्षिण-पूर्ब्ब है। छः कोसकी राह होगी। मायापुर बजबजसे पांच कोस दक्षिण है।

साहब उस समय नदीवक्षमें बजबज किलेपर गोले बरसा रहे थे। किलेसे भी उसका जवाब दिया जा रहा था। किन्तु किलेका गोलावर्षण बहुक्षण स्थायी नहीं था। दुर्गसे वर्षण रुका, किन्तु दुर्गवासियोंने वश्यता स्वीकार नहीं की। वैराट जहाजमें सदुपाय ठीक करनेके लिये एक सभा बैठी। सभामें सिद्धान्त हुआ, कि क्लाइव ही ससैन्य स्थल-पथसे किलेपर आक्रमण करें। किला मजबूत था, मट्टीका बना हुआ,—पानीसे भरी हुई खन्दकमें घिरा था। यह स्थिर हुआ, कि दूसरे दिन आक्रमण करना चाहिये। स्थल-भागमें खीमोंके भीतर और नदी वक्षमें पोत कक्षमें सिपाहियोंने कई घण्टोंके लिये विश्राम कर लेनेका उपक्रम किया।

इसी समय एकाएक नदी किनारे एक महा जयोल्लासका कोलाहल उत्थित हुआ। पोतारोही एडमिरल वाटसनको खबर मिली, कि किलेपर कबजा हो गया। जिस कौशलसे किलेपर कबजा हुआ उसे सुनकर वह चौंक पड़े।

छावनीमें प्रगाढ़ शान्ति विराजमान थी। ऐसे समय स्ट्रान नामक एक मल्लाह शराब पीकर नशेमें झूमता झामता किसी अगाधमें किलेमें घुस गया। उसी समय किलेके कितने ही मुसलमानोंने उसे देख उसपर आक्रमण किया। वह भी तलवार और पिस्तौलकी सहायतासे सुदृढ़ विक्रमसे बहुत देरतक लड़ा। उसकी तलवारका कबजा टूट गया। किन्तु इससे वह निरुत्साह न हो गम्भीर गर्जनसे, अतुल साहससे लड़ने लगा। जान हथेलीपर रख लड़ने लगा। उसी समय क्रमसे और भी कई मल्लाह उधर जा निकले। क्रमसे यह

सब मामला ब्रटिश कम्पनीसे विज्ञापित किया गया इसके बाद ब्रटिश सिपाही उठकर किलेमें घसे। किलेपर कब्जा हो गया। इससे पहले जब किलेसे तोपका जवाब मिलना बन्द हुआ था तो बहुत लोग किलेसे भाग गये थे। थोड़े से लोग वहां थे। इसीलिये जान पड़ता है, कि इतनी आसानीसे किला हाथ लग गया।

३० वी दिसम्बरको बजबजके किलेपर कबजा हुआ। उसी दिन तीसरे पहर जल-पथसे ब्रटिश फौज और स्थल पथसे देशी फौज कलकत्तेकी ओर बढ़ी।

सन् १७५७ ई० की १ ली जनवरीको टानार ईंटका निर्मित किला अङ्गरेजोंके हाथ लगा। इसके अतिरिक्त और एक मृत्तिका निर्मित दुर्ग भी ब्रटिश वाहिनीके करतलगत हुआ।

२ री जनवरीको ब्रटिश जङ्गी जहाज कलकत्तेकी भागीरथीके वक्षमें पुराने किलेके सामने पहुंचे। किलेसे अविरल धारसे ब्रटिश जहाजकी ओर गोले छूटने लगे। ब्रटिश वाहिनीने भी विचित्र विक्रमके साथ किलेपर गोले बरसाये। उधर क्लाइवने स्थल-पथसे आकर शहरपर आक्रमण किया। दुर्गाधिकारी अत्यन्त विपद समझ लड़ाईसे मुंह मोड़ किलेसे निकल भागे। इसी समय कलकत्तेके कितने ही प्राचीन नगरवासियोंने नदी किनारे जा हाथके इशारेसे जहाजकी ब्रटिश सेनाको विजयवार्त्ता विज्ञापित की। एक वृक्षपर एक ब्रटिश पाताका उड़ाई गई। एडमिरल वाटसनने उसी समय किलेपर कबजा करनेके लिये कप्तान किङ्गको भेज दिया। दुर्ग सुरक्षित हुआ। कप्तान क्लाक गवरनर बनाये गये। कई महीने

पहले जिस दुर्गसे ब्रटिश जाति जघन्य वन्य वराहवत् निकाली गई थी विधाताकी कृपासे वही दुर्ग पुनराधिकृत हुआ।

दुर्ग पुनराधिकृत हुआ सही किन्तु दुर्गके कर्त्तत्वकल्पसे इन्हा दरबेटा ख ा हुआ। कप्तान कुक गड़सिरल वाटसन द्वारा गवरनर बनाये गये थे। किन्तु क्लाइवने यह पद मांगा। क्लाइवको वाटसन लिखित नियोगपत्र दिखाया गया। क्लाइव उसे खातिरमें न लाये। गड़सिरल वाटसनके पास खबर भेजी गई। वाटसनने कप्तान स्पेकीकी मारफत कहला भेजा कि क्लाइवकी हाकिमी कैसी? उसके जवाबमें क्लाइवने कहला भेजा—"मैं इङ्गलण्डेश्वरका करनल और कुल फौजका मालिक हूं इसलिये हाकिमी मेरी ही है।" स्पेकी वाटसनके पास लौट गये। वाटसनने फिर कहला भेजा,—"तुम यदि किलेसे निकल न जाओगे, तो तुम्हें गोली मार दूंगा। निर्भीक क्लाइव इससे विचलित नहीं हुए। उन्होंने हाकिमीका खयाल नहीं छोड़ा। वाटसनने फिर क्लाइवके परम मित्र कप्तान कायसको भेज दिया। दोनोंमें धीर और शान्तभावसे बातचीत होने लगी। क्लाइवकी जिद बहुत कुछ घट गई। उन्होंने कहला भेजा कि यदि वाटसन साहब स्वयं आकर दुर्गाधिकार करें, तो मुझे कोई आपत्ति न होगी। वाटसन यह समाचार पाकर स्वयं किलेमें आये। तब वाटसनके हाथमें किलेकी चाभी दी गई। विधाता सुप्रसन्न थे। सब झगड़े मिट गये। वाटसन साहबने भूतपूर्व गवरनर ड्रेक और उनके कौंसिलपर दुर्गभार अर्पण किया। इन लोगोंने क्लाइवकी सिरके बाध्य होकर नवाबके विपक्षमें युद्धकी घोषणा की।

पहले नवाबने जब कलकत्ते के दुर्गपर अधिकार किया था तो बहुतसा सौदागरीका माल दुर्गमे मिला था। यह सब नवाबके लायक समझ सिपाहियोंने उसे नहीं छूआ था। अभीतक वह ज्योंका त्यों था। सौभाग्य सूचना और किसे कहते हैं? बजबज-दुर्ग अनायास अधिकृत हुआ, कलकत्ता-दुर्गके पुनरुद्धारमें उतना श्रम स्वीकार करना नहीं पड़ा। इसके बाद हुगली भी थोड़े आयासमें ब्रटिश बणिकोंके हाथ लगा। पलाशी क्षेत्रमें केवल चातुर्य कौशलसे विजय-पताका उड़ाई गई थी। ब्रटिश बणिकोंका वह सौभाग्यस्तर पाठकोंको क्रम क्रमसे दिखाया जावेगा।

सिराजकी युद्ध-यात्रा।

बजबज-दुर्ग अङ्गरेजोंके हाथ पड़ने ही इसकी खबर माणिकचन्द्रने मुरशिदाबादके नवाब सिराजद्दौलहको भेजी। इससे पहले ही नवाबने अङ्गरेजोंके आनेका समाचार पाकर विपुल बल संग्रह कर रखा था। अब माणिकचन्द्रसे बजबज दुर्गके पतनका समाचार पा, वह युद्धयात्राका उद्योग करने लगे।

कलकत्तेमें खबर आई, कि नवाब बहुत बड़ी फौज लेकर लड़नेके लिये आ रहे हैं? तभी कलकत्ताविजयी ब्रटिश बणिकोंने पहले हीसे हुगलीपर आक्रमण करनेका सङ्कल्प किया। हुगली आक्रमणके लिये १५० मल्लाह २०० जगङ्गरे

सिपाही और २५ सौ सिपाही भेजे गये। इटिशके सौभाग्यसे हुगली अल्पायासमें अधिकृत हुआ।

इटिश वणिकोंकी यह विजयवार्त्ता इङ्गलण्डके हाकिमोंको विदित करनेके लिये एडमिरल वाटसनने कप्तान किङ्गको इङ्गलण्ड भेज दिया।

सिराजुद्दौलहके क्रोधकी सीमा नहीं रही। उन्होंने ससैन्य कलकत्तेकी ओर यात्रा की। इससे पहले वाटसन साहबने उन्हें जो चिट्ठी लिखी थी, इस समय नवाबने उसके उत्तरस्वरूप सन् १७५७ ई०की २३वीं जनवरीको इस मर्मकी एक चिट्ठी लिखी,—

"ड्रेक साहबने मेरी आज्ञाकी अवज्ञाकर मेरे शासनयोग्य प्रजाको आश्रय दिया था। इसीलिये मैंने कलकत्तेपर आक्रमण करके इटिश कम्पनीको भगा दिया। तुम लोग यदि शान्त सौदागरोंकी तरह रहो तो तुम्हें चिन्ता न रहेगी, किन्तु यदि तुम लोग मुझसे लड़कर अपना वाणिज्य स्थापन करना चाहते हो, तो वैसा ही कर सकते हो।"

इसके उत्तरमें वाटसन साहबने इस भावका पत्र लिखा था—"आपने ड्रेकके व्यवहारके सम्बन्धमें जो बातें सुनी थीं, वह सही नहीं है। अपने कानों सुन या आंखों देखकर कोई काम न करना राजाका कर्त्तव्य नहीं है। आप अपने अपरामर्शदाताओंको दण्ड देकर हमें सन्तुष्ट कीजिये। जो लोग आपके द्वारा अत्याचारित और वञ्चित हुए हैं, उनके असन्तोष साधनमें व्रतसंकल्प होइये। ड्रेकका विचार कम्पनी करेगी।'

वाटसन साहबके पत्रसे ब्रिटिश पक्षका दोष स्वीकृत होता है। नवाबने अकारण ही कलकत्तेपर आक्रमण करके अङ्गरेजोंको कलकत्तेसे भगा नहीं दिया था, बादको क्रम क्रमसे सिराजचरित्रका स्पष्ट परिचय पाया जायगा।

ब्रिटिश वणिकोंने हुगलीपर कब्जा कर लिया था। सिराजुद्दौलहका क्रोध अस्वाभाविक नहीं था। फिर भी युद्धकी खूनखराबीके खयालसे शान्तिकी प्रत्याशासे वह अङ्गरेज वणिकोंको हरजाना देने और उनसे दान सुननेपर प्रस्तुत हुए। उन्होंने चिट्ठीमें स्वलिखितसे लिखा था,—'मेरे सिपाहियोंने कलकत्ता दुर्गमें अङ्गरेजोंका द्रव्यादि लूट लिया है तो भी मैं उसका हरजाना चुकानेपर राजी नहीं हूं।' केवल इतना ही नहीं अङ्गरेजी इतिहासोंने नराकार पिशाचरूपसे वर्णित नवाब सिराजुद्दौलहने कहा था—तुम लोग खृष्टान हो, अवश्य ही जानते हो कि किसी तरहका झगड़ा बखेड़ा न रखना ही भला है। फिर भी तुम लोग यदि अपनी कम्पनी और अन्यान्य सौदागरोंके स्वार्थकी ओर दृष्टि न रखकर युद्ध करना चाहते हो तो दोष मेरा नहीं है, मैं सिर्फ इस खूनी लड़ाईसे बचना चाहता था।

यही क्या नारकी नृशंस पापाचारी नरपिशाचकी बातें हैं? सिराजुद्दौलह शान्तिकामी होनेपर भी तेजस्वी थे। पत्रसे इसीका परिचय मिलता है।

जो हो, अङ्गरेजोंकी ओरसे सिराजुद्दौलहने इस पत्रका कोई जवाब नहीं पाया। उत्तर न पाकर वह ससैन्य कलकत्तेकी ओर अग्रसर होने लगे। उनके साथकी फौजका

ताद्दा इस प्रकार है,—१८ हजार सवार, १५ सौ पैदल, १० हजार पथप्रदर्शक, ४० हजार कुली बरकन्दाज प्रभृति, ५० हाथी और ४० तोपें। अङ्गरेजोंकी ओर थे—७१५ गोरे, १०० डच और १३ सौ सिपाही। इनके अतिरिक्त कितनी ही तोपें थीं।

क्लाइव कलकत्तेसे प्रायः दो कोस उत्तर नदी किनारे छावनी डाले नवाबके आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। * २री फरवरीको एडमिरल वाटसन क्लाइवके खीमेमें भोजनकी निमन्त्रणरक्षाके लिये आये थे। आहार समाप्त होते न होते उन्होंने समाचार पाया कि नवाब आध कोसपर आ पहुंचे हैं। यह समाचार पाते ही वाटसन लौट गये। उसी दिन सन्ध्या समय क्लाइवके साथ नवाबकी लड़ाई हो गई। किसी विशेष फल लाभकी सम्भावना न देख क्लाइव उस दिन ससैन्य लौट आये। इसके बाद और एक बार क्लाइवने नवाबकी छावनीपर आक्रमण किया था। किन्तु इस बार भी विशेष फल नहीं हुआ। † क्लाइवने अब नाना कारणोंसे नवाबके

---

* इसी समय एक सिक्खने क्लाइवके पहरेदारपर आक्रमण करनेका उपक्रम किया। पहरेदारने आत्मरक्षार्थ सिक्खको गोली मार दी। किन्तु सिक्खने गोली खाकर भी पहरेदारपर आक्रमण किया। इस आक्रमणसे पहरेदार भाग गया। [illegible] मरा नहीं, पहरेदारको मार भाग गया।

† क्लाइव कहते हैं कि नवाबने इस समय शहरके पूर्वभा[illegible] डेरा डाला था। [illegible] [illegible] [illegible] एक देशी

साथ सन्धि करनेकी इच्छा की। * पहला कारण नवाबके भयसे नगरवासियोंने उन्हें रसदादि देनेसे सङ्कोच किया था। दूसरा कारण, मन्द्राजके हाकिमोंके उन्हें सैन्याध्यक्षका पद देनेसे कितने ही लोग उनके शत्रु हो गये थे। † उस शत्रुतासे रणकार्य्यमें अनेक विघ्न पड़नेकी सम्भावनासे वह नवाबके साथ सन्धि करनेपर प्रस्तुत हुए। नवाबके पास सन्धिप्रार्थनाकी चिट्ठी भेजी गई। इसी जगह क्लाइवकी अवस्थाभिज्ञताका परिचय मिलता है।

सिराजुद्दौलहने इस समय अपने श्वशुर मुहम्मद इरजखां और अन्यान्य सहचरोंके साथ परामर्श करके सन्धि स्थापन करना ही कर्तव्य निर्द्धारण किया। सन् १७५७ ई० की ६ वीं अगस्तको निम्नलिखित शर्त्तोंके अनुसार सन्धि हुई,—

ईश्वर और उसके दूतगण साक्षी हैं, कि आज अङ्गरेजोंके साथ जो सन्धि की, उससे विच्युत न होऊंगा। उनपर मैं सदा अनुग्रह प्रकाश करूंगा। नवाब।

पथप्रदर्शककी साथ ले नवाबकी छावनीपर आक्रमण करने निकले; किन्तु बड़ी आंधीमें पड़कर कहींसे कहीं जा पड़े। ऐसा न होनेसे उसी दिन ससैन्य सिराजुद्दौलह विनष्ट होते। फिर भी, जो एक युद्ध हुआ था, उसमें सिराजुद्दौलहके बहुत आदमी हताहत हुए थे।

* Orme's Hist. Vol. II. P. 121.

† इस समय क्लाइवने ईष्ट-इण्डियन कम्पनीके चेयरमेनको यही बात लिख भेजी थी।

१। दिल्लीके बादशाह द्वारा जो सब अधिकार और क्षमता अङ्गरेज कम्पनीको दी गई है, उसपर कोई आपत्ति न की जावेगी। वह छीन भी न ली जावेगी। उसमे जो सब माफी है, वह भी स्वीकार की जावेंगी। फरमानमे जो सब गांव दिये गये है पहलेके सूबेदारोंने यद्यपि उनके देनेमें आपत्ति की थी, किन्तु अब वह सब दिये जावेंगे। किन्तु अङ्गरेज कम्पनी इन सब गांवोंके जमीन्दारोंको विना कारण उच्छेद वा उनकी क्षति कर न सकेगी।

फरमानकी यह सब शर्त्तें मैं भी स्वीकार करता हूं। नवाव।

२। अङ्गरेजोंके दस्तकके साथ बङ्गाल, बिहार और उडीसेके भीतरसे जिस किसी जगहसे अङ्गरेजोंका माल आवे जावेगा, चौकीदार, गोलिमा और जमीन्दार उसका टिकस या महसूल वसूल कर न सकेंगे।

इसे मैंने मञ्जूर किया। नवाव।

३। नवावने कम्पनीकी जो सब कोठियां ले ली हैं, उन्हें वह लौटा देंगे। इसीके साथ कम्पनीके लोगोंका जो सब रुपया पैसा इत्यादि ले लिया गया है, वह भी लौटा देना पड़ेगा। और जो सब चीजें लूटी गई हैं उनका वाजिब मूल्य अदा करना पड़ेगा।

मेरे राजस्व और महसूल सम्बन्धी कर्म्मचारियोंने मेरे हुकुमसे जो कुछ ले लिया है, वह लौटा दिया जावेगा। नवाव।

४। हम अङ्गरेज जिस तरह आवश्यक और उचित समझेंगे, उसी तरह अपने कलकत्तेके किलेको बनावें मजबूत करेंगे।

मैं इसमें सम्मत हुआ। नवाब।

५। मुरशिदाबादमें जैसे सिक्के प्रस्तुत होते हैं, उतने ही वजनके वैसे ही सिक्के हम अङ्गरेज प्रस्तुत करेंगे। वह भी देशमें चलेंगे और उनपर कोई बट्टा ले न सकेगा।

अङ्गरेज कम्पनी अपनी धातुसे अपने सिक्के तयार करेगी। इससे मैं सम्मत हूं। नवाब।

६। इस सन्धिपत्रपर ईश्वर और उसके पवित्र दूतगणके सामने दस्तखत करेंगे, मुहर करेंगे और शपथपूर्वक पालन करनेके लिये नवाब स्वयं और उसके कर्मचारीगण प्रतिज्ञा करेंगे।

मैंने ईश्वर और उसके दूतगणके सामने इसपर दस्तखत और मुहर की। नवाब।

७। नवाबके साथ सद्भाव स्थापन करके, कुल झगड़े बखेड़े दूरकर, नवाब जितने दिनोंतक इस सन्धिपत्रके मतानुसार चलेंगे, उतने दिनोंतक अङ्गरेजोंकी ओरसे एडमिरल चार्लस वाटसन और करनल राबर्ट क्लाइव नवाबके साथ सद्भावके साथ चलेंगे।

इन सब प्रतिज्ञाओंपर इन सब शर्तोंपर यदि गवरनर और काउन्सिल दस्तखत करें और मुहर लगावें तो मैं स्वीकार करनेपर प्रस्तुत हूं। नवाब।

इसपर नवाब, मीरजाफर राजा दुर्लभ और दो राजकर्मचारियोंके दस्तखत हैं।

यह कहनेका प्रयोजन नहीं है कि सन्धिकी शर्तें अङ्गरेजोंके लिये सम्पूर्ण सुविधाजनक है। सिराजुद्दौलहने चारों ओरकी व्यवस्था देखकर सन्धिकी शर्तें स्वीकार कीं। उन्होंने समझ लिया था, कि इस यात्रामें अङ्गरेजोंके साथ युद्ध करना

सुविधाजनक नहीं है और भी बलसञ्चयका प्रयोजन है। वाटसन इस जल्द जल्दकी सन्धिपर बिलकुल राजी नहीं थे। उन्होंने क्लाइवको चिट्ठी लिखकर कहा था,—"सिराजुद्दौलह चालाकी करते हैं। सन्धि करके वह यहांसे लौट जावेंगे और समय पाकर बलसञ्चयमें लग जावेंगे। इसका फल बड़ा ही शोचनीय समझना। इसलिये हमारी रायमें उनपर आक्रमण करना ही उचित है। उनकी राजनीतिक चतुरतामें भूल न जाना।"

क्लाइव भी सिराजुद्दौलहकी राजनीति-चतुरतामें न भूलते, किन्तु वह जैसी अवस्थामें पतित हुए थे उससे सन्धिके सिवा उस समय और कोई उपाय नहीं था।

सन्धि-स्थापन हुई सही किन्तु दूसरी लड़ाईके नाना कारण सामने दिखाई दिये।

सिराज और फ्रान्सीसी।

कलकत्तेमें अङ्गरेजोंसे सन्धि करके नवाब सिराजुद्दौलह सैन्य साथ मुर्शिदाबाद लौट गये, इसी समय फ्रान्स और अङ्गरेजका सन्धि बन्धन टूट जानेसे फिर घोरतर शत्रुताका सञ्चार हुआ था। क्लाइव जब मन्द्राजसे चलने लगे थे, तो वहांके हाकिमोंने उनसे कहा था, कि मौका पाते ही चन्दननगर आक्रमण करना। क्लाइवने इस समय वह

देखा। अवसराभिज्ञ चतुर क्लाइवने खयाल किया, कि इस समय फ्रान्सीसी यदि नवाबका साथ देंगे तो बड़ा अनर्थ होनेकी सम्भावना है, इसलिये नवाब और फ्रान्सीसियोंका सम्मिलन संघटित होनेसे पहले चन्दननगरपर आक्रमण किया जावे। उन्होंने वाटसन साहबसे अपना अभिप्राय प्रकट किया। किन्तु वाटसन साहबने नवाबकी अनुमति लिये बिना चन्दन नगरपर आक्रमण करना युक्तिसङ्गत खयाल नहीं किया। नवाबको इससे पहले ही यह समाचार मिल चुका था कि अङ्गरेज चन्दननगरपर आक्रमण करेंगे। उन्होंने १८वीं फरवरीको वाटसन साहबको इस भावका पत्र लिखा—"चन्दन नगरपर आक्रमण करनेसे सन्धिकी मर्य्यादा रक्षा हो न सकेगी। व्यर्थ ही मेरी प्रजाको पीड़ा होगी। इसलिये यह काम न हो।"

२१वीं फरवरीको वाटसन साहबने इस पत्रका जवाब दिया था। अवश्य ही उस पत्रमें फ्रान्सीसियोंपर समस्त दोषारोप किया गया था। वाटसन साहबने नवाबको यह समझानेका प्रयास किया था, कि चन्दननगरपर यों ही आक्रमण किया न जावेगा।

सिराजुद्दौलाने अङ्गरेज और फ्रान्सका सद्भाव संरक्षण करनेकी चेष्टा की थी। इसके बाद इस सम्बन्धमें नवाबने वाटसन साहबको और वाटसन साहबने नवाबको कितने ही पत्र लिखे थे। नवाबकी यह कामना बिलकुल ही नहीं थी, कि अङ्गरेज चन्दननगरपर आक्रमण न करें, किन्तु वह यह नहीं चाहते थे, कि उनकी आज्ञा बिना लिये अङ्गरेज चन्दननगरपर आक्रमण करके उसपर कबजा कर लें।

इससे भी अङ्गरेज परितृप्त नहीं हुए। जो सब फ्रान्सीसी चन्दननगर परित्याग करके नवाबके शरणागत हुए थे, अङ्गरेजोंने नवाबसे उन्हे मांग भेजा।

चन्दननगर अङ्गरेजोंके हाथ पड जानेके बाद मूंसे ल नामक एक फ्रान्सीसी सेनापति अपने दलबल और अस्त्रशस्त्रके साथ मुरशिदाबाद गये। वहां उन्होंने नवाबके शरणागत हो उनकी कृपासे सेनाविभागमे नोकरी पाई। वहां उनकी खासी प्रतिपत्ति हुई। नवाब उनपर प्रसन्न हुए। इसीलिये कितने ही कपटाचारी सभासद ल साहबसे चिढ़ गये। सिराजुद्दौलहके उच्छेदकामी ब्रिटिश वणिकने जब सुना, कि ल साहबकेसे एक शक्तिशाली सैनिक पुरुष सिराजुद्दौलहके सैनिक दलभुक्त हुए हैं, तो वह और स्थिर रह न सके। उन्होंने उसी समय सन्धिभङ्गका सूत्र पकड़कर नवाबको लिख भेजा,—"फ्रान्सीसी हमारे शत्रु है, आपने फ्रान्सीसी ल साहबको आश्रय देकर सन्धिकी अमर्यादा की है। इसलिये अभी उसे भगा दीजिये।" नवाबने सभासदगणसे सलाह की। कपटाचारी सभासदवर्गने हितैषिरूपसे नवाबको कहा,—'हुजूर। अब ल साहबको रखना न चाहिये। कारण, इससे सन्धिकी अमर्यादा होती है। इससे अङ्गरेजोंके साथ युद्ध होनेकी सम्भावना है, इसलिये ल साहब और उनके अनुचरवर्ग अभी पदच्युत किये जावें। नवाब किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हुए। उन्होंने उसी समय ल साहबको बुला भेजा। ल साहबने आकर नवाबसे एकान्तमे मिलकर जब सब बातोंसे अभिज्ञता लाभ की तो उन्होंने मुक्तकण्ठसे कहा,—"हुजूर। यदि

थोड़े से भाग हुए फ्रान्सीसियोंको आश्रय देना कुल फ्रान्सीसी कम्पनीकी सहायता करना है, तो अवश्य ही सन्धिकी अम र्य्यादा हो सकती है किन्तु जिनके अधीन नाना जाति नौकरी करती है वह कुछ आश्रित फ्रान्सीसियोंको यदि नौकरी दें तो इससे निश्चय ही सन्धिकी अवज्ञा न होगी।"

ल साहबकी बात सुनकर नवाब बहुत सन्तुष्ट हुए। उन्होंने अङ्गरेजोंको भी इस बातकी खबर दी। किन्तु अङ्गरेजोंने यह बात नहीं सुनी। नवाबके पयोमुख विषकुम्भ सभासद भी उन्हें पुनः पुनः कहने लगे,—"ल साहबको अभी निकालिये। नहीं तो अङ्गरेजोंसे फिर लड़ाई होगी।

नवाब समझते थे कि अनुगत आश्रित शक्तिशाली किङ्करका त्याग करना कभी कर्त्तव्य नहीं है किन्तु सभासदवर्गकी जिदसे उन्होंने ल साहबको कहा—"इस समय तुम अजीमाबाद जाकर रहो। ल साहबने गद्गद वचनसे कहा—हुजूर मेरे चले जानेमें कोई क्षति नहीं है, किन्तु आप जान लें, कि आपके अधिकांश कर्म्मचारी, मन्त्री और सेनापति आपसे असन्तुष्ट हो गये हैं। अजब नहीं, कि वह लोग इस समय अङ्गरेजोंके साथ षडयन्त्रमें लिप्त हों। आपपर वह असन्तुष्ट हुए हैं। आपसे असन्तुष्ट रहनेकी वजह ही वह आपको फ्रान्सीसियोंसे अलग रखना चाहते हैं। फ्रान्सीसियोंके चले जानेपर वह लोग अङ्गरेजोंके साथ षडयन्त्र घनीभूत करेंगे। इससे वह अपने प्रभुका सर्व्वनाश करके अपनी अपनी स्वार्थपुष्टि कर लेंगे। किन्तु जबतक मैं अपने अनुचरवर्गके साथ आपके पास रहूंगा, तबतक उनकी कार्य्यसिद्धि दूरकी

बात है। अब हुजूर! आपकी जैसी मरजी हो, वैसा कीजिये।"

ल साहबकी बातोंसे सिराजुद्दौलह विमोहित हुए, किन्तु उस समय उन्होंने अङ्गरेजोंके सन्तुष्ट करनेके लिये कहा,—"ल! इस समय तुम अजीमाबादमें जाकर रहो, समय होनेपर मैं तुम्हें फिर बुला लूंगा।" नवाबकी बात सुनकर ल साहबने एक दीर्घश्वास परित्याग करके कहा,—"फिर! नवाब बहादुर, यह हमारी अन्तिम मुलाकात है, फिर मिलना कहां।" यह बात कहकर ल साहब नवाब दरबार परित्याग करके चले गये।

षड़यन्त्र।

बुद्धिमान् ल साहब भविष्यद्वाणीरूपसे जो कह गये, यथार्थमें वही संघटित हुआ। सेनापति मीरजाफर, मन्त्री दुर्लभराम और दो हजार सिपाहियोंके अध्यक्ष यारलुतफ खां इससे पहलेसे कितने ही कारणोंसे नवाबपर नाराज थे। क्रमशः नाराजी चरमसीमापर चढ़ गई। जगतसेठ और अन्यान्य कई सभासद और सम्भ्रान्त देशवासी नवाबपर असन्तुष्ट थे। यही नाराजी और असन्तुष्टि नवाबके सिराजुद्दौलहके अधःपतनका मूल हुई। कितने ही लोग नवाबकी नृशंसता हीको इसका मूल कारण बताते हैं। किन्तु हमने इसका अन्य कारण निर्देश किया है। मीरमदन और मोहनलाल* नवाबके शक्ति-

---

* मुताखिरीनके अनुवादक कहते हैं,—"मोहनलाल

शाली सैनिक पुरुष थे। मीरजाफर लतफखां * और मीरमदनकी अपेक्षा नवाब मोहनलाल और मीरमदनपर अधिकतर विश्वास करते थे। इसीलिये मीरजाफर, लुतफ और दुर्लभ राम नवाबपर विरक्त थे। जगत्सेठ और अन्यान्य सम्भ्रान्त देशवासीगण नवाब अलीवर्दीके समय जैसी रियासत करते थे सिराजुद्दौलहके समय वैसी करने नहीं पाते थे। इसीलिये वह लोग भी सिराजुद्दौलहसे चिढ़ गये थे। कोई कोई कहते हैं कि नवाब सिराजुद्दौलहने जगत्सेठकी सुन्दरी पुत्रवधूको देखनेके लिये जगत्सेठसे बहुत अनुरोध किया था। जगत्सेठने नवाबके भयसे अपनी पुत्रवधूको पालकीसे नवाबके महलमें भेज दिया था। नवाबने उसे सिर्फ एक बार देख उसके घर भेज दिया था। यही है नवाबपर नाराज होनेका कारण। किन्तु अरमीके इन्दोस्तानसे हमें मालूम हुआ कि अलीवर्दीखांके पूर्व्वगत नवाब सरफराजखांने जगत्सेठकी पुत्रवधूको देखना चाहा था। उन्हींके महलमें पुत्रवधू भेजी गई थी। †

मीरजाफर दुर्लभराम प्रभृति नवाबपर नाराज थे सही

अपनी बहनको सिराजुद्दौलहके हवालेकर उनके प्रियपात्र बने थे।' किन्तु असलमें यह बात नहीं है।

* राय लुतफखां उमिचन्द्रसे भी तनखाह पाते थे। इसीलिये विपद-आपदमें राय लुतफ उनकी रक्षा करते थे। राय लुतफ उमिचन्द्रके इतने वाध्य थे कि नवाब भी विरुद्धाचरण करनेसे शायद बच न सकते।

† Orme's History of Indostan vol. II, sec. I, P. 30

किन्तु षडयन्त्रकी कल्पना करनेका साहस कोई नहीं करता था। अङ्गरेजोंने उनका अभिप्राय था, उन्हें षडयन्त्र करनेके लिये उत्तेजित किया था। हमारी बात नही है, अङ्गरेज इतिहास-लेखक मालिसन साहब साक्षाच्चरमे यह बात लिख गये हैं। *

केवल षडयन्त्र करनेके लिये उत्तेजित ही नहीं, मालिसन साहब जैसे सेनापति और सभासदगण कलुषित हुए थे।

अङ्गरेजोंकी प्ररोचनासे मीरजाफरप्रमुख व्यक्तिवर्ग छिपकर रुद्धद्वार गृहमे कासिमबाजारकी कोठीके अध्यक्ष वाटस् साहबके साथ षडयन्त्रमे लिप्त हुए थे। † उमिचन्द्र इस षडयन्त्रके मध्यस्थ व्यक्ति थे। भीतर भीतर वह दोनो पक्षकी खबरें पहुंचाते थे। अङ्गरेज इतिहास-लेखक कहते हैं, कि उमिचन्द्रने मौका देखकर ३० लाख रुपये मांगे थे। उनपर

---

* "Whilst the unhappy boy Nawab was the sport of the passion, to which the event of the moment gave mastery in his breast, the Englishman was engaged slowly persistently and continuously in undermining his position in his own Court, in seducing his generals and in corrupting his courtiers."

† मुरशिदाबादमे जगत्सेठके भवनमे राजा महेन्द्र, राजा रामनारायण, मीरजाफर प्रभृतिने सिराजुद्दौलहको राज्यच्युत करनेके संकल्पसे गुप्त मन्त्रणा की थी। दो बार मन्त्रणा हुई था। क्षितीशवंशावली-चरित।

साहबको सन्देह हुआ। उन्होंने समझा कि उमिचन्द जो कुछ मांगते हैं वह यदि उन्हें न मिला, तो सब रहस्य खुल जायेगा। नवाबने जब पहले कलकत्ते पर आक्रमण किया था, उस समय उमिचन्दका जो अर्थ नष्ट हुआ था अङ्गरेज कम्पनी उन्हें वह देनेपर प्रस्तुत थी। उमिचन्द उससे तृप्त नहीं हुए। क्लाइवने सोचा, कि उमिचन्दको धोखा देना चाहिये। मुहूर्त्तभरमें उन्होंने उपाय भी तय्यार कर लिया। उमिचन्दने कहा था, कि मीरजाफरके साथ जो सन्धि होगी, उसमें मेरे प्राप्य विषयका भी उल्लेख हो। उमिचन्द अपनी आंखों देखना चाहते थे, कि उस विषयका उल्लेख किया गया या नहीं। यहां क्लाइव चाल चल गये। दो सन्धि-पत्र लिखे गये एक सफेद कागजपर और दूसरा लाल कागजपर। पहला असली था, दूसरा जाली। पहलेपर उमिचन्दका नामतक लिखा नहीं गया, दूसरेपर उमिचन्दके आकांक्षित धनका उल्लेख था। पहलेपर क्लाइव और वाटसनने दस्तखत किये, दूसरेपर वाटसन साहब दस्तखत करनेपर राजी नहीं हुए,—क्लाइव हीने उनके भी दस्तखत बना दिये, दूसरा उमिचन्दको दिखाया गया। चुपके चुपके षडयन्त्र हुआ, चुपके चुपके मीरजाफरके साथ सन्धि हुई।

मीरजाफरने जिस सन्धिपत्रपर दस्तखत किये, उसकी नकल इस प्रकार है,—

"मैं जितने दिनों जीता रहूंगा, उतने दिनोंतक इस सन्धि-पत्रके नियमका पालन करूंगा। यह ईश्वर और उसके दूतके सामने मैं शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करता हूं।

१। नवाब सिराजुद्दौलहके साथ शान्तिके समय जो सन्धि हुई थी, उसकी शर्त पालन करनेमें मैं सम्मत हूं।

२। देशी हो या विदेशी, जो अङ्गरेजोंका शत्रु होगा, वह मेरा भी।

३। बङ्गालमें फ्रान्सीसियोंकी जो कोठिया हैं, वह अङ्गरेजोंके अधिकारमें चली जावेगी। फ्रान्सीसियोंको और कभी इस देशमें बसने न दूंगा।

४। नवाबके कलकत्तेपर अधिकार करनेमें अङ्गरेजोंकी जो क्षति हुई है, उसे पूरण करनेके लिये और सिपाहियोंका खर्च अदा करनेके लिये मैं उन्हें एक करोड़ रुपया दूंगा।

५। कलकत्तेके अङ्गरेज अधिवासियोंकी चीजें लुटनेके सम्बन्धमें मैं क्षतिपूरणके लिये उन्हें पचास लाख रुपये देना स्वीकार करता हूं।

६। जेण्ट मूर प्रभृतिका माल लुटनेके सम्बन्धमें क्षतिपूरणमें २० लाख रुपये दिये जावेंगे।

७। आरमनियोंके क्षतिपूरणके लिये ७ लाख रुपये दूंगा। किसे किस परिमाणसे क्षतिपूरण देना पड़ेगा, उसका फैसला अड्मिरल वाटसन, करनल क्लाइव, रोजा ड्रेकर, विलियम वाटस, जेम्स किलपाट्रिक और रिचार्ड साहब कर देंगे।

८। कलकत्तेकी चारो ओर जो थाने है, उनमें बहुतसी जमीन्दारोकी जमीन है। नालेके बाहर ६ हजार गज जमीन अङ्गरेज कम्पनीको दूंगा।

९। कलकत्तेके दक्षिण क्षुल्पीतक सब जगहोंमें अङ्गरेजोंकी जमीन्दारी रहेगी। वहांके सब कर्मचारी अङ्गरे-

अधीन रहेंगे। वह सब दूसरे जमीन्दारोंको जिस तरह मालगुणारी देते हैं, उसी तरह कम्पनीको देंगे।

१०। जब मैं अङ्गरेजोंसे सहायताके लिये फौज लूंगा, तो उसका खर्च दूंगा।

११। हुगलीके दक्षिण मैं कहीं किला न बनाऊंगा।

१२। मैं इस प्रदेशके राज्यपर अधिष्ठित होनेपर इस शर्तके सब रुपये दूंगा।

तारीख १५ वीं रमजान १७५७ ई० जून।

अङ्गरेज सिराजुद्दौलहको राज्यच्युत करके मीरजाफरको नवाब बनानेके लिये प्रतिश्रुत हुए थे। उसी प्रतिश्रुतिका प्रतिदान यह सन्धि थी।

कहते हैं, कि कृष्णनगरके महाराज कृष्णचन्द्र और नाटोरकी रानीभवानी भी इस षड्यन्त्रमें लिप्त थी। रानी भवानी और कृष्णचन्द्रकी बात कवि नवीनचन्द्रसेनके पलाशीयुद्धमें उल्लिखित है। कृष्णचन्द्रकी बात श्रीकार्त्तिकचन्द्र राय प्रणीत क्षितीशवंशावली-चरित * में भी है। इस बातपर फ्रेण्ड आफ इण्डिया नामक अखबारमें वाद प्रतिवाद हुआ था।

---

* नवाब सिराजुद्दौलहका सर्व्वनाश करनेके लिये मीरजाफर प्रभृतिने जो अभिसन्धि की, कृष्णचन्द्र भी उसमें शामिल हुए। उस समय उन्होंने कालीदर्शनच्छलसे कालीघाट आकर क्लाइवसे मिलकर सिराजकी राज्यच्युति सम्बन्धमे मन्त्रणा की। कृष्णचन्द्र नवाबके राजविप्लवके प्रवर्त्तक मन्त्री और एक प्रधान उद्योगी थे, इसीलिये नवद्वीपके कितने ही लोग उन्हें "नमकहराम" कहते हैं।

समझानेके लिये सिराजुद्दौलहने यह गपस रचा है। पत्र असली हो या जाली किन्तु अङ्गरेजोंने सिराजुद्दौलहको अपनी हितैषिता दिखानेके लिये यह चिट्ठी उनके पास भेज दी। पत्र भेजनेका और भी एक उद्देश्य यह था कि यह पत्र पाकर सिराजुद्दौलह बहुत कुछ निश्चिन्त हो जायेंगे और अङ्गरेजोंके हाथ बहुत कुछ समय लग जावेगा। क्रमशः मौका पाकर वह नवाबपर आक्रमण करेंगे। इससे पहले सिराजुद्दौलहने अङ्गरेजोंकी दुरभिसन्धि समझकर पलाशीके मैदानमें * फौज जमा कर रखी थी। क्लाइवने चन्दननगरसे आधी फौज कलकत्ते भेज दी। इससे सिराजुद्दौलहको यह दिखाया गया, कि अङ्गरेजोंका कोई बुरा खयाल नहीं है। अङ्गरेज इस स्क्राफ्टन चिट्ठी लेकर सिराजुद्दौलहके पास गये थे। उन्होंने अङ्गरेजोंकी नकली साधुताका बखान करके सिराजुद्दौलहको पलाशीसे फौज हटा ले जानेकी सलाह दी। उन्होंने नवाबको समझाया कि ऐसा करनेसे, अङ्गरेज समझेंगे कि सिराजुद्दौलहने हम लोगोंकी साधुता हृदयङ्गम की। सिराजुद्दौलह चिट्ठी पाकर अङ्गरेजोंपर बहुत सन्तुष्ट हुए सही, किन्तु पलाशीसे फौज हटानेपर राजी नहीं हुए। †

---

* पलाशी गांव भागीरथीके बायें किनारेपर है। कलकत्ते से ४० कोस उत्तर और बहरामपुरसे ११ कोस दक्षिण।

† Thornton's History of British India Vol I. P. 228.

सिराजुद्दौलहने अङ्गरेजोंकी गति मतिकी ओर सतर्क और सुतीक्ष्ण लक्ष्य रखा था। उन्होंने समझा था कि अङ्गरेज उनके सम्पूर्ण उच्छेदकामी हैं। जिस दिन उन्होंने देखा, कि अङ्गरेज उनकी राय लिये बिना चन्दननगरपर आक्रमण कर बैठे उसी दिन वह समझ गये कि सन्धिशर्तके मुताबिक अङ्गरेजोंकी सब प्रार्थना पूर्ण करनेपर भी अङ्गरेज निश्चिन्त रहनेके पात्र नहीं हैं। फिर भी, वह सिर्फ बलपुष्टिके लिये समय पानेके अभिप्रायसे वाटसन साहबको पत्र लिखकर अनुकम्पित भाषामें और धीर भावसे आशा देते कि सन्धिशर्तके अनुसार सब बातें पूरी करूंगा। वाटसनको उन्होंने ऐसे कितने ही पत्र लिखे थे।

सिराजुद्दौलहको यह आभास भी पहले ही मिल चुका था, कि अङ्गरेज सिराजुद्दौलहके विपक्ष षड्यन्त्र कर रहे हैं। वह जान गये थे, कि मीरजाफर इस षड्यन्त्रके मूलाधार हैं। स्क्राफ्टन साहब जब नवाबके पास पत्र ले गये, तो उनकी इच्छा एक बार मीरजाफरसे भेंट करनेकी थी। किन्तु सिराजुद्दौलहके सुतीक्ष्ण लक्ष्यसे उनका वह उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ। मीरजाफरको षड्यन्त्रका मूलाधार समझकर सिराजुद्दौलहने उन्हें पदच्युत किया। इसी समय वाट्स साहब दलबलके साथ मुरशिदाबाद परित्याग करके कलकत्ते आये। उनके एकाएक चले जानेसे सिराजुद्दौलहका सन्देह और भी घनीभूत हो गया। उन्होंने उसी समय मीरजाफरके महलपर आक्रमण करके, उन्हें सदैवके लिये दण्ड देनेका सङ्कल्प किया, किन्तु उन्होंने जब देखा, कि षड्यन्त्र चरम सीमातक .-

चुका है तब उन्होंने शत्रुभाव छोड़कर मित्रभावमें मीरजाफरको बुला भेजा। मीरजाफरने भयसे हो या घृणासे नवाबसे मुलाकात नहीं की। तब नवाब स्वयं मीरजाफरके मकान जानेके लिये तय्यार हुए। सिराजुद्दौलहने विनयनम्र वाक्यसे मीरजाफरको सन्तुष्ट करनेकी चेष्टा की। मीरजाफरने नवाबकी बातसे परितुष्ट होकर विद्वेषभाव परित्याग किया। तब दोनोंमें प्रगाढ़ सख्य संस्थापित हुआ। दोनोंने क़ुरान छूकर शपथ किया, कि कोई किसीका विरोध न करेगा।

मीरजाफरको क़ुरान छूकर कसम खाते देख सिराजुद्दौलह बहुत सन्तुष्ट हुए। मीरजाफरकी ओरसे वह निश्चिन्त हुए, किन्तु अङ्गरेजोंपर विश्वास स्थापन कर न सके। उनके मनमें विश्वास जम गया था, कि अङ्गरेज उनके पदोच्छेद कामी हैं। तब उन्होंने युद्ध घोषणा करके वाटसनको अन्तिम पत्र लिखा,—

२५वीं रमजान (१३वीं जून सन् १७५७) इसमें जो सन्धि हुई थी, उसे मानकर मैंने वाट्स साहबको सब दिया थोड़ा बाक़ी है। मैंने इतना किया, फिर भी देखता हूं, कि वाट्स साहब और कासिमबाजार कौन्सिलके सभ्यगण बागमें हवाखोरीके बहाने रातको भाग गये हैं। इस कार्य्यसे चातुरी और सन्धिभङ्गकी पूर्ण इच्छा प्रकट होती है। यह सम्भव नहीं, कि आपके बेजाने या आपकी बेसलाहके यह काम हुआ है। मैं बहुत दिनोंसे जानता था, कि ऐसा ही होगा। जैसी विश्वासघातकताका उद्योग देखता हूं, उससे मैं पलाशीसे फौज हटानेका सङ्कल्प छोड़ देता हूं।

ईश्वरका धन्यवाद है, कि सन्धिकी शर्त्त मुझसे नहीं टूटी। ईश्वर और उनके दूतोंको साक्षी करके हमारी सन्धि हुई है। वह सन्धि जो तोड़ेगा, उसे ईश्वरकी शास्ति भोग करना पड़ेगी।

विश्वासघातक मीरजाफरने कुरान छूकर कसम खानेके बाद भी षड्यन्त्र नहीं छोड़ा। १०वीं जूनको मीरजाफरका स्वाक्षरित सन्धिपत्र कलकत्ते पहुंचा। इसके उपरान्त चतुर क्लाइवने मुखका मुखौटा उतार फेंका। प्रतारणाकी प्रच्छन्न मूर्त्ति प्रकट हुई। उन्होंने खुलकर नवाबके विरुद्ध युद्धघोषणा की। बात क्रमसे मुरशिदाबादतक पहुंची। इस अफवाह ही पर नवाबको लड़ाईके लिये प्रस्तुत होना नहीं पड़ा। क्लाइवने अपने हाथसे, अपने दस्तखतसे इस मर्म्मका पत्र लिखा था,— 'आपने सन्धिके अनुसार काम नहीं किया, तरह तरहकी चालें खेलीं, शत्रुको आश्रय दिया, इसलिये अब युद्ध ही अच्छा है।'

युद्ध।

इस समय दोनों ओरसे युद्धकी तय्यारी होने लगी। सिराजुद्दौलाहके ४०।५० हजार सिपाही पलाशीमें लड़नेके लिये तय्यार थे। इधर क्लाइवने भी फौज लेकर पलाशीकी ओर जानेका उद्योग किया।

१७वीं जूनको करनल क्लाइवने, दो सौ गोरे, पांच सौ सिपाही, एक बड़ी और एक छोटी तोपके साथ मेजर कायर कूटको कटवे भेज दिया। कटवेपर अधिकार करना जरूरी था। कटवा दुर्गमें प्रचुर परिमाणसे चावल और फौजी सामान था। यहांसे पलासीके मैदानमें फौज लड़ानेमें यथेष्ट सुविधा भी थी। कटवादुर्गके देशी सैन्याध्यक्षने सिर्फ एक बार अङ्गरेजी फौजका सामना किया, इसके बाद अङ्गरेजोंको दुर्ग दे दिया। सन्ध्याके समय क्लाइवकी फौजने वहां पहुंचकर नगरपर कब्जा किया। यहांका किला और गृहादि आश्रयस्थल हुए, नहीं तो दूसरे दिनके पालेसे भयानक कष्ट पाना पड़ता। यहां क्लाइवने सोचा, कि मीरजाफर क्या करेंगे। कटवेमें उन्हें मीरजाफरके सविशेष आशासूचक पत्र क्यों नहीं मिले। क्लाइवको सिर्फ एक पत्रसे मालूम हुआ था, कि यद्यपि सिराजुद्दौलहके साथ मीरजाफरकी फिर दोस्ती हो गई है, किन्तु फिर भी वह अङ्गरेजोंको सहायता देनेमें पीछे न हटेंगे। २०वीं तारीखको भेजे हुए आदमीने मीरजाफरके पाससे लौटकर कोई सुनिश्चित समाचार नहीं दिया। इससे क्लाइवने चिन्तित होकर कर्त्तव्यनिर्द्धारणके लिये कलकत्तेकी सिलेक्ट कमिटीको चिट्ठी लिखी। इस पत्रमें उन्होंने स्पष्ट ही लिखा था, कि जबतक मीरजाफरके साथ देने या न देनेका हाल मालूम न हो जायगा, तबतक मैं किसी तरह युद्ध न करूंगा। मीरजाफर यदि साथ न दें, तो इस समय पलासी न जाकर वर्षाके अन्ततक कटवे हीमें ठहरना पड़ेगा।

उसी दिन सन्ध्या समय मीरजाफरकी भेजी हुई एक चिट्ठी

पाकर क्लाइवको मालूम हुआ, कि मीरजाफर पलाशीकी ओर चल पड़े हैं। वह सिराजुद्दौलहकी फौजके एक भागमें रहेंगे। पलाशी जाकर सब बातें साफ साफ लिखेंगे। क्लाइवका मन दारुण सन्देहमें आन्दोलित होने लगा। वह बहुत कुछ किंकर्त्तव्य विमूढ़ हुए। अन्तमें कर्त्तव्यनिर्द्धारणके लिये उन्होंने कई साथी कर्म्मचारियोंके साथ सलाह की। अधिकांश मतसे स्थिर हुआ, कि इस समय युद्ध न हो। क्लाइवकी भी वही राय थी। इस समय क्लाइवने बरदवानके राजाको एक हजार सवारोंके साथ लड़ाईमें शामिल होनेके लिये अनुरोध कर भेजा था।

क्लाइव साथियोंको बिदाकर एक वृक्षतले अकेले बैठकर अपने मनसे बातें करने लगे। बहुत विचारने-बाद उसी समय युद्ध करना सिद्धान्त हुआ। सिद्धान्तके साथ साथ कार्य्यारम्भ हुआ। २१वीं जुलाईके सवेरे क्लाइव ६५० गोरे, १०० गोरे गोलन्दाज, ५० अङ्गरेज मल्लाह कितने ही देशी मल्लाह और २१०० देशी सिपाहियोंके साथ भागीरथीके किनारेसे पलाशीकी ओर चलकर नावसे नदीपार हुए। उनके साथ ८ बड़ी और छोटी तोपें थी। तीसरे पहर कोई चार बजे उन्होंने नदी किनारे खीमे किये। इस समय मीरजाफरके भेजे एक पत्रसे क्लाइवको जान पड़ा, कि सिराजुद्दौलह कासिम बाजारसे तीन कोस दूर मानदरा गांवमें ठहरे हुए हैं। कासिमबाजारसे पूर्व्व ओर जाकर नवाबपर आक्रमण करनेमें सुविधा थी। किन्तु क्लाइवको उसमें सुविधा दिखाई
उन्होंने समझा, कि मक्कारीपर विश्वास करना न

चक्कर काटकर नवावपर आक्रमण करनेसे नवावकी फौज पीछे आकर उन्हींपर आक्रमण करेगी। यही सब समझ कर क्लाइवने मीरजाफरको कहला भेजा, कि मैं विना विलम्बके पलाशीकी ओर यात्रा करूंगा, कल तीन कोस राह चलकर दाऊदपूर गांवमें पहुंचूंगा वहां यदि मीरजाफर मेरे साथ शामिल न होंगे, तो नवावके साथ सन्धि कर लूंगा।

जिस जगह क्लाइवकी छावनी थी वहांसे नवावका लशकर कोई पन्द्रह मीलके फासलेपर था। २२वीं जूनकी सन्ध्याको कूच करके २३वींकी रातको एक बजे क्लाइव पलाशी पहुंचे। इस पलाशी गांवसे कुछ फासलेपर अमराईमें जाकर ब्रिटिश फौजने आश्रय ग्रहण किया।

इस अमराईसे आध कोसके फासलेपर नवावका लशकर था। अमराईकी लम्बाई १८०० हाथ थी और चौड़ाई ६०० हाथ। उसकी चारों ओर मट्टीका बांध और पय:प्रणाली थी। इसके उत्तर पश्चिम कोई सौ हाथ दूर भागीरथी कल कल शब्दसे वह रही थी। अमराईके पास नवावकी पक्की शिकारगाह थी। क्लाइवने इस शिकारगाहपर अधिकार कर लिया। आमके वृक्ष कतारसे लगे थे।* जिस समय क्लाइवने ससैन्य अमराईमें आश्रय ग्रहण किया उससे २४ घण्टे पहले नवाव आकर लशकरमें दाखिल हुए।

---

* इस समय अब एक भी आमका वृक्ष दिखाई नहीं देता। जो बचा था वह भी कई वर्ष हुए गिरकर कोठोंमें पटके गये। Lurry's Hand Book of Bengal, 1882.

नवाबकी ओर से ३५ हजार पैदल किन्तु वह लोग युरोपीय ढङ्गसे सुशिक्षित नहीं थे, १५ हजार सवार, यह सब अपेक्षाकृत सुशिक्षित थे, अधिकांश पठान सवार तलवार और बर्छोंसे सुसज्जित थे, गोलन्दाज अच्छे थे, ५३ तोपें थीं, ४०।५० फ्रान्सीसी सिपाहियोंने तोपके साथ नवाबकी फौजका बलवर्द्धन किया था। मसे सेण्ट फ्रे इन सब फ्रान्सीसियोंके अध्यक्ष थे। यह पहले चन्दननगरके एक 'काउन्सिलर' थे। अङ्गरेजोंने फ्रान्सीसियोंको चन्दननगरसे भगा दिया था। इसीलिये नवाबकी फौजमें दाखिल होकर फ्रान्सीसी सिपाही बदला लेनेके लिये प्रति क्षण अङ्गरेजोंके ध्वंस करनेकी कामना करते हुए वीरदर्पसे पलाशीक्षेत्रमें प्रतीक्षा कर रहे थे।

नवाबकी फौज जैसी सुदृढ़ शक्तिमान् थी। वैसा ही दुराक्रम्य सुदृढ़ स्थान उसने अधिकार किया था। भागीरथीतटसे मोरचाबन्दी खोंमें आदि कोई चार सौ हाथ भूमिमें फैले हुए थे। फिर वह उत्तर पूर्व घूम गये थे। उधर भी कोई डेढ़ कोसतक फैले हुए थे। सर्व्वसीमान्त कोनेमें सुरक्षित गढ़पत्थरपर एक बड़ी तोप लगी हुई थी। गढ़के सामने एक मृत्तिकास्तूप जङ्गलसे ढंका हुआ था। कोई १६ सौ हाथके फासलेपर दक्षिण अमराईके पास एक पुष्करिणी थी। उसके पास ही और एक बड़ी पुष्करिणी थी, यह दोनों पुष्करिणियां मट्टीके बांधसे घिरी हुई थीं।

प्रतारणासे पराजय।

२३वीं जूनको नवावकी फौज गढ़से निकलकर लड़नेके लिये आगे बढ़ी। सुदृढ़ व्यूह रचा गया था। फ्रान्सीसी चार तोपोंके साथ बड़ी पुष्करिणीके पास डट गये। फ्रान्सीसी फौज और भागीरथीके बीचमें दो बड़ी तोपें लगाई गईं। एक देशी आदमीपर तोप चलानेका भार रखा गया। उनके पीछे थे विश्वासी सेनापति मीरमदन। उनके साथ ५ हजार सवार और ७ हजार पैदल थे। उन्हींकी बगलमें वीर मोहन-लाल थे। मीरमदनसे बहुत फासलेपर अर्द्ध-गोलाकार भावसे दूसरी फौजें थीं। बाये पलाशीकी अमराईसे दाहिने जङ्गलसे ढंके मृत्तिका-स्तूपतक यह सब फौज फैली हुई थी। इसके बीचमें कितने ही सवार और पैदल दल बांधकर खड़े थे। फौजके बीच बीचमें सुदारुण अग्निवर्षी तोपें थीं। अर्द्ध गोला-कार व्यूहमध्यमें ४५ हजार सिपाही थे। मीरजाफर यारलुत्फ खां और दुर्लभराम इनके अध्यक्ष थे। मीर-जाफर बायें ओर थे यारलुत्फ मध्यभागमें और दुर्लभराम दक्षिणभागमें। अङ्गरेजोंकी फौजको नवाबकी फौजने अच्छी तरह घेर लिया।

साहबने एकबार शिकारगाहपर चढ़ सहस्त्र नयनसे नवा-बकी फौज देखी। सहुमदत् थी। साहब स्तम्भित और चकित हुए। उन्होंने सोचा कि यह सब सिपाही क्या प्रभुभक्त हैं? किन्तु आधुनिक सिपाही ढाहली और निर्भीक वीर साहब

इससे विचलित नहीं हुए। उन्होंने लड़ाईके लिये अपनी फौज सज्जित की। बांये भागमें रक्खी शिकारगाह, बीचमें गोरे, बायें दाहने समविभागमें देशी सिपाही। सैन्यके बायें चार सौ हाथपर ईंटोंका गञ्ज पजावा था जिसने ही सिपा

नवाव सिराजुद्दौलह।

हियोंने दो बडी और दो छोटी तोपोंके साथ उसपर अधिकार कर लिया।

सन् १७५७ ई०की २२वीं जून भारतेतिहासका स्मरणीय दिन है। इसी दिन सवेरे फ्रान्सीसी सेनापति सेण्ट फ्रूने

आमके वृक्षोंपर लगने लगे। क्लाइवने अधिकांश सिपाही भागीरथीतीरके निम्नभागमें जमा कर रखे। कितने ही सिपाहियोंने तोपें चलानेके लिये मट्टी काटकर छोटी छोटी सुरङ्गें तय्यार कर लीं। अङ्गरेजी सिपाही नदीतटके नीचे थे, इसलिये नवावकी फौजसे आते हुए गोले उनके माथेपरसे निकल जाने लगे। अङ्गरेजोंकी सुरङ्गमें लगी हुई तोपोंके अव्यर्थ गोले नवावकी फौजपर पड़ने लगे।

नवावकी फौजमें कितने ही सिपाही मारे गये और कितने ही घायल हुए। कितनी ही तोपें फट गईं। तीन घण्टों-तक लगातार युद्ध होता रहा। किसी ओरको विशेष क्षति-वृद्धि नहीं हुई।

क्लाइवने देखा, कि मीरजाफर कोई कारखाई नहीं कर रहे हैं। साटका तिल मात्र सङ्केत भी नहीं कर रहे हैं। बड़ी चिन्ता है,—क्या किया जावे। बहुत कुछ सोच समझकर साथियोंसे सलाहकर क्लाइवने सिद्धान्त किया, कि भाग्यमें जो कुछ हो, राततक लड़ना ही पड़ेगा।

लड़ाई होती रही। देखते देखते एक दौंगड़ा पानी वरस गया। अङ्गरेजोंने पालसे वारूदादि ढांक दी थी। नवावकी ओर यह व्यवस्था की नहीं गई, सुतरां सब वारूद भीग गई। अङ्गरेज अनार्द्र शुष्क सतेज वारूदसे गोले वर-साने लगे। नवावकी ओरके गोलोंमें उतना दम रह न गया। मीरमदनने खयाल किया, कि अङ्गरेजोंकी ओरकी भी यही अवस्था है। इसी खयालसे वह तीव्रवेगसे गोले वरसाते अङ्गरेजी सिपाहियोंकी ओर बढ़ने लगे। हाय। अङ्गरेजोंके

नवावको भीत समझ विश्वासघातक दुर्लभरामने उनसे कहा— "हुजूर! डरते क्यों हैं? आज फौजको लौटनेकी आज्ञा दीजिये और मुझपर सब बोझ दे मुरशिदाबाद लौट जाइये।" अभागे नवावने किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो उस समय कुल फौजको छावनीमें लौट जानेकी आज्ञा दी।

बङ्गाली वीर प्रभुभक्त मोहनलाल इस समय अतुल विक्रमसे युद्ध कर रहे थे। उनके ज्वलन्त अग्निमय गोलोंकी मारसे शत्रुपक्ष अस्थिर हो उठा था। समरकुशल अधीन सिपाही भी वीरत्व वीर्य्यसे प्रभुका मुख उज्ज्वल कर रहे थे। ऐसे समय नवावके दूतने जाकर उन्हें लड़ाई रोकनेके लिये कहा। मोहनलालने वह बात नहीं सुनी। नवावका दूत फिर गया। इस बार भी मोहनलालने कोई बात नहीं सुनी। फिर निषेध आज्ञा आई। अब मोहनलालने एक बार चारो ओर देखा। नवावकी फौज छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। कोई लौट गई थी, कोई लौट रही थी, कोई लौटनेकी तय्यारी कर रही थी। यह देखकर वह समझ गये, कि नवावका अधःपतन अनिवार्य्य है, बङ्गालसे मुसलमानोंका राजत्व उठता है। आजके इस सूर्य्यास्तके साथ साथ मुसलमान नवावका स्वाधीनता-सूर्य्य अस्तमित होगा। वह क्षणभर भी विलम्ब न कर, किसीसे कुछ न कह, सिपाहियोंको साथ न ले, अभिमानसे क्षोभसे क्रोधसे परिपूर्ण हो रणभूमि परित्याग करके चले गये। उन्हें रणभूमिसे जाते देख सिपाहियोंने भी मैदान छोड़ दिया। हाय! मोहनलालसे दुर्ज्जय अभिमानसे और थोड़े धैर्य्यके अभावसे अभागे सिराजुद्दौलहका सर्व्वनाश हुआ।

फौजसे कितनी देरतक लड़ सकते थे? उन्होंने देखा, कि ब्रटिश फौज बहुत कुछ आगे बढ़ आई है। तब वह कुछ पीछे हट उच्च मृत्तिका स्तूपके पास जा, पल पलमें शत्रु-सैन्यकी प्रतीक्षा करने लगे।

इधर मीरजाफर नवाबकी फौजका साथ छोड़ अपनी फौज ले अमराईकी ओर बढ़ने लगे। क्लाइव उन्हें अभीतक पहचान नहीं सके थे। उन्होंने समझा, कि नवाबकी फौज उनपर आक्रमण करनेके लिये बढ़ रही है। तब उन्होंने पुष्करिणीकी बगलसे फौज हटाकर वेग तथा तेजके साथ मीरजाफरके फौजकी राह रोकी। मीरजाफर अपनी फौज लेकर अपनी पहली जगह चले गये। वहां वह नीरव और निश्चल स्थाणुवत् अवस्थिति करने लगे। जिस समय नवाब उपस्थित थे, उस समय विश्वासघातक मीरजाफरने बिलकुल ही फौज नहीं लड़ाई, केवल स्थिर भावसे दोनो पक्षकी गतिविधि निरीक्षण करते रहे, उन्होंने स्थिर कर रखा था, कि जो पक्ष प्रबल होगा, उसीके साथ मिल जाऊंगा। इसी लिये नवाबके मुरशिदाबाद चले जाने और मोहनलालके रण भूमि त्याग करनेके बाद मीरजाफर क्लाइवकी सहायता करनेके उद्देश्यसे अमराईकी ओर अग्रसर हुए थे।

क्लाइवने सोचा था, कि मीरजाफर उन्हें सहायता न देंगे। उन्होंने सोचा था, कि पलाशीकी इस लड़ाईसे एक भी ब्रटिश प्राणीको लौटना नसीब न होगा। केवल अदृष्टपर निर्भर करके असीम साहसके साथ अनिवार्य्य वीर्य्यसे वह युद्ध कर रहे थे। इतनी चातुरी थी। इतना कौशल था। इतनी प्रतारणा

थी। इतनी प्रवञ्चना थी। कलुष-कालिमासे आमीव निमज्जित थे। किन्तु "आजन्म-सिपाही" पद पदपर तेजस्विताका परिचय देते थे।

क्लाइव नवाबकी फौजके लौटनेका कारण समझ नहीं सके, किन्तु फौजकी वापसी देख उनका साहस दूना हो गया। क्रमसे उन्होंने देखा, कि मीरजाफर लड़ नहीं रहे है, सिलवर एक किनारे चुपचाप निष्क्रिय सिपाहियोंके साथ खड़े हैं। तब वह बढ़े हुए विक्रमसे फ्रान्सीसियोंपर बढ़े। फ्रान्सीसी तय्यार थे। वह फिर जोरतर युद्ध करने लगे। धन्य वीर सेण्ट फ्रे। किन्तु हाय। उस सेनापतिशून्य रणक्षेत्रमें सेण्ट फ्रे सिर्फ थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ कितनी देरतक लड़ते? उन्होंने रणसे पीठ फेरी। वृटिश सैन्यके सामने अब कोई विघ्नबाधा रह न गई। नवाबकी फौज भागने लगी। वृटिश फौज उसे रगेद रगेदकर मारने लगी। इसके उपरान्त क्लाइवने स्वच्छन्दताके साथ किलेके भीतर घुस उसपर कबजा कर लिया। वृटिशकी जय हुई। पलाशीके लम्बे चौड़े मैदानमें विजय-कोलाहलसे गगन-मेदिनी भर उठी। उस रुधिरप्लावित पलाशीक्षेत्रमें हमारे ही मङ्गलके लिये वृटिश शासन शक्तिका बीज रोपित हुआ।

इस समय कितनी ही बातें याद आती हैं।—सिराजुद्दौलह यदि मीरजाफरका पदगौरव पूर्ववत् अक्षुण्ण रखते तो यह रोमाञ्चकर षड्यन्त्र न होता। याद आता है, कि सिराज यदि बुद्धिमान् फ्रान्सीसी वीर लको विदा न करते तो वृटिश सैन्य रणमें युद्ध करनेकी हिम्मत न करते। याद आता है, कि

नवाबने जब मीरजाफरकी विश्वासघातकता जान ली थी, तो यदि एक बार वह किसी तरहसे उनका गतिरोध कर सकते, तो अङ्गरेजोंको भय करना न पड़ता। याद आता है, कि नवाबने जब देखा, कि मीरमदन आहत हैं तो वह विश्वास घातक मीरजाफरको न बुलाकर, यदि अपने अदृष्टपर निर्भर करते, वीर मोहनलालके वीरत्वपर विश्वास करके छाती बांध सकते, तो नवाबको मुरशिदाबाद भागना न पड़ता। याद आता है, कि मोहनलाल यदि अभिमानसे अभिहत न होकर और कुछ धैर्य्यके साथ युद्ध करते, अन्तत: यदि रणक्षेत्र त्यागकर लौटनेके समय अपनी फौजको अपने साथ लाते, तो परिणाम ऐसा न होता। मनसे ऐसी ही कितनी ही बातें आती हैं, किन्तु विधिका लिखा कौन काट सकता है। विधिकी इच्छा हीसे हमारा सौभाग्योदय हुआ। इसीलिये सिराजुद्दौलहका अधःपतन, अङ्गरेजोंका अभ्युत्थान हुआ।

विधिकी इच्छा होनेसे, तृणाङ्कुरसे भी भीमगिरि छिन्न-भिन्न होता है, मशकपदाघातसे हाथीकी छाती फट जाती है, सोखनेसे समुद्र सूख जाता है, फूंकनेसे सूर्य्यताप मिट जाता है। जिनकी इच्छासे स्फटिकस्तम्भनिहित नृसिंह मूत्युबाणसे दुर्ज्जेय वीर रावणकी मृत्यु हुई थी, उन्हीकी इच्छासे सिराजुद्दौलहका पतन हुआ। इतना ही समझ जानेसे आदमीमें मोह नहीं रह जाता।

सिराजका परिणाम।
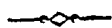
सन् १७५७ ई०की २३वीं जूनको पलाशीके मैदानमें ब्रिटिश सिंहकी विजय-पताका उड़ी। ब्रिटिश-वाहिनीके अवज्ञ-भैरव गगनस्पर्शी सिंहनादसे पलाशीकी वह विजयवार्ता विघोषित होने लगी। वह कल्लोलकोलाहल भागीरथीके कलकल शब्दसे मिलकर अमराइके प्रसन्न छायातलको मुहुर्मुहुः प्रकम्पित करने लगा। जिसके गुणसे या जिसके बलसे पलाशीके युद्धमें विजयलाभ हुआ हो उस "आनन्द सिपाही निर्भीक सिंह साहसी, दीर्घदर्शी किन्तु स्वार्थपर प्रतारणापटु "क्लाइव" की प्रतिष्ठा यहां शतगुणसे परिवर्द्धित होने लगी।

दो एक दिनोंके भीतर ही अङ्गरेज चमूके उस कोलाहल-कम्पित पलाशी शिविर हीसे विश्वासघातक मीरजाफर साहबसे मिलने गये। साहबके लशकरमें जानेके समय वह मन ही मन बहुत डरे थे। उन्होंने खयाल किया, कि युद्धके समय सहायता देनेसे आगा पीछा करनेकी वजह अङ्गरेज उनपर नाराज हो गये हैं, इसलिये उन्हें लशकरमें पाकर उनका [illegible] लगे। यह कहनेका प्रयोजन नहीं है कि पापीका यह आतङ्क, पापचिन्ताका प्रतिघात मात्र था, असलमें आशङ्का सफल नहीं हुई। मीरजाफर द्वारा सहायता मिलने या न मिलनेके सम्बन्धमें साहबके मनमें जो संशय उत्पन्न हुआ था पलाशीविजयके पहले ही वह संशय मिट गया था। इसी

लिये मीरजाफरको देखते ही साहबने प्रफुल्ल चित्तसे अति आदरके साथ अभ्यर्थना करके उन्हें अपने पास आसन प्रदान किया। दोनो ही उच्चाशासे उत्कण्ठित थे। अन्तरकी बात अन्तर्यामी ही जानें। विश्वासघातक नीचाशय मीरजाफर और परराज्यलोलुप प्रतिष्ठाकामी क्लाइवके हृदयमें कब किस भावका कैसा घात-प्रतिघात उत्थित पतित हो रहा था, उसे अन्तर्यामीके सिवा और कौन जान सकता है? ऊपरसे अवश्य ही मीरजाफरने इंटिशकी विजयके लिये सहास्य वदनसे क्लाइवका वीरत्व माहात्म्य कीर्तन किया था। क्लाइवने भी उनकी साहाय्यकारिताके लिये सहस्र बार उन्हें धन्यवाद दिया था। इस समय दोनोंमे विश्रम्भालापसे दिल खोलकर क्या क्या बातें की, कौन कौन प्रस्ताव उत्थापन और समर्थन किये उसकी अक्षराङ्कित विवृति किसी इतिहासमें नहीं है। उस शताधिक वर्षकी बीती कहानीका प्रत्यक्षस्वरूप साक्ष्य कौन देगा? फिर भी, उस अतीतकी साक्षी इस समय एकमात्र वह अनन्त-साक्षी स्वयं भगवती भागीरथी हैं। उनकी तरङ्गमाला चिर-काल ही छाती चीरकर उस शोणिताम्बर पलाशीप्राङ्गणके प्रति-बिम्बमें साधक भक्त कविको पल पलमें मानव-परिणामका एक प्रकट चित्र दिखावेंगी। वही बता सकेगी, कि मीरजाफरसे इंटिश शिविरमें क्लाइवकी क्या क्या बातें हुईं। किन्तु जन-नीके मुंहसे वह सब बातें सुननेका पुण्य हमें नहीं है, इस-लिये क्लाइव और मीरजाफरकी मुलाकातके बाद जो सब कार्य मुताखिरीन और इन्दोस्तान प्रभृति इतिहासमें वर्णित हैं,हम वही विवृत करेंगे।

क्लाइवसे मिलकर मीरजाफर पहलेकी लिखी सन्धिके अनु
सार कार्य करनेपर सम्मत हुए, और उन्होंने वृटिश फौजको
अपनी फौजमें मिला लिया। क्लाइवने उन्हें बङ्ग, बिहार और
उड़ीसेका नवाब माना। दुराशयकी दुरभिसन्धि सिद्ध हुई।

दारुण आशङ्का-मन्द्र हके ऐसे शुभ परिणति-सन्दर्शनसे
लोपमति मीरजाफरने पुनर्जीवन पाया। छावनीमें प्रवेश कर-
नेके समय जब वृटिश सैनिक समूहने सामरिक सम्मानसे उनकी
अभ्यर्थना की थी, तब भी मीरजाफरने समझा था, कि बङ्गालके
सिंहासनकी आशा वृथा है वह आशा शायद, इस अकिञ्चि
त्कर सामरिक सम्मानमें पर्य्यवसित हुई।

क्लाइवका प्रसन्नता-प्रसाद लाभ करके मीरजाफर ससैन्य
मुरशिदाबादकी ओर चले। मुरशिदाबाद पहुंचकर उन्होंने
सुना, कि नवाब सिराजुद्दौलह नगर परित्याग करके चले गये हैं।

सचमुच ही इससे पहले अभागे सिराजुद्दौलहने मुरशिदा-
बाद परित्याग कर दिया था। पलाशीमें कुचक्रियोंके चक्र
फंसे निकल सिराजुद्दौलह मुरशिदाबाद आ उपस्थित हुए।
मुरशिदाबाद पहुंचकर उन्होंने फिर बल सञ्चयका सङ्कल्प
किया था। किन्तु हाय! इस समय सिराजुद्दौलह हर तरह
सहायहीन हो गये थे। सम्पदमें अलक्ष्य धीरे धीरे पञ्चान्तकी
वृद्धि हुई थी, विपदमें आत्मीय-स्वजन बन्धु-बान्धव भृत्य, सैन्य,
और तो क्या पोष्य-पाल्य परिवारवर्गमें भी कितने ही उन्हें
छोड़कर चले गये थे। नवाबने समझा कि किस्मत बिलकुल
ही उलटी हुई है। फिर भी वह निरुत्साह नहीं हुए। फिर
भी उन्होंने स्वाधीनताका स्वत्व परित्याग नहीं किया। वह

र्तभरमें उन्होंने खजानेका दरवाजा खोल दिया। दमभरमें चारो ओर घोषणा करा दी,—"जो जहां है, वहांसे लौट आवे, एक बार विपदापन्न नवाबका मुंह देखे, किसीका यदि कुछ प्राप्य हो, कोई यदि वेतन न पानेसे असन्तुष्ट हुआ हो, तो वह लौट आवे, सभी सब पावेंगे।" घोषणाप्रचारके बाद दलके दल लोग आने लगे। कोई प्राप्य धन पानेकी आशासे लौटा, कोई पेशगी रुपये लेकर आत्म-परिवारकी रक्षाके लिये लौटा, कितने ही लोग दूसरे दावोंसे रुपये मांगनेके लिये लौटे नाना लोग नाना छलसे नाना दावे ले आ उपस्थित हुए। सारी रात खजाना आते हुए लोगोंसे परिपूर्ण रहा। 'देहि' 'देहि' शब्दका अविराम स्रोत बहने लगा। सिराजुद्दौलह मुक्तहस्त थे। कितने ही लोगोंने कितनी ही कल्पनाओंसे कितने ही तरहके दावे तय्यार कर दिये थे, उनका हक नहीं था, किन्तु कोई वञ्चित नहीं फिरा। हा दुरदृष्ट। रुपये पाकर भी जो एक बार मकान लौट गया, वह वापस न आया। नवाबका अवारित दान निष्फल हुआ। इसके उपरान्त नवाब सारे दिन अपने प्रासाद-भवनमें उत्कण्ठित चित्तसे अकेले बैठे रहे।

नवाबपुरी निर्ज्जन नीरव हो गई। ऐसा एक भी मित्र नहीं था, जो दो सान्त्वनाकी बातोंसे नवाबके उस दारुण दुःख-परीत हृदयका भार कुछ घटाता। नवाब निरुपाय हुए। जिनके कटाक्षमात्रसे कोटि कोटि लोग सञ्चालित होते थे, आज उनकी विपुल विजयन्तीपुरी सहायशून्य हुई। अब क्या करें, कहां जावें, किसके शरणापन्न हों, कौन रक्षा करेगा, यही सब थी हताश प्राणकी विषम भावना। किन्तु मुहूर्त्तभरमें

मानो एक वैद्युतिक स्पर्शसे सिराजुद्दौलहके वह सुसुप्त प्राय भाग उठे। भावनाके प्रवाहमें एकाएक अजीमाबादके फ्रान्सीसी सेनापति ल साहब उन्हें याद आ गये। शक्तिशाली ल साहबकी याद आते ही नवावने उनकी सहायता लेनेका सङ्कल्प किया। नवावने खयाल किया, कि इस विपद पारावारमें इस समय ल साहब ही एकमात्र काण्डारी हैं। सिराजुद्दौलहको विश्वास था, कि ल साहब साहसी और विश्वासी हैं, सिर्फ़ दूसरे लोगोंके बुरे चक्रमें पड़कर उन्होंने अपने पाससे उन्हें हटा दिया था। ल साहबसे सहायता पानेकी प्रत्याशासे नवावने २५ वीं जूनको सुरशिदाबाद परित्याग किया।

सिराजुद्दौलहके सुरशिदाबाद परित्याग करनेके बाद मीर जाफ़र ससैन्य वहां उपस्थित हुए थे। इसके उपरान्त मन्सूर-गञ्ज प्रासादभवन निर्विघ्न और निरापद उनके हाथ लगा। इसी समय यावतीय विश्वासघातकोंने आकर मीरजाफरका साथ दिया। सिराजुद्दौलहके युद्ध रोकनेकी आज्ञा देनेपर भी जिन्होंने युद्ध किया था, वह भी इस समय मीरजाफरके पैरोंतले आये। जो लोग अन्ततक सिराजुद्दौलहके साथ रहे, जो लोग एकसाथ उलटफेरसे मन ही मन असन्तुष्ट हुए थे वह भी निर्यातन और अत्याचारके भयसे मीरजाफरके अधीन हुए।

दुर्लभराम मीरजाफरके प्रधान मन्त्री हुए थे। उन्हींकी सहायतासे मीरजाफरने सब लोगोंको वशीभूत कर, शत्रु मित्र सबको शीशेमें उतार अपनेको सिराजुद्दौलहके सिंहासनाधिकारीके नामसे विघोषित किया। इसी समय हटिश सेनापति कर्नल साहब अन्यान्य हटिश सेनापति और सुरशिदाबादके

उच्चवंशसम्भूत सम्भ्रान्त अधिकारी और नवाब घरानेके मान नीय कर्म्मचारी निमन्त्रित किये गये थे। प्रासादके सुविशाल प्रकोष्ठके उत्तर भागमें सिराजसिंहासनके चिताभस्मके ऊपर नये नवाब मीरजाफरका नाना मणिखचित सिंहासन प्रतिष्ठित हुआ था। २६ वीं जूनको स्वयं क्लाइवने आकर बाहुयुगलसे प्रेमालिङ्गनकर मीरजाफरको सिंहासनपर बैठा दिया। * इसके उपरान्त अङ्गरेजों और अन्यान्य उपस्थित सम्भ्रान्त व्यक्तियोंने सम्मानसूचक उपहार प्रदान किये। बार बार तोपोंके गर्ज्जनसे पल पलमे विश्वासघातक मीरजाफरकी सिंहासन प्रतिष्ठाका विजयरोल विघोषित हुआ।

सिंहासनाधिकारके बाद मीरजाफरने सिराजुद्दौलहके खजानेपर अधिकार किया। खजानेपर अधिकार करनेके समय वाट्स साहब, दीवान रामचन्द्र और मुनशी नवकृष्ण उपस्थित थे। धनभाण्डारमें थे,—एक करोड़ सत्तर लाख रुपये, दो करोड तीस लाख अशरफियां, दो सन्दूक सोनेकी ईंट, चार सन्दूक जडाऊ अलङ्कार और दो सन्दूक हीरा मोती। यह हुई बाहरके खजानेकी सम्पत्ति। कहते हैं, कि महलके खजानेमे आठ करोड रुपये थे। मुताखिरीनके अनु-

---

* अरमी कहते हैं, कि क्लाइव जब मुरशिदाबादकी ओर चले, तो राय दुर्लभ, मीरन और कदमहुसेनने उनकी हत्याका सङ्कल्प किया था। क्लाइव किसी तरह यह समाचार पाकर कासिमबाजारमें ठहर गये। वहां उनका सब सन्देहभय दूर हुआ था। अरमी यह नहीं बताते कि कैसे हुआ।

वारक कहते हैं, *—मीरजाफर, अमीरबेगखां, रामचन्द्र और नवकृष्णने चुपके चुपके यह रुपये आपसमें बांट लिये थे। रामचन्द्र और नवकृष्ण लाइवके आदमी थे। वह जनान-खानेके खजानेकी बात जानते थे। उनके भेद खोल देनेकी आशङ्कासे मीरजाफरने उन्हें हिस्सा दिया।

इसी समय इष्टिश कम्पनीने सन्धिकी शर्त्तके अनुसार अपने प्राप्य रुपयेका दावा उत्थापन किया। मीरजाफरने बाहरके खजानेसे निम्नलिखित लोगोंको निम्नलिखित रूपसे अर्थ दिया था—मीरजाफरने कम्पनीको जो रुपया देनेका वादा किया था इस समय उन्होंने उसका आधा दिया। बाकी, तीन वर्षमें देनेका वादा किया। अङ्गरेजोंने जो आधे रुपये पाये, वह सात सौ सन्दूकोंमें भरे गये। यह सब सन्दूक नावपर चढ़ा दिये गये। कई अङ्गरेज अफसर दलबलके साथ आनन्द कौतूहलसे उत्फुल्ल होकर बाज बजाते, गर्व्वके साथ नावपर निशान

उड़ाते धीरे धीरे दक्षिणकी ओर कलकत्ते चले। कलकत्ता रुपये पहुंचनेसे पहले सिराजुद्दौलहके कलकत्तापर आक्रमण करनेमें जिनकी सम्पत्ति नष्ट हुई थी, वह अपना क्षतिपूरण पा चुके थे। बृटिश सिपाहियोंको इनाम दिया गया था। इसके अतिरिक्त कलकत्ता कौन्सिलके सभासदवर्गने भी कुछ पाया था। जिस समय मीरजाफरके साथ सन्धि हुई, उसी समय व्रिच नामक एक सभ्यने प्रस्ताव किया था कि सिलेक्ट कमिटी षडयन्त्रकी मन्त्री है उनका खयाल रखना पड़ेगा यानी उसे कुछ रुपये देना पड़ेगा। वह प्रस्ताव व्यर्थ नहीं हुआ। क्लाइवको मिले दो लाख अस्सी हजार रुपये। उन पलातक ड्रेकको भी मिले दो लाख अस्सी हजार रुपये। इनके अतिरिक्त सिलेक्ट कमिटीके हरेक सभ्यको मिले दो लाख चालीस हजार रुपये। काउन्सिलके जो सभ्य सभाकी सिलेक्ट कमिटीमें शरीक नहीं थे जो इस विवेचनामें कुछ भी शामिल नहीं थे वह भी दान-कल्पतरु मीरजाफरके कल्याणसे वञ्चित नहीं हुए। उनमें भी हरेकने लाख रुपये पाये। * क्लाइवने अपने मुंहसे स्वीकार किया है, कि उन्होंने इस सिंहभागके ऊपर मीरजाफरसे सोलह लाख रुपये पाये, वाट्स साहबने हिस्सेके ऊपर मीरजाफरसे अतिरिक्त आठ लाख, मेजर किलपेट्रिकने तीन लाख, वाल्सने पांच लाख और स्क्राफटनने दो लाख रुपये पाये।

---

* Beecher's Evidence before select committee of House of commons, First Report page 145,

क्लाइवको कुल मिले अट्ठारह लाख अस्सी हजार रुपये। अरकट अवरोधके समय अरकटके नवावने क्लाइवको बहुत रुपये देना चाहे थे। क्लाइवने उनसे तुच्छ तृणवत् उपेक्षा की थी। मीरजाफरसे रुपये लेनेकी वजह बादको विलायती हाकिमोंने क्लाइवसे कैफियत तलव की थी। कैफियतमें क्लाइवने स्पष्टाक्षरमें कहा,—"मीरजाफरसे रुपये लेकर मैंने कोई अन्याय नहीं किया है। इससे उनके या मेरे नियोगकर्त्ताकी कोई क्षति नहीं हुई, रुपये न लेनेसे भी हाकिमोंका कोई फायदा न हो जाता। मैंने व्यवसाय सम्बन्धी सब सुविधा सुयोग और सामरिक जीवनमें आत्मोत्सर्ग किया था, स्वदेशके सम्मान और कम्पनीके स्वार्थकी ओर दृष्टि रखकर मैंने सब कार्य्य सम्पादन किये हैं। लण्डनकी अपेक्षा मुरशिदाबाद अधिकतर सुविस्तृत नगर है इसमें बहुतरे धनाढ्य सम्भ्रान्त आदमी बसते हैं कितने ही लोगोंने मुझे अर्थादि नानाविध द्रव्य उपहार देना चाहा था किन्तु मैंने नहीं लिया। मैं यदि उसे लेता तो कितने कोटिका अधिपति होता डाइरेक्टर लोग मुझसे वह छीन न लेते। मुझे याद है, कि जब मैंने मुरशिदाबादके खजानेमें प्रवेश किया तो अपने दाहने बायें सोने रूपे मणि माणिकके ढेर लगे पाये। उन्हें देख मैंने लालच नहीं की थी।"

रुपये लेनेके अधिकारी नहीं थे कम्पनीके मालिकोंसे वह पुरस्कारकी प्रत्याशा कर सकते थे, उन्होंने स्वदेश और कम्पनीकी स्वार्थरक्षाके लिये युद्ध किया था, मीरजाफरके लिये नहीं, फिर किस वजहसे उन्होंने मीरजाफ़रसे रुपये लिये? क्लाइवने सोचा और कहा था, कि कम्पनीसे कुछ भी पानेकी सम्भावना नहीं थी। किन्तु ऐसा होनेपर भी क्या सत्यका पथ परित्याग करना चाहिये? पापको प्रश्रय देकर यदि मनुष्य सत्यका पथ परित्याग कर सकता है तो समझना पड़ेगा, कि संसारमें नैतिक संयमनका अवसान हुआ। *

अब उमिचन्द्रकी बारी आई। पापका प्रत्यक्ष फल देखिये। इससे पहले उमिचन्द्रके सर्व्वनाशके लिये क्लाइवने जो फन्दा बिछा रखा था, जो अद्भुत अस्त्र साथ रखा था उमिचन्द्रको उसकी कुछ भी खबर नहीं थी। सभीको सबका प्राप्य मिलते देख, उमिचन्द्रने अपने प्राप्यकी बात क्लाइवको सुनाई। क्लाइवने अब सफेद कागजपर लिखा असली सन्धिपत्र दिखाया। इस सन्धिपत्रपर उमिचन्द्रके प्राप्यका उल्लेख नहीं था। उमिचन्द्रने चौंककर कहा,—"यह क्या। मैंने जो सन्धिपत्र देखा था, वह लाल था।" क्लाइवने अम्लानवदनसे धीरे धीरे कहा,— "हां वह लाल था, किन्तु यह सफेद है।" उमिचन्द्र किंकर्त्तव्यविमूढ़ हुए। किन्तु जिन क्लाइवने अक्षुस चित्तसे जाली सन्धिपत्रमें वाटसन साहबके दस्तखत बनाये थे, उन्हीं क्लाइवने

---

* History of British India Vol. I. page252.

अम्लानवदनसे स्क्राफ्टन साहबकी जबानी कहलाया*,—"उमिचन्द्र! लाल सन्धिपत्र जाली था, तुम कुछ न पाओगे।" यह बात सुनते ही अभागे उमिचन्द्र मूर्च्छित हुए थे। उनके नौकर उन्हें पालकीमें डाल मकान ले गये। मकानमें वह बहुत देरतक मूर्च्छित अवस्थामें रहे। मूर्च्छासे मृत्यु तो नहीं हुई, किन्तु जीवनका अवशिष्ट समय एक तरहकी अप्रकृतिस्थ अवस्थामें अतिवाहित हुआ था। इस घटनाके डेढ़ साल बाद उनकी मृत्यु हुई।

साहबने उमिचन्द्रके साथ जो व्यवहार किया उसके सम्बन्धमें हम अधिक क्या कहें? अनेक अङ्गरेज इतिहास लेखकोंको भी लज्जासे बदन छिपाकर वह कहानी लिखना पड़ी है। जिस अपराधके लिये अङ्गरेज राजत्वमें सिर्फ निर्व्वासन नहीं, बल्कि प्राणदण्ड हुआ करता है, साहबने वही अपराध किया। किस अभियोगमें नन्दकुमारको फांसी हुई थी? यह बात याद करके उन्नशिर ब्रिटिशसन्तानका मस्तक लज्जा-घृणासे झुक जाता है। आज प्रजावत्सल ब्रिटिश शासनके शान्तिसुधाकी सहस्र धारासे क्लाइवके अन्यान्य सब कलङ्क धोये जा सकते हैं किन्तु उमिचन्द्रकी प्रतारणारूप कलङ्कका काला कूट चिह्न वंश परम्परासे ब्रिटिशसन्तानके कण्ठ कण्ठमें विराजमान रहेगा।

एक अङ्गरेज इतिहास-लेखकने लिखा है कि जिन्होंने

---

* स्क्राफ्टन साहब क्लाइवकी अपेक्षा देशी भाषा सहजमें जानते थे। इन्होंने एक समय दुभाषियेका काम किया था।

सिराजुद्दौलहके विपक्ष षड़यन्त्र किया था, उमिचन्द्रकी, अर्थ-गृध्नुताकी अपेक्षा उनकी अर्थगृध्नुता क्या कम है? उमिचन्द्रने लालची होकर भी अङ्गरेजोंका बहुत उपकार किया था। पहले उमिचन्द्रने उसका यथेष्ट परिचय भी दिया था। अङ्गरेजोंने जब चन्द्ननगरपर आक्रमण करनेका सङ्कल्प किया था, नवाब सिराजुद्दौलहने तब उमिचन्द्रसे पूछा था,—"अङ्गरेज सन्धिके अनुसार काम करेंगे?" उमिचन्द्रने इसके उत्तरमे अम्लानवदनसे कहा था,—"अङ्गरेज जगतमें बहुत बडी विश्वासी जाति कहलाते हैं झूठ बोलनेसे उनकी निन्दाकी सीमा नही रहती, वह निश्चय ही सन्धिकी मर्य्यादा रक्षा करेंगे।" उमिचन्द्रके मुंहसे यह बात सुनकर ही नवाबने अङ्गरेजोंके विरुद्ध चन्द्ननगरके फ्रान्सीसियोंको सहायता देनेसे इनकार कर दिया था। उसी हितकारी उमिचन्द्रका यह परिणाम हुआ। एकबारगी ही वञ्चित न करके कुछ भी देनेसे अभागेका वैसा भीषण परिणाम न होता।

उमिचन्द्र अर्थ-पिशाच हो वा न हो, उमिचन्द्र अङ्गरेजोंका उपकार करे वा न करे, उमिचन्द्र राजद्रोही विश्वासघातक था। उसका परिणाम और तरहसे कैसे होता? पाठक कह सकते हैं, कि उमिचन्द्रकेसे पापी संसारमें बहुतेरे हैं, फिर उमिचन्द्रकी तरह सब पापियोंको पापके साथ साथ फल भोगना क्यो नही पडता? इस बातका उत्तर हम क्या दें? किन्तु यह निश्चय है, कि शीघ्र हो वा विलम्बसे, एक वंशमें हो वा बहुवंशमें, इस लोकमें हो वा परलोकमें, पापीको पापका

फल भोगना ही पड़ेगा। उमिचन्दका चरित्र काव्य-शासन-नियोगका उच्च सुयोग-स्थल है।

इस बार पाठक! अभागे सिराजुद्दौलहके जीवन-नाटकका अन्तिम अङ्क है। मुरशिदाबाद परित्याग करनेके समय नवाबने अपनी प्यारी स्त्री लुतफुन्निसा और कई प्रिय जनको साथ ले लिया था। सभीने कई परदेकी सवारियोंमे सवार होकर रात तीन बजे मुरशिदाबाद परित्याग किया था। गाड़ीमें जितना काञ्चनमणि आ सका, सिराजुद्दौलहने वह भी ले लिया। साथमें कितने ही उनके प्रिय गृह-सज्जाके सामान थे।

नवाबने पहले राजमहल जानेका इरादा किया, किन्तु वह स्थल परित्यागकर भगवानगोले गये। * यहां वह कुछ भी विलम्ब न कर नावपर सवार हुए। जलपथसे न जाकर यदि वह स्थलपथसे जाते, तो बहुत कुछ सुविधा होती। उस समय भी जिन सब सिपाहियोंने षड्यन्त्रकारियोंका साथ नहीं दिया था उन्हें वह यदि बुलाते तो वह सब आकर उनके प्राण रक्षीक हो जाते। ऐसी व्यवस्थासे नवाब बहुदरसे बल-वान् हो सकते थे। तब कोई भी उन्हें रोकनेकी हिम्मत न करता। किन्तु आसन्न कालमें बुद्धि मारी जाती है। विधि जिसके वाम होते हैं, उसकी रक्षा कौन कर सकता है?

नवाब फ्रान्सीसी सेनापति ल साहबकी सहायताकी प्रत्याशासे पटना अजीमाबादकी ओर चले। ल साहब भी सहायता

* भगवानगोला मुरशिदाबादसे ७ कोस उत्तर-पूर्व है।

करनेके लिये प्रस्तुत हुए थ। अङ्गरेजोंने कलत्तापर जन फिर अधिकार किया था, तब ल माहवको खबर भेजी गई थी। किन्तु विधिकी विडम्बना देखिये। नबाबने उनको सहायताके लिये हुण्डी न भेजकर अजीमाबादके खजानेमें रुपये देनेके लिये हुक्म भेजा। वहां रुपये मिलनेमें बहुत देर हुई।

नवाब उनकी स्त्री, कन्या और अन्यान्य साथी तीन दिनों तक भूखे रहे। तीन दिनोंके उपरान्त राजमहलके उसपार उन सबने एक फकीरके आश्रममें आश्रय ग्रहण किया। इस फकीरका नाम था दानाशाह। कहते हैं, कि यह दानाशाह पहले सिराजुद्दौलह द्वारा लाञ्छित और ताडित हुआ था। कोई कोई इतिहास-लेखक कहते हैं, कि सिराजुद्दौलहने उसके कान कटवा लिये थे। किन्तु इतिहासमें यह नहीं लिखा है कि इतनी सजा किस बातपर दी गई। फकीर पहले नवाबको पहचान नहीं सका। उसने सोचा, कि नित्य जो सब पथिक इस राहसे आते जाते हैं, अभ्यागत अतिथि, उन्हींमें एक हैं। किन्तु नवाबका जूता देख उसे सन्देह हुआ। उसने उसी समय गावके मल्लाहसे पूछ असली बात मालूम कर ली। फकीरका हृदय प्रतिहिंसासे जल उठा।

फकीरने कोई बात न कहकर सपरिवार नवाबके आतिथ्य-सत्कारका यथायोग्य बन्दोबस्त कर दिया था। नवाबके परिवारने दारुण क्षुधा मिटानेके लिये खिचडी पकाई थी।

इसी समय फकीरने चुपके चुपके आदमी भेजकर उसपार राजमहलमें सिराजुद्दौलहके पहुंचनेकी खबर भेज दी। समाचार पाते ही मीरजाफरके दामाद मीरकासिम और मीरदा

साहबां दलबलके साथ वहां आ पहुंचे। सिराजुद्दौलह शत्रुकी फौजमें घिर गये। नवाबमहिषी लुतफुन्निसा मीरकासिमके हाथ पड़ी। मीरकासिमने डरा धमकाकर उनके कुल अलङ्कारादि ले लिये। मीरकासिमकी देखा देखी मीरदाऊदने अन्यान्य रमणियोंके अलङ्कार ले लिये। उनकी देखा देखी वहां नवाबके जो साथी उपस्थित थे उनसबने भी सिराजुद्दौलहका सर्वस्व लूट लिया। एक दिन जो लोग विपुल विक्रम नवाबके एक करुणा-कटाक्षके लालायित रहते थे एक दिन जो लोग नवाबके सामने जानेका भी साहस नहीं करते थे, आज वही लोग विपदापन्न नवाबके प्रति व्यङ्ग विद्रूपके अविरल वाण वर्षण करने लगे। नवाब निरुपाय थे। उन्होंने निरुत्साहसे निराशासे, कातर कण्ठसे कहा,— मैं अब राज साम्राज्य नहीं चाहता, मुझे कुछ माहवार दो और इस राजके चौरे बागानके एक कोनेमें रहनेको जगह दो। नवाबकी यह प्रार्थना व्यर्थ हुई। इस बातपर किसीकी छाती नहीं पसीजी—उस बातपर किसीने कर्णपात नहीं किया। नवाब सिराजुद्दौलह सपरिवार कैद हुए।

उन्होंने भागकर सिराजुद्दौलहके राज्यकी सीमा पारकर बङ्गालसे बहुत दूर पहुंच डेरा किया।

आबाल्य सुख-लालित बीस वर्षके युवा नवाबको बन्दी भिखारीके वेशमें देख मुरशिदाबादवासी व्यथित हुए थे। उनका वह पूर्व्व गौरव स्मरणकर कितनों हीने अश्रुविसर्ज्जन किया था। कितने ही निम्नपदस्थ कर्म्मचारियोंने सिराजकी वह दारुण दुर्द्दशा और वह भीषण निर्य्यातन-यातना असह्य समझ उनके छुड़ानेका इरादा किया, किन्तु उनके धनप्रलुब्ध अफसर उस समय मीरजाफरके मन्त्रसे वशीभूत हो चुके थे। उन्होंने अपने अधीन कर्म्मचारियोंको रोका। नवाबको छुटकारा मिल नहीं सका।

सिराजुद्दौलहको देखकर मीरजाफरके पाषाण हृदयमें भी दयाका सञ्चार हुआ। अलीवरदीखांकी अनुग्रह और करुणासे मीरजाफरकी सब तरहकी श्रीवृद्धि हुई थी। अलीवरदी खां सोचते, कि उनके दौहित्रपर मीरजाफर सदा सस्नेह दृष्टि रखकर और विश्वस्त भावसे कार्य्य करके उनका ऋण शोध करेंगे। उस ऋणका परिशोध हुआ,—मर्म्मभेदिनी विश्वासघातकता। मीरजाफरको देखते ही सिराजुद्दौलह भूमिपर गिरकर, सभयचित्तसे सजल नयनसे बोले—"मेरी जान बचा लो।" किन्तु दुराचार नृशंस पामर मीरनने उसी क्षण सिराजुद्दौलहको मारनेके लिये पितासे पुनः पुनः अनुरोध किया। मीरजाफरने उस समय सिराजुद्दौलहको अपने सामनेसे ले जानेका आदेश किया। किन्तु मीरनके इशारेसे उपस्थित पहरेदारोंने सिराजुद्दौलहको वहांसे ले जाकर एक मैली कोठरीमें कैद किया

और प्रत्येक मुहूर्तमें प्राणरक्षाके लिये अपेक्षा करने लगे। जो सब लोग उस समय मीरजाफरके पास उपस्थित थे सैन्-

मीरजाफर।

उन्होंने भागकर सिराजुद्दौलहके राज्यकी सीमा पारकर बजा सरसे बहुत दूर पहुंच डेरा किया।

आबाल्य सुख-लालित बीस वर्षके युवा नवाबको बन्दी भिखारीके वेशमें देख मुरशिदाबादवासी व्यथित हुए थे। उनका वह पूर्व्व गौरव स्मरणकर कितनों हीने अश्रुविसर्ज्जन किया था। कितने ही निम्नपदस्थ कर्म्मचारियोंने सिराजकी वह दारुण दुर्द्दशा और वह भीषण निर्य्यातन-यातना असह्य समझ उनके छुड़ानेका इरादा किया, किन्तु उनके धनप्रलुब्ध अफसर उस समय मीरजाफरके सम्पूर्ण वशीभूत हो चुके थे। उन्होंने अपने अधीन कर्म्मचारियोंको रोका। नवाबको छुटकारा मिल नहीं सका।

सिराजुद्दौलहको देखकर मीरजाफरके पाषाण हृदयमें भी दयाका सञ्चार हुआ। अलीवरदीखांकी अनुग्रह और करुणासे मीरजाफरकी सब तरहकी श्रीवृद्धि हुई थी। अलीवरदी खां चाहते, कि उनके दौहित्रपर मीरजाफर सदा सस्नेह दृष्टि रखकर और विश्वस्त भावसे कार्य्य करके उनका ऋण शोध करेंगे। उस ऋणका परिशोध हुआ,—मर्म्मभेदिनी विश्वासघातकता। मीरजाफरको देखते ही सिराजुद्दौलह भूमिपर गिरकर, सभयचित्तसे सजल नयनसे बोले—"मेरी जान बचा लो।" किन्तु दुराचार नृशंस पामर मीरनने उसी क्षण सिराजुद्दौलहको मारनेके लिये पितासे पुनः पुनः अनुरोध किया। मीरजाफरने उस समय सिराजुद्दौलहको अपने सामनेसे ले जानेका आदेश किया। किन्तु मीरनके इशारेसे उपस्थित पहरेदारोंने सिराजुद्दौलहको वहांसे ले जा एक मैली कोठरीमें कैद किया

और प्रत्येक मुहूर्त्तमें प्राणदण्डाज्ञाके लिये अपेक्षा करने लगे। जो सब लोग उस समय मीरजाफरके पास उपस्थित थे, मीर-

मीरजाफर।

जाफरने उनसे पूछा,—"अब क्या करना चाहिये ?" उनमें बहुतोंने सिराजुद्दौलहको कैद रखनेकी सलाह दी। इसी समय पापी मीरनने मीरजाफरसे कहा,—"आप इस समय महलमें जाइये, मैं कैदीकी यथायोग्य व्यवस्था करूंगा।"

मीरजाफर उनका मनोगत भाव समझकर उस स्थानसे चले गये। सिराजुद्दौलहको जघन्य गृहमें कैद कराकर भी मीरन निश्चिन्त रह नहीं सका। मुहूर्त्तभरमें सिराजुद्दौलहके प्राण-विनाशका सङ्कल्प हुआ। किन्तु सबके उस सङ्कल्पसे उसके किसी सहचरने सहानुभूति प्रकाश नहीं की, बल्कि कितने ही नाराज हो गये थे।

सङ्कल्प हुआ, किन्तु सिराजुद्दौलहकी हत्या करनेपर कोई राजी नहीं हुआ। मणिमण्डित मसनदपर बैठकर प्रबल प्रतापसे जिन्होंने एक दिन लम्बे चौड़े बङ्गालका शासन दण्ड परिचालित किया था, उन्ही विपन्न मलिन दीन हीन नवाबकी

मीरन।

हत्या करनेका साहस कौन करता? किन्तु इस जगतमें कब कौन दुष्कर्म्म साधनके लिये आदमीकी कमी हुई है? मुहम्मदबेग * नामक एक व्यक्तिने नृशंस मीरनकी दुरभिसन्धि कार्य्यमें परिणत करनेके लिये स्वयं सम्मति प्रकाश की। यह मुहम्मदखां पहले सिराजुद्दौलहके घर पाला गया था। इसके

* इसका दूसरा नाम लालमुहम्मद था। यह मीरनका प्रियपात्र था।

उपरान्त अलीवरदीकी स्त्रीने, स्वयं इसके प्रतिपालनका भार ग्रहण किया था, मुहम्मदने एक अनाथिनी कुमारीके साथ विवाह किया था। अलीवरदीकी स्त्री उसे भी बड़े यत्नके साथ नाना शिक्षा प्रदान किया करतीं। इसी कृतघ्न पापी मुहम्मदखांने अपने ऊपर सिराजुद्दौलहके प्राण विनाशका भार लिया।

दो तीन घण्टोंके बाद मुहम्मदबेग सिराजुद्दौलहको काटनेके लिये तेज तलवार हाथमें ले उनके वन्दिगृहमें गया। उसे देखते ही सिराजुद्दौलहने पूछा,—"तुम क्या मुझे काटने आये हो?" मृत्यु-विभीषिकाके विकट नादसे उत्तर मिला "हां। नवाब समझ गये, कि उनकी परमायुका अन्त हुआ। समझ गये, कि इस जगतका सब भोग पूरा हुआ। मरणकालमें पवित्र चित्तसे एक बार भगवानसे प्रार्थना करनेकी प्रत्याशासे उन्होंने हाथपैरकी जञ्जीरें खोलनेकी अनुमतिकी प्रार्थना की, अनुमति नहीं मिली। प्याससे कण्ठ शुष्क था, कातर कण्ठसे जल मांगा, वह भी नहीं मिला। तब उन्होंने एक बार भूमिपर शिर रगड़कर कहा,—"दयामय भगवन्! अपराध क्षमा करो, पूर्व्वकृत पापका प्रायश्चित्त हो, मुझे क्षमा करो।"

इस प्रकार तृषित कण्ठसे, लपटी हुई जिह्वासे, कातर वाक्यसे भगवानकी करुणा भिक्षा मांग सिराजुद्दौलहने और एक बार उस अन्नदास निर्म्मम मुहम्मदबेगकी ओर निराशनिर्निमेष कटाक्षसे दृष्टिक्षेपकर कहा,—"तब वह लोग,—तब वह लोग मुझे बङ्गालकी एक बगलमें एक बिन्दु भी स्थान न देंगे—मुझे थोड़ा भी सुशाहरा न देंगे,—इसपर भी वह राजी

नहीं है।" यह बात कहकर सिराजुद्दौलह थोड़ा चुप हुए। फिर मुहूर्त्तभरमें न जाने क्या स्मरणकर चौंककर बोले—"नहीं —वह इसपर भी राजी नहीं है,—मैं अवश्य मरूंगा—हुसेन कुलीखांकी हत्याका प्रायश्चित्त होगा।" और कुछ कहनेका अवसर न मिला। देखते देखते एकाएक नराधम महम्मदकी वह तेज तलवार सिराजुद्दौलहकी गरदनपर पड़ी। जिस समय तलवारका वह मृदारुण नाड़ातिक आघात सिराजुद्दौलहकी उस सुन्दर गरदनपर आकर गिरा, उस समय सिराजुद्दौलह घन गंभीर नाभिश्वाससे,—'ठीक है,—मैं—मरा—कुली खांकी—हत्याका—बदला चुका—यह बात कहते कहते भूमिपर लोट गये। मुहूर्त्तभरमें प्राण वायु निकल गई।

इसके बाद मुहम्मदबेगने मृत नवाबकी देह टुकड़े टुकड़े काट एक हाथीकी पीठपर लदवाया। फीलवान उस हाथीको लिये लिये शहरकी चारो ओर फिरा। सुनते हैं, कि किसी तरहका नियोग-निर्द्देश न रहनेपर भी हाथी एकाएक हुसेनकुलीखांके मकानके सामने जा खड़ा हुआ। जिस जगह कुलीखां मारे गये थे ठीक उसी जगह सिराजुद्दौलहकी खण्डित देहसे कई बूंद खून टपका था। नगरप्रदक्षिणकालमें हाथी, जब सिराजुद्दौलहकी माता अमीनाबेगमके मकानके सामने पहुंचा, तो घोरतर शोकमय कोलाहल उत्थित हुआ। इधर इतने काण्ड हो गये थे, प्राणके पुतले सर्व्वस्व धन सिराजुद्दौलहके लिये चले गये थे किन्तु अभागी अमीना बेगमको कुछ भी खबर नहीं थी। उन्होंने फाटकपर शोर सुनकर पूछा,— "यह काहेका शोर है? प्रकृत उत्तर पाते ही हतभागिनी

अन्तःपुरवासिनी असीना बेगम दिग्विदिग-ज्ञान शून्या हो, लज्जा शर्म्म परित्यागकर, उन्मादिनी वेशमे, खुले हुए केशमें, नङ्गे पैर ऊर्द्ध्वश्वासमे दौड महलसे बाहर निकल आईं। कितनी ही लौंडियां बांदियां भी उनके साथ निकल आईं। हाथीपर प्यारे पुत्रकी लाशके टुकड़े देख, अभागी बेगम जमीनपर गिरकर छाती पीट पीटकर उच्चस्वरसे क्रन्दन करने लगी। उनका वह उन्मत्त शोकभाव देख उपस्थित दर्शक भी हाहाकार रवसे क्रन्दन कर उठे। उस समयका वह शोकोच्छ्वास,—वह शोक-दृश्य वर्णनातीत है। फीलवान भी उस दृश्यसे अश्रु संवरण कर नहीं सका। उसके इशारेसे हो या और किसी कारणसे हो, हाथी भी मुहूर्त्तभरमे बैठ गया। उपस्थित दर्शकगण हाथीको घेरकर खड़े हो गये। अभागी असीना बेगम भी विद्युद्वेगसे दौड़ जाकर, पुत्रके खण्डित मांसपिण्डपर गिरकर, विकृत वदनमण्डल बार बार चूमने लगी। इसी समय मीरजाफरके अनुगत सहचर खादिमहुसैनखां अपने महलकी छतपर खड़े होकर सतृष्ण नयनसे सिराजुद्दौलहकी कटी कुटी लाश देख रहे थे। उपस्थित लोगोंको अधीर होते देख, अनर्थ और उत्तेजनाकी आशङ्कासे, उन्होंने उसी समय कितने ही आदमी भेज दिये। यह सब आदमी असीना बेगम और उनकी लौंडी बांदियोंको बलपूर्व्वक उठाकर महलके भीतर ले गये।

पाठक। अभागे नवाब-जीवनका शोचनीय परिणाम देख लिया अब एक बार इस ओर देखिये,—विश्वासघातक मीरजाफरकी ओर एक बार देखिये। वह इस समय विलास-

कक्षमें दुग्धफेननिभ सुकोमल शय्यापर पड़े घोर निद्राके अभिभूत थे। मुताखिरीनके मतसे सिराजुद्दौला जब मुर्शिदाबादसे

एडमिरल वाटसन।

वापस लाये गये उस समय मीरजाफर सो रहे थे। सोनेसे पहले उन्होंने द्विगुण मात्रासे भङ्ग पी थी। भङ्ग भी दूनी मात्रासे रङ्ग दिखा रही थी। मीरजाफर मृतवत् निद्रित थे। उन्हें जगाकर सिराजुद्दौलहके आनेकी खबर देनेकी हिम्मत किसीकी नहीं पड़ी। मीरजाफर जब जागे तो उन्होंने मीरनको कहला भेजा "बेटा। शत्रुपर तेज निगाह रखना।" मीरनने हंसकर जवाबमें कहलाया,— अब्बाजान। मैं बहुत खबरदार ।" दुरात्माने उपस्थित लोगोंको सम्बोधनकर कुछ व्यङ्गके साथ

कहा था,—"अब्बा भी तुहफा आदमी हैं। अलीवर्दीखांके नातीकी चौकसी मैं न करूंगा ?"

सिराजुद्दौलहके हत्याभिनयमें अङ्गरेजोंकी ओरसे किसी तरहका इङ्गिताभास नहीं था। मेकाले कहते हैं,—"सिराजुद्दौलह महाशत्रु था सही, किन्तु अङ्गरेज उसकी जान लेना नहीं चाहते थे, यह बात जानकर मीरजाफरने अङ्गरेजोंसे माफी मांगी थी।" मेकालेकी यह वेमांगी कैफियत सन्देहोत्तेजक हो सकती है, किन्तु असलमें किसी इतिहासमें वह इङ्गिताभास नहीं है। अङ्गरेजोंने सिराजुद्दौलहके हत्याभिनयमें कोई अंश न लेकर क्लाइव-कलङ्ककी एक कलङ्ककालिमाकी रेखा घटाई है सही किन्तु क्लाइवका कलङ्क अप्रक्षालनीय है। जो क्लाइव जाल कर सकते हैं, वह नरहत्यामें सहायता भी कर सकते है। लोगोंके मनमें ऐसा सन्देह होनेके खयाल हीसे शायद मेकालेने आनन फानन एक कैफियत तय्यार कर दी है। जो हो, सिराजकी हत्याके सम्बन्धमें क्लाइवको कलङ्क-शून्य बताकर भी वह उन्हें जालके कलङ्कसे बचा नहीं सके हैं। क्लाइव चिरकलङ्की रहे। फिर भी, मेकालेने सिराजका जो भीषण चरित्र चित्र अङ्कित किया है, उससे क्लाइवका कलङ्क बहुत कुछ घट जाता है, किन्तु पाठकगण शायद अब समझ गये होंगे, कि असलमे सिराजुद्दौलह मेकाले-वर्णित नारकीय नर पिशाच नहीं है। क्लाइवकी अपेक्षा सिराजका चरित्र ऊंचा था। हमारी बात नहीं है, अङ्गरेज इतिहास-लेखक मालिसन साहबने कहा है,—"सिराजुद्दौलहमें जितने दोष हों, वह राजद्रोही नहीं थे, उन्होंने स्वदेशकी स्वाधीनता नहीं बेची थी।

१५ वी फरवरीसे २३ वो जूनतक जो सब घटनायें हुईं उनकी आलोचना करनेसे निरपेक्ष अङ्गरेजमात्रको स्वीकार करना पड़ेगा, कि क्लाइवकी अपेक्षा सिराजकी "आत्ममर्य्यादा बहुत ज्यादा थी। *

सेनापति मोहनलाल।

* Whatever may have been his faults, Siraj-ud daulah had neither betrayed his master nor sold his country—nay more, no unbiased Englishman, sitting in judgment on the events which passed in the

सिराजुद्दौलहका सब चुक गया। हमारे पलाशीकी लड़ाईका भी उपसंहार हुआ। उपसंहारमें वीर मोहनलालका परिणाम-परिचय देते हैं। सिराजुद्दौलह जिस समय कैद हुए, मोहनलाल भी उसी समय कैद किये जाकर मुरशिदाबादसे ढाके भेजे गये। दुर्लभरामने मोहनलालकी विपुल सम्पत्ति ले ली थी। मुताखिरीन-प्रणेता गुलामहुसेन कहते हैं, कि सम्भवतः मोहनलाल सम्पत्ति रक्षा करनेमें मारे गये।*

और एक बात कह रखते हैं। पापात्मा मीरनने घसीटी बेगम और अमीनाबेगमको नदीमें डुबाकर मार डाला था। बेगमोंने मरनेके समय अभिशाप दिया था, कि तुझपर वज्र गिरे। ऐसा ही हुआ।†

---

interval between the 9th February and the 23rd June, can deny that the name of Sirajud-daulah stands higher in the scale of honour than does the name of Clive Decisive Battles of India.

* कोई कोई कहते हैं, कि मीरजाफरकी आज्ञासे मोहनलाल मारे गये। कोई कोई कहते हैं, कि कैदी मोहनलालसे उत्पातकी आशङ्का कर दुर्लभरामने उन्हे जहर दिलवा दिया।

† मुताखिरीनमें लिखा है, कि मीरनने घसीटीबेगम और अमीनाबेगमको हत्या की थी। और भी कितनी होंको मारना चाहता था। किन्तु मार न सका। यह भी कहते है, कि मीरनके आदेशसे सिराजुद्दौलहका भतीजा मारा गया। वानसिटार्ट कहते हैं कि घसीटीबेगम अमीनाबेगम सिराज-म

बहुत इतिहास मथकर हमने सिराजुद्दौलहकी प्रकृति चरित्रकी शुष्क छायामात्र नीरस भाषामें प्रकटित की है। काव्य-रस सञ्चारसे उस चरित्रका सम्यक प्रस्फुटन करना हमारे लिये साध्यातीत है।

हिषी लुतफुन्निसा उनकी कन्या और ७० स्त्रियोंको मीरनने डुबा कर मारा था। सन् १७६५ ई० की १ली अक्तोबरको बङ्गाल सरकारने कोर्ट आफ डाइरेक्टरको जो चिट्ठी लिखी थी, उससे जान पड़ता है, कि घसीटीबेगम और अमीनाबेगम मारी गई थीं। और कितनी ही स्त्रियां कैद की गई थी। बादको वह सब छोड़ दी गई थी।

परिशिष्ट।

चिट्ठी-पत्री।

(हिन्दी भाषानुवाद।)

एडमिरल वाटसनका पत्र।

१७वीं दिसम्बर सन १७५६ ई०।

पृथिवीके राजन्यवर्ग द्वारा सम्मानित हमारे प्रभु और राजाने इष्ट इण्डिया कम्पनीके व्यवसाय-वाणिज्य दावे और अधिकार रक्षाके लिये बहुतसी फौज साथ देकर मुझे इस देशमे भेजा है। यह कहनेका प्रयोजन नहीं है, कि मेरे प्रभुकी प्रजा मुगल राज्यमें जिस तरह सुविस्तृत व्यवसाय वाणिज्य चलाती थी, उससे मुगलोको सविशेष सुविधा होती थी। यह सुनकर अतिशय आश्चर्य हुआ, कि आपने बहुतसी फौजके साथ कम्पनीकी कोठियोंपर आक्रमण करके बलपूर्व्वक उनके आदमियोको भगा दिया है, बहुतसे रुपये माल सामान लूट लिये हैं और हमारे राजाकी बहुतसी प्रजा नष्ट कर दी है।

मैं कम्पनीके लोगोकी कोठियां फिरसे बनवाने और उनकी मरम्मत करानेके सङ्कल्पसे आया हूं। आशा करता हूं, कि

आप उनकी पहली क्षमता और सुविधा कायम रखनेपर राजी होंगे। कारण, अङ्गरेजोंके इस देशमें रहने करनेसे आपका जो उपकार है, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं। आप यदि उनका क्षतिपूरण कर देंगे तो कोई झगड़ा बाकी रह न जावेगा। हमारे राजा शान्ति चाहते हैं। न्यायपरतामें उनकी प्रीति है। आप यदि उनके प्रजासमूहकी क्षति पूरण कर देंगे, तो आपके और उनके बीच सद्भाव संस्थापित होगा।

नवाब सिराजुद्दौलहका पत्र।

२३वीं जनवरी सन् १७५७ ई०।

आपने अपने पत्रमें लिखा है कि अङ्गरेज सौदागरोंके वाणिज्य, अधिकार, कोठी प्रभृतिकी रक्षाके लिये आपके प्रभुने आपको भारत भेजा है। यह पत्र पाते ही मैंने आपको उसका उत्तर भेजा है, किन्तु जान पड़ता है, कि वह आपको नहीं मिला। इससे मैं आपको फिर चिट्ठी लिखता हूं। कम्पनीके बङ्गदेशस्थ प्रधान कर्म्मचारी राजर ड्रेकने मेरी आज्ञाकी अवहेला की थी, बल्कि मेरे राज्यपर आक्रमण किया था। जो सब लोग दरबारमें अनुपस्थित थे, उन्हें उन्होंने आश्रय दिया था। मैंने उन्हें यह काम करनेसे मना किया, किन्तु इसका कोई फल नहीं हुआ। इसीलिये शास्ति देनेके अभिप्रायसे मैंने उन्हें देशसे निकाल दिया। मेरा ऐसा अभिप्राय था, कि यदि वह पदच्युत किये जावें और कोई दूसरा आदमी प्रधान कर्म्मचारी नियुक्त किया जावे, तो अङ्गरेज

वणिकगणको पहलेकी तरह इस देशमे वाणिज्यादि करने दूंगा। यदि अङ्गरेज लोग वणिकोंकी तरह व्यवहार करेंगे और मेरी आज्ञा पालन करेंगे, तो मैं उनके वाणिज्यकी सुविधा करता रहूंगा।

और यदि आप लोग मुझसे लड़कर यहां अपना वाणिज्य चलाना चाहते हों तो आप लोगोंकी समझमें जो भला जान पड़े, वह कीजिये।

धनकुबेर भुवन-विजेता, हिन्दुस्थानके सम्राट आलमगीरके दास साहसी और विख्यात योद्धा, सा कुलीखां।

एडमिरलका पत्र।

७वीं जनवरी सन् १७५७ ई०।

आपका इस महीनेकी २३वीं तारीखका पत्र पाकर मैं परम प्रसन्न हुआ हूं। कारण, पत्र पढ़कर जान सका हूं, कि आपने मेरे पहले पत्रका उत्तर दिया है। बड़े आनन्दकी बात है कि आपने अपने हाथसे पत्र लिखा है, किन्तु आप यदि पत्रका उत्तर न देते, तो मेरा बड़ा अपमान होता। वह अपमान अग्राह्य करके निश्चिन्त रहनेसे मुझे अपने स्वदेशीय राजाकी कोपदृष्टिमें पड़ना पड़ता।

द्वारा उन्हें किसी विषयका तथ्य जानने नहीं देते। एकके दोषसे सबको दण्ड देना कभी राजोचित कर्म्म नहीं है। जो सब प्रजा मनदपर निर्भर होकर निश्चिन्त थी उसे धन-प्राणसे मारना कभी उचित नहीं था। यह क्या राजोचित कार्य्य हुआ है? कभी नहीं। शठ लोगोंने अपने स्वार्थसाधनके लिये आपको इस कार्य्यमें प्रवर्त्त कराया है। न्यायवान् राजा निष्ठुर कार्य्यसे कभी आनन्द उपभोग नहीं करते।

यदि आप जगतके सामने न्यायवान और महत् राजाके नामसे ख्याति लाभ करनेकी इच्छा करते हैं, तो इन सब कुमरा मर्शदाता लोगोंको शास्ति देकर यह प्रमाणित कीजिये, कि आपकी अनिच्छासे हमारा अनिष्टपात हुआ है। और अङ्गरेज वणिकदलको और जिन जिन लोगोंको इन सब कामोंमें क्षतिग्रस्त होना पड़ा है उनका क्षतिपूरण कर दीजिये। ऐसा करनेसे आपके प्रजासमूहके शिरपर जो तलवार खिंच चुकी है, वह निवारित होगी।

ड्रेक साहबके विरुद्ध आपका यदि कुछ वक्तव्य हो, तो उसे वणिक-सम्प्रदायको लिख भेजें। कारण, प्रभुके सिवा भृत्यका शासन करनेमें और कोई सक्षम नहीं है। मैं इसका जिम्मा लेता हूं कि वणिक सम्प्रदाय इसमें आपको सन्तोष प्रदान करेगा।

आप अपने इच्छानुसार न्याय विचार करके हमारा क्षति-पूरण करेंगे। जोर जबरदस्तीसे अपनी निरीह प्रजाको विपन्न करके क्षतिपूरण करना प्रार्थनीय नहीं है।

नवावका पत्र।

आपने हुगलीपर आक्रमणकर और उसे लूट मेरी प्रजासे युद्ध किया है। यह आपका वणिकोचित कार्य्य नहीं हुआ है। इसके लिये मैं मुरशिदावाद परित्याग करके हुगली आ पहुंचा हूं और ससैन्य नदी पार करनेका उपक्रम कर रहा हूं। मेरी फौजका एक टुकड़ा आपकी छावनीकी ओर बढ़ रहा है। फिर भी, यदि पहलेकी तरह आपकी वाणिज्य चलानेकी इच्छा हो, तो आपको अपना एक विश्वस्त आदमी मेरे पास भेजना पड़ेगा। ऐसा होनेसे उससे आपके प्रार्थित विषय समझ जानकर मैं इस विषयकी एक मीमांसा कर सकूंगा। मैं वणिक सम्प्रदायकी कोठियोंकी पुनःप्राप्तिमें और पहलेकी तरह वाणिज्य चलानेके इखतियार देनेमें किसी तरहका एतराज न करूंगा। जो सब वणिक इस देशमें वास करें, वह सब वणिकोंकासा व्यवहार करें और मेरे मतका विरुद्धाचरण न करें तो मैं अवश्य ही उनका क्षतिपूरण कर दूंगा। आप जानते हैं, कि युद्धके समय सिपाहियोंको लूट-मारसे बाज रखना कितना कठिन कार्य्य है।

दोषारोप कर न सकेंगे। ऐसे ध्वंसकारी युद्धसे बचानेके लिये ही आपको यह पत्र लिखता हूं।

एडमिरलका पत्र ।

६ ठी फरवरी सन् १७५७ ई० ।

आप इस पत्रके साथ ही और एक पत्र पावेंगे, वह परसोंका लिखा हुआ है। * किन्तु वह आपके पास भेजे जानेके

---

* पत्रका मर्म्म इस प्रकार है,—मैंने आपके पत्रका जवाब देनेके बाद परसों आपका पत्र पाया। अभी पत्रका जवाब लिखने बैठा हूं। सुना है, कि आपके कितने ही सिपाही कलकत्ता नगरमें आ गये हैं और बाकी शीघ्रतापूर्व्वक छावनीकी ओर अग्रसर हो रहे हैं। सुनते ही मैंने नगरकी ओर आंख उठाकर देखा, तो सर्व्वत्र अग्निशिखा और धूमराशिसे नगर परिपूर्ण दिखाई दिया। समझ गया, कि घटना सत्य है। वह सब देखकर जान पड़ा कि शान्तिकी आशा वृथा है, साथ साथ पत्र लिखनेकी इच्छा भी छोड़ दी। सुना है कि आपने करनल क्लाइवसे फिर सन्धिका प्रस्ताव किया है। इसीलिये मिष्टर वाल्स और स्क्राफटन नामक दो व्यक्तियोंको करनल क्लाइवने आपके पास भेजा है। यह आपकी शान्तिकामनाका परिचायक है। मेरा अपना मत यदि सुनना चाहते हैं, तो मेरी पहली चिट्ठियोंको देखकर समझ सकेंगे, कि मैं उन सब चिट्ठियोंमें सौहार्द्दसूचक बातें कहता आता हूं और उसीके

लिये अभी फारसी भाषामे अनुवादित नहीं हुआ था, कि मैंने आश्चर्यसे सुना कि आपने उनके दूतोंकी बेइज्जती की है और आप कलकत्तेकी सीमाके भीतर आ गये हैं और वहांसे लौटने-पर राजी नही हैं।

अनुसार मैंने कार्य्य भी किया है। किन्तु जब मैंने देखा, कि अब शान्ति असम्भव है जब देखा, कि मेरे एक पत्रका भी जवाब नही आया, तो लाचार होकर विरुद्धाचरणपर बाध्य हुआ। मैं ऐसे शत्रुताचरणका विरोधी हूं। युद्धमे जयी होनेपर भी मैंने शान्ति प्रत्याशासे अपेक्षा की थी। मेरी इस समय भी सन्धिस्थापनकी इच्छा है, किन्तु नहीं जानता कि कहांतक सफल होगी। मैं, क्या ईश्वर क्या मनुष्य दोनो हीके सामने निर्दोष रहना चाहता हूं। मैं मनुष्यका सुख चाहता हूं, कष्ट देख नहीं सकता, यही प्रकाश करनेके लिये मैंने यह पत्र लिखा है। यदि आपकी सन्धिस्थापनकी इच्छा हो, तो आपके पास भेजे गये इन भलेआदमियोकी बात सुन लेने हीसे सब काम बन जायेगा। वह लोग न्याय विचारके सिवा और कुछ नही चाहते। दोनो जातियोंका शुभसाधन ही उनका मुख्य उद्देश्य है। यदि आपके अमतका कोई कारण हो, तो स्मरण रखें, कि राजा मनुष्यके मङ्गलसाधनके लिये ही मानव-श्रेष्ठ हुए हैं वह लोग यदि द्वेष हिंसा परायण होकर कर्त्तव्यपरायण होंगे तो उन्हें एक दिन जगत्पिता सर्व्वशक्तिमानको जवाब देना पड़ेगा। मैं आपका मित्र हूं। सदुपदेश देना मेरा कर्त्तव्य है। इसीके अनुसार कार्य्य भी किया।

आपके अभिप्रायका ऐसा निदर्शन प्रमाण पाकर मेरी सन्धि संस्थापनकी इच्छा बलवती रहनेपर भी, मैं इस समय उसकी आशा कर नहीं सकता। सब अङ्गरेजी फौज कैसा बलधारण करती है, उसे आपको दिखानेके लिये मैंने करनल क्लाइवसे अनुरोध किया। कारण ऐसा होनेसे उत्तर प्रतिज्ञा स्वरूपमें आबद्ध होनेसे पहले आप सावधान हो जायगे। उन्होंने मेरे इच्छानुरूप कार्य्य किया और सैन्य आपकी छावनीके बीचसे इस तरह चलकर अपनी छावनीमें लौट आये, कि उनकी राह रोकनेवाला आपकी छावनीमें मानो एक भी सशस्त्र पुरुष नहीं था। वह अपनी छावनीमें लौट आये हैं और इस आशासे और कुछ दिनों ठहरेंगे कि आप हमारी गुप्त समिति द्वारा अन्तिम बार प्रेरित न्याय्य प्रस्तावसे सम्मत होते हैं या नहीं। आप यदि सुविचारक हैं, तो इसका सुविचार करेंगे नहीं तो जिस तलवारके निकलनेका उपक्रम हुआ है, वह फिर निवारित न होगी।

नवाबका पत्र।

६वीं फरवरी १७५७ ई०।

शासनकर्त्ता और उनकी सभाका स्वाक्षरित और मुहरा-ङ्कित सन्धिपत्र मैंने करनलके पत्रके साथ पाया है। उन्होंने इच्छा की है, कि इस समय जो सन्धि स्थापित हुई है, उसकी सब शर्त्तें हमारे देशके प्रधान लोगों द्वारा और हमारे प्रधान प्रधान कर्म्मचारीयों द्वारा स्वीकृत हों। मैंने उनके इच्छानुरूप

कार्य्य किया है। इस समय हम दोनोंके बीच ऐसी लिखा पढ़ी हो जाना चाहिये, जिससे हम लोगोंके बीच युद्ध न हो, अङ्गरेज हमारे चिरमित्र हों और हमें शत्रु दमनमें वह सहायता दें। इसके लिये मैं अपना एक विश्वस्त और विख्यात आदमी आपके पास भेजता हूं। वह मेरे मनका भाव आपको अच्छी तरह समझा सकेंगे और मैं आशा करता हूं कि आप अपने मनका भाव उनके सामने खोलकर कहेंगे। जो सब प्रस्ताव मेरे पास स्वाचरित होनेके लिये भजे गये थे, उन्हें मैं स्वयं सम्राट्के दीवान द्वारा, अपने दीवान द्वारा और अपनी फौजके बखशी द्वारा स्वाचर कराकर भेजता हूं। आप यदि एक कागजपर यह सन्धि-पत्र स्वीकार करके अपनी मुहर और दस्तखतके साथ मेरे पास भेज दें, तो मैं अत्यन्त आह्लादित होऊंगा। मैंने यथाविहितरूपसे ईश्वर और उनके दूतको साक्ष्य मानकर अङ्गरेजोंसे यह सन्धि-संस्थापन की है। जितने दिनोंतक मेरी देहमें प्राण रहेगा, उतने दिनोंतक मैं अङ्गरेजोंके शत्रुको अपना शत्रु समझूंगा और आवश्यक होनेपर यथासाध्य सहायता करूंगा। आप, करनल और अङ्गरेजोंकी कोठीके अन्यान्य प्रधान कर्म्मचारी ईश्वरके सामने शपथ कर, कि आप इसी सन्धिके अनुसार कार्य्य करेंगे, मेरे शत्रुको अपना शत्रु समझेंगे और प्रयोजन होनेपर यथासाध्य आप मुझे सहायता देंगे। और अगर आप लोग स्वयं आकर मुझे सहायता न दे सकें तो भी मैं आशा कर सकूं, कि आवश्यक

दूत साक्षी हैं, कि मैं अङ्गरेजोंसे जिस सन्धि-सूत्रमें आबद्ध हुआ हूं, उसे कभी भङ्ग नहीं करूंगा। आप लोग इसी सन्धिके अनुसार कार्य करेंगे। इसी विश्वासपर मैं आप लोगोंके रक्षणावेक्षणका यत्न करूंगा।

— —

एडमिरलका पत्र।

रङ्गलारायकी मारफत आपने मुझे जो पत्र भेजा वह मिला और उससे यह जानकर कि आप मेरी जातिसे मित्रता स्थापन करना चाहते हैं मैं अत्यन्त आह्लादित हुआ। उनकी मारफत यह जो पत्र भेजता हूं उनके पानेसे पहले आप भी उनसे हम लोगोंका अभिप्राय जान सकेंगे। आपकी तरह हम लोगोंकी भी यही इच्छा है कि हम लोग आपके साथ सद्भावसे रहें और आप भी उनसे जान सकेंगे कि किस तरह बुरे लोगोंने झूठ ही आपसे अङ्गरेज जातिको लोभी और कलहप्रिय बताया है। किन्तु आप हम लोगोंसे कुछ दिनोंतक व्यवहार करते ही इस बातका सत्यासत्य जान सकेंगे। क्षत्या चारित न होनेसे अङ्गरेज किसीका भी अनिष्ट नहीं करते। अङ्गरेज जातिकीसी शान्तिप्रिय जाति शायद पृथिवीमें और नहीं है, किन्तु अङ्गरेजोंकी क्षति होनेसे अङ्गरेज क्षणभर भी विलम्ब न कर तलवार निकालते हैं। इस सम्बन्धमें भी अङ्ग रेजोंकी तुलना नहीं है।

मुझे सन्धि सम्बन्धमें लिखापढ़ी करके आपने जो एक कागज भेजनेका अनुरोध किया है, उसे मैं भेजता हूं। यह

आपके इच्छानुसार लिखा गया है और स्वहस्तसे स्वाचरित और मुहराङ्कित किया गया है। जिसे हम दोनों पूजते हैं उन्हीं ईश्वरको साक्ष्य करके मैं कहता हूं, कि आप यदि आजीवन अपने अङ्गीकारके अनुसार चलेंगे, तो मैं भी अङ्गरेज जाति हूं आपसे जो सन्धि की है उसकी रक्षाके लिये आजन्म चेष्टा करूंगा। यदि न करूं तो ईश्वर मुझे सजा दें। और अधिक क्या लिखूं? मैं कायमनोवाक्यसे प्रार्थनामें करता हूं, कि आप दीर्घजीवन और प्रभूत सम्पद लाभ करें।

मैं चार्ल्स वाटसन ईश्वर और यीशुख्रष्टको प्रत्यक्ष जानकर ब्रटिश सम्राट्की ओरसे शपथ करता हूं, कि सन् १७५७ ई० के फरवरी महीनेकी ९वीं तारीखको सूबेदारके साथ अङ्गरेजोंने जो सन्धि की है, उसकी मैं प्रत्यक्ष शर्त मानकर चलूंगा और जबतक सूबेदार अपनी बातके अनुसार कार्य्य करेंगे और इस सन्धिकी शर्त्त मानकर चलेंगे तबतक मैं उनके शत्रुको अपना शत्रु समझूंगा और आवश्यक होनेपर साध्यमत से उनकी सहायता करूंगा।

एडमिरलका पत्र।

१९वीं फरवरी सन् १७५७ ई०।

इमिचन्दद्वारा आपने जो सब बातें कहला भेजी हैं उन्होंने मुझसे वह सब कही। क्योंकि कर्णेलाधीन एक फ्रान्सीसी सेना फौज और बहुत बड़ी एक स्थल फौज आनेकी जो बात आपने सुनी है, वह मेरे खयालसे सत्य है। मैंने यह खबर भी पाई है कि वह यहां मेरे साथ टक्करनी

नीयतसे आ रहे हैं। उनका आना रोकनेकी आपने जो इच्छा प्रकाश की है, उस विषयमें आप निश्चिन्त रहें। मैं इसका यत्न करनेमें कोई त्रुटि न करूंगा। और आप जभी ऐसे विषयमें हम लोगोंसे अनुरोध करेंगे तभी हम लोग उसको आनन्दके साथ प्रतिपालन करेंगे। इसीसे आप जान सकेंगे, कि हम लोग आपके पक्के मित्र हैं या नहीं। जो आपकी कोपदृष्टिमें पड़कर एकबार ध्वंसप्राय हुआ था, वह आपकी शुभदृष्टिमें फिर वर्द्धित होगा। लाट साहबकी ओरसे वाट साहब आपके पास भेजे जाते हैं। मैं आशा करता हूं, कि वह जो सब विषय पेश करेंगे, उन्हें पूर्ण करनेमे आप कुण्ठित न होंगे।

नवाबकी चिट्ठी ।

१६ वीं फरवरी सन् १७५७ ई० ।

देशमे झगड़ा फसाद मिटानेके लिये ही मैंने अङ्गरेजोंके साथ यह सन्धि की है, कि वह व्यवसाय वाणिज्य पहलेकी तरह चलावें। आपने वह सन्धिपत्र स्वाक्षर किया है और आपने भी उस विषयमे एक लिखापढ़ी की है। किन्तु इस समय जान पड़ता है, कि हुगलीके सन्निकटस्थ फ्रान्सीसियोंकी कोठी लूटने और उनसे युद्ध करनेका आपका अभिप्राय है। देशमें आपसमें दो दलका फसाद करना सर्व्वनीतिविरुद्ध है। तैमूरके समयसे अबतक किसीने यह नहीं सुना कि युरोपवासी आपसमे लड़ झगड़े हैं। आप यदि फ्रान्सीसियोंकी कोठी लूटना

चाहते हैं, तो मुझे अपने प्रभुकी ओरसे सैन्य द्वारा उनकी सहायता करना होगी। हालमें जो सन्धि की गई है, आप उसे भङ्ग करनेपर उद्यत हुए हैं। एक समय महाराष्ट्रोंने इस देशपर आक्रमण किया था और बहुत दिनोंतक युद्ध चलाया था, किन्तु उनके साथ सन्धि स्थापित हो जानेपर उन्होंने कभी उसे भङ्ग नहीं की। अकपट भावसे जो सन्धि हुई है, उसे भङ्ग करना अतिशय गर्हित और अन्याय है। आपने सन्धिपत्रमें जो बातें मञ्जूर की हैं उन्हें आपको मानकर चलना उचित है और देशमें फसाद न पैदा होने देना उचित है और मैं भी अवश्य ही अपनी मञ्जूर की हुई बातोंके अनुसार कार्य करूंगा। मैं अपनी ओरसे कहता हूं, कि मैंने अङ्गरेजोंके साथ जो सन्धि की है, उसे प्रतिपालनकी साध्य मत चेष्टा करूंगा और मैं आशा करता हूं, कि ईश्वरानुकम्पासे शायद उसे चिरकालतक कायम रखूंगा। शायद आपने सुना होगा, कि महाराष्ट्रोंके साथ सात वर्षतक हमारी लड़ाई हुई थी किन्तु इसके बाद जब हम सन्धिसूत्रमें आबद्ध हुए, तब वह लोग सन्धिसूत्रके अनुसार चले और कभी उससे विचलित नहीं हुए। आप लोगोंको उचित है आगेसे सन्धि मानकर चलें हमारे साथ युद्ध न करें और हमसे अन्यान्य युरोपीय सम्प्रदायसे झगड़ा खड़ाकर देशकी शान्ति भङ्ग न करें।

एडमिरलका पत्र।

२१ वीं फरवरी सन् १७५७ ई०।

आपकी १६ वीं तारीखकी चिट्ठी मुझे आज सबेरे मिली। पत्रमें देखा, कि इस देशके फ्रान्सीसियोंके साथ मेरा युद्ध करना आप अन्याय खयाल करते हैं। मैं यदि पहले जानता, कि आप इससे रुष्ट होंगे तो मैं कभी गङ्गाके किनारेवाले फ्रान्सीसियोंके साथ युद्ध करके आपके देशमें अशान्ति उपस्थित न करता। इस समय यदि वह लोग हमसे दुश्मनी न करनेका एक अङ्गीकार-पत्र लिख दें और आप बङ्गालके सूबेदार इस अङ्गीकार-पत्रकी जमानत करें और मेरी अनुपस्थितिमें उनके हमलेसे हमारे उपनिवेशोंके बचानेका जिम्मा लें तो हम लोग और कभी उनकी कोठी न लूटेंगे और उनसे युद्ध न करेंगे। मुझे विश्वास है,—आपको मालूम होगा, कि अङ्गरेजोंकी तरह वाक्यरक्षा और अङ्गीकाररक्षा पृथिवीकी कोई जाति कर नहीं सकती और मैं आपसे निश्चयकर कहता हूं कि हम लोगोंने आपसे जो सन्धि की है, जहांतक साध्य होगा, उसी शर्त्तके अनुसार चलेंगे और मैं साहस करके कह सकता हूं, कि कारनल या कम्पनीके अन्यान्य कर्म्मचारीगण इस सन्धिकी एक भी शर्त्त न तोड़ेंगे।

आपके साथ अङ्गरेज जातिकी जो सन्धि हुई है, उस सन्धिपत्रपर मैंने अपने हाथों मुहर लगाई है और ईश्वर और यीशुखृष्टके सामने जो अङ्गीकार एक बार किया है, उस अङ्गीकारके अनुसार निश्चय करके अपने पक्षकी ओरसे कहता

हूं कि मैं यथासाध्य उस अङ्गीकारकी रक्षाकी चेष्टा करूंगा और मैं आशा करता हूं, कि आप भी इस सन्धिकी एक भी शर्त्त भङ्ग करनेकी चेष्टा न करेंगे। मैं यह भी अङ्गीकार करता हूं, कि आप यदि फ्रान्सीसियोंके हमारे साथ फसाद न करनेकी जमानत कर लें, तो हम लोग भी फ्रान्सीसियोंपर चढ़ाई करके आपके देशमें शान्तिभङ्ग न करेंगे। *

नवाबका पत्र।

२०वीं फरवरी सन् १७५७ ई०।

मैंने कल आपको जो चिट्ठी लिखी थी, वह शायद आपको मिला होगी। इसी बीचमें मैंने फ्रान्सीसी वकीलसे सुना, कि पांच छः जङ्गी जहाज नदीमें आ पहुंचे हैं और और भी जहाज आया चाहते हैं। उन्होंने कहा है, कि वर्षबादमें आप मेरे और मेरी प्रजाके विरुद्ध शत्रुताचरण करना चाहते हैं। यह अच्छे सिपाहियोंका काम नहीं है। सिपाही कभी अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग नहीं करते। यदि आपकी सरल व्यवहार करने और सन्धि कायम रखनेकी इच्छा हो, तो शीघ्र ही नदीसे जङ्गी जहाज हटा लेवें। ऐसा करनेपर मेरी ओरसे किसी तरहकी त्रुटि न होगी। सन्धि करके इतना जल्द तोड़ देना अङ्गरेजसियोंका काम नहीं है। महाराष्ट्र

---

* एडमिरलकी चिट्ठी पानेके पहले नवाबने निम्नलिखित चिट्ठी लिखी थी।

खृष्टधर्म्म नहीं मानते फिर भी वह सन्धि भङ्ग करना नहीं जानते। इसलिये यह अत्यन्त आश्चर्य्यका विषय है, कि आपने इतने उन्नत होकर ईश्वर और यीशुखृष्टको साक्ष्य मानकर जो सन्धि की है, उसे भङ्ग करनेपर उद्यत हुए हैं।

एडमिरलका पत्र।

२५वीं फरवरी सन् १७५७ ई०।

आपकी २०वीं तारीखकी चिट्ठी मैंने दो दिन पहले पाई है। किन्तु इङ्गलण्ड चिट्ठी भेजनेमें इतना व्यस्त था, कि मैं अबतक उसका उत्तर दे नहीं सका। जिस सामान्य कारणको देखकर आपने समझा है कि हम लोग सन्धि भङ्ग करना चाहते हैं उसे देख हम आश्चर्यान्वित हुए हैं। हमारा एक भी अन्याय कार्य्य न देखकर केवल एक शठ आदमीकी बातपर निर्भर करके हमें दोषी साबित करना अत्यन्त आश्चर्य्यजनक है। सिपाही कभी अपनी प्रतिज्ञा भूल नहीं जाते। हमारे यहां आनेकी अवधिसे आपने हमारा क्या एक भी ऐसा काम देखा है जिससे हमारे द्वारा ऐसा कार्य्य सम्भव हो सकता है? आप कहेंगे, नहीं। अङ्गरेज जाति जगतमें सरलताके लिये विख्यात है और आप मुझसे सरल व्यवहार ही पावेंगे। जिस आदमीने छलसे आपसे हमारी अयथा निन्दा की है उसका यथार्थ विचार कीजिये। इस अवसरमें मैंने फ्रान्सीसियोंको उनके वकीलका चरित्र लिख भेजा है। उन लोगोंने जारी किया है कि वह आपको हमारे ऊपर इस अन्याय

दोषारोपकी बात लिख भेजेंगे। आप स्थिर जानेंगे, कि मैं सत्य प्रतिज्ञासे कभी विचलित न होऊंगा। आप जानेंगे, कि जो सब लोग इसके विरुद्ध बातें कहते फिरते हैं, हमारी मित्रता नष्ट करना ही उनका उद्देश्य है।

नवाबका पत्र।

फ्रान्सीसियोंके सम्बन्धमें आपने जो चिट्ठी भेजी है, वह चिट्ठी मैंने पढ़ी। आप स्थिर जानेंगे, कि मैं फ्रान्सीसियोंकी सहायता न करूंगा। यदि वह किसी तरहका फसाद खड़ा करेंगे या मेरे राज्यमें किसी तरहका शत्रुताचरण करेंगे, तो मैं ससैन्य उनपर आक्रमण करूंगा और उन्हें विशेषरूपसे शास्ति दूंगा। मैंने सुना था, कि आप चन्दननगरपर आक्रमण करेंगे। उसका सत्यासत्य जाननेके लिये मैंने आपको पत्र लिखा था। मैंने प्रजारक्षाके खयालसे वहां फौज भेजी थी, फ्रान्सीसियोंकी सहायता देनेका मेरा अभिप्राय नहीं था। आप मेरी चिट्ठी पाकर यदि चन्दननगरपर आक्रमण करनेका खयाल छोड़ देंगे, तो मैं अत्यन्त सन्तुष्ट होऊंगा। मैंने फ्रान्सीसियोंको लिखा है कि वह अब उपद्रव न करें और मैं विश्वास करता हूं, कि वह मेरी बात मान जावेंगे। फ्रान्सीसियोंके साथ आपकी जो सन्धि होगी मैं उस सन्धिपत्रके मानेके लिये एक मातबर आदमीको भेजूंगा और अपने खातेमें उसको रजिस्टरी करनेकी अनुमति दूंगा। अङ्गरेजोंसे मैत्री करनेके सिवा और मेरा कोई उद्देश्य नहीं है। ईश्वरानुकम्पासे

मैंने जो कार्य्य करना मनस्थ किया है उस कार्य्यको मैं समझता हूं, आप उचित समझेंगे और वह कार्य्य अवश्य साधित होगा, और कभी विफल न होगा। आप भी अपनी सन्धि और प्रतिज्ञारक्षा करनेमें यथासाध्य चेष्टा करेंगे और नीच लोगोंकी बातपर विश्वास न करेंगे। आपको यदि कोई विषय लिखना हो तो सीधे मुझे लिखें और किसीको न लिखें। मैं आपको सरल भावसे उसका जवाब दूंगा।

दिल्लीसम्राटके सिपाही इस प्रदेशकी ओर आ रहे हैं यह समाचार पाकर उनसे लड़ने मैं पटनेकी ओर जाता हूं। यदि आप इस विपदके समय मुझे सहायता देंगे, तो मैं आपके सिपाहियोंको जबतक वह मेरे पास रहेंगे तबतक एक लाख रुपये माहवार दूंगा। शीघ्र उत्तर लिखियेगा।

एडमिरलका पत्र।

मैं अभी आपकी चिट्ठी पाकर अत्यन्त आह्लादित हुआ। आप जैसी आसानीसे फ्रान्सीसियोंकी बातपर विश्वास करते हैं, उससे मुझे संशय हुआ था, कि हम लोगोंकी अपेक्षा फ्रान्सीसियोंपर आपका झुकाव ज्यादा है। किन्तु आपके पत्रसे मेरा सब सन्देह दूर हो गया है। आजसे आपको एक अकपट और सरल मित्र समझकर विश्वास करूंगा और प्रति दिवस अपने अकपट बन्धुत्वका निदर्शन दिखानेकी चेष्टा करूंगा।

आपके इच्छानुसार मैंने फ्रान्सीसियोंपर आक्रमण नहीं

किया। इसीलिये आपने समझा है, कि गुरुतर प्रयोजन न होनेसे इस सम्बन्धमे आपसे और कोई बात न कहूंगा। अब मैं जो कहता हूं, अनुग्रहपूर्व्वक उसे ध्यान देकर सुनिये। आपका पत्र पाते ही मैंने फ़्रान्सीसियोंपर आक्रमण करनेका खयाल छोड़ दिया। बल्कि उनसे निरपेक्षभावसे मैत्री करनेके लिये उनसे सन्धिका अनुरोध किया, और तो क्या,—बन्दोबस्त मीमांसा करनेके लिये उनके पास आदमी भेज दिया। किन्तु आश्चर्य्यका विषय है, कि एक तरहका एक स्थिर सिद्धान्त होनेपर भी फ़्रान्सीसी प्रतिनिधियोंने कहा, कि हमारे चले जानेपर, उनके किसी शक्तिशाली नये सेनाध्यक्षके आनेसे सन्धिशर्तके अनुसार काम न चलेगा। इसलिये महाशय समझ लें, कि ऐसे लोगोंके साथ सन्धि करना कितना मुशकिल काम है। उनकी जैसी इच्छा होगी, हम लोगोंपर अत्याचार करेंगे और हम लोग एक भी बात कह न सकेंगे। उन्होंने पहले ही कहा है कि मनसियार बुसी बहुत बड़ी फौज लेकर यहां आ रहे हैं। वह आकर मुझपर या आपपर आक्रमण करेंगे? ऐसे स्थलमे मैं अपनी कोठी परित्याग करके कैसे आपकी सहायताके लिये पटने जाऊं? शत्रुको पीछे लगा जाना अति सहजका काम है। बुसी जब आ पहुंचेंगे, तो आप यहां न रहेंगे, इसलिये आपकी ओरसे हमें सहायता मिलना नितान्त असम्भव होगा, और हम लोग भी आत्मरक्षा कर न सकेंगे। इस समय यदि हम लोग पहलेसे सावधान होकर चन्दननगर हस्तगत कर सकेंगे, तो हम लोग बहुत कुछ निःशङ्क हो सकेंगे और ऐसा होनेसे हम लोग अपने हरेक आदमीसे

महाशयकी सहायता कर सकेंगे पटना तथा—दिल्लीतक हम महाशयके साथ जा सकेंगे। क्या हम लोगोंने यह प्रतिज्ञा नहीं की है, कि परस्परके शत्रुको शत्रु समझेंगे? वह प्रतिज्ञा भङ्ग करनेसे ईश्वर नाराज़ हो हमें दण्ड देंगे। अधिक और क्या लिखूं, शीघ्र ही पत्नोत्तर देकर वाधित करेंगे।

आपने लिखा है कि दिल्लीराजकी सैन्य आपके साम्राज्य पर आक्रमण करने आती है और आप पटने उससे लड़ने जाते हैं। इसलिये आपने प्रकृत मित्रकी तरह मुझे सहायता करनेके लिये लिखा है। हम लोग क्या पहले हीसे आपके साथ मित्रता-सूत्रमें बंधे हुए नहीं हैं? आप यदि मेरी बातके अनुसार कार्य्य करें, तो मैं भी जान लड़ाकर आपकी सहायता करूंगा। आप मुझपर निर्भर करें तो आप कभी ठगे न जावेंगे। आपको यदि मुझपर सन्देह हुआ हो, तो मेरे पहलेके कामोंपर स्थिरचित्त होकर विचार करेंगे। ऐसा होनेसे फिर सन्देहका कोई कारण न रहेगा। मैं इस समय आपको अङ्गरेज जातिका ऐसा मित्र समझता हूं, कि आपसे कोई विषय छिपाना अत्यन्त अनुचित समझता हूं। इसलिये महाशयके ज्ञातार्थ मैं निवेदन करता हूं, कि जिस फौजके मेरे साथ आनेकी बात थी, वह इस समय नदीमें आ पहुंची है और आपके कुछ ध्यान देनेसे वह आपकी सहायताके लिये नियोजित की जा सकती है।

———

एडमिरलका पत्र।

४ थी मार्च सन् १७५७ ई०।

मैं आपके गये महीनेकी २० वी तारीखके पत्रका जवाब भेज चुका हूं। आशा है, आपने इससे पहले उसे पाया होगा। फ्रान्सीसी वकीलोंने आपसे कहा था, कि मैं सन्धि भङ्ग करना चाहता हूं, किन्तु अब आप निश्चय समझ गये होंगे कि यह बिलकुल झूठ है। यदि मेरे सत् उद्देश्यका और कुछ अधिक प्रमाण चाहते हैं तो मेरी सहिष्णुता देख-कर ही उसे समझ सकेंगे। मेरे सन्धिपत्रपर स्वाक्षर करनेके कितने दिनों बाद आपने उसपर स्वाक्षर किया। उसे मैंने सह लिया था। आपने हमारे शत्रु फ्रान्सीसियोंकी लोकबल और अर्थ द्वारा सहायता की है। आपने मुझसे जो प्रतिज्ञा की थी कि मेरे शत्रु आपके भी शत्रु होंगे, फ्रान्सीसियोंको सहायता देनेसे उस प्रतिज्ञाके विपरीत कार्य्य किया गया है। उसे भी मैंने सह लिया है। क्या इसी तरह सत्यप्रतिज्ञ वीर पुरुष अपनी बातकी रक्षा करते हैं? किन्तु इस समय सब बातें साफ कर देना अच्छा है। अच्छा, यदि आप अपने देशकी शान्ति भङ्ग करना न चाहते हो, यदि आप अपने प्रजा वर्गको दुःख कष्टमें डालना न चाहते हों, तो पत्रप्राप्तिके दश दिनोंके भीतर सन्धिका प्रत्येक प्रस्ताव इस तरह कार्य्यमें परिणत करें, कि मुझे आपके विरुद्ध और कोई बात कहनेकी जरूरत न रहे। और आप यदि ऐसा न करेंगे, तो आपको उसका फल भोग करना पड़ेगा। मैं पहलेकी तरह आपके साथ अकपट

व्यवहार करता आता हूं और इस समय आपसे निवेदन करता हूं, कि जो फौज इससे बहुत पहले यहां आनेको थी और जिसकी बात करनलने आपसे कही है, वह शीघ्र ही कलकत्ते आवेगी और मैं भी शीघ्र ही और भी कुछ अधिक जहाज और फौजके लिये एक जहाज इङ्गलण्ड भेजूंगा। मैं आपके देशमे ऐसी समराग्नि प्रज्वलित करूंगा, कि स्वयं गङ्गा आकर भी उसे बुझा न सकेंगी। बस अब खतम है। आप स्मरण रखियेगा, कि जो आदमी आपके पास यह अङ्गीकार करता है, उसने आपके निकट या जगतमे और किसीके निकट अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग नहीं की है।

नवावका पत्र।

६ वीं मार्च सन् १७५७ ई०।

बहुत दिन पहले आपने जो पत्र लिखा था उसका उत्तर आपको भेज चुका हूं। मैंने जो विषय आपसे पूछा है, उस सम्बन्धमे मुझे शीघ्र कोई जवाब दें। मैंने आपससे जो सन्धि की है उसके अनुसार कार्य्य करनेमें मै दृढ़प्रतिज्ञ हुआ हूं। किन्तु हम लोगोंका होली पर्व्व उपस्थित होनेसे अबतक उसे कार्य्यमे परिणत कर नही सका हूं। पर्व्वके समय मुत सद्दी और मेरे मन्त्रिवर्ग दरबारमें नहीं आते। पर्व्व समाप्त हो जानेपर मै अङ्गीकारके अनुसार कुल काम करूंगा। विलम्ब होनेकी वजह आप दिलमे और कोई खयाल न करेंगे। मैं कभी अपना वादा नही तोड़ता और अङ्गरेजोंके साथ मैंने

जो सन्धि की है, उसे भङ्ग करनेकी चेष्टा न करूंगा। मुझे आप लोगोंकी मित्रता और साहसका भरोसा है। इसलिये आप पठानोंसे युद्ध करनेसे सहायता देकर मुझे वाधित करेंगे। अधिक और क्या लिखूं?

मैं जो अकपटताचरण करता हूं जनाव उसे अनुग्रहकर याद रखेंगे और मैं सरलभावसे आपसे वादा करता हूं, कि अङ्गरेजोंसे जो सन्धि की है, उसे कभी भङ्ग न करूंगा।

आप निश्चय जानेंगे, कि शत्रुदमनमें आपकी सहायता करनेके लिये मैंने ईश्वरके सामने वादा किया है। मैंने फ्रान्सीसियोंको एक पैसा भी नहीं दिया। और हुगलीमें मेरे जो सिपाही गये थ, वह फौजदार नन्दकुमारके लिये। फ्रान्सीसी आपसे लड़नेकी हिम्मत कभी न करेंगे। मुझे विश्वास है, कि आप भी मेरी सूबेदारीके अन्तर्भुक्त गङ्गाके किनारेके देश-समूहमें फसाद पैदा न करेंगे।

नवाबका पत्र ।

१० वीं मार्च सन् १७५७ ई० ।

आपने अनुग्रहपूर्व्वक मेरे पत्रका जो जवाब दिया वह मुझे मिला। पत्र पढ़कर मालूम किया, कि मुझपर आपका सन्देह नहीं है। आप मेरे वाक्यके अनुसार चन्दननगरपर आक्रमण करनेसे विरत हुए और उनके निकट आपने सन्धिप्रस्ताव कर भेजा। आप लिखते हैं कि चन्दननगरवासी फ्रान्सीसी

फ्रान्सीसियोंकी ऐसी रीति चिरप्रसिद्ध है। एक कर्म्मचारीके सन्धि करनेपर उससे ऊंचे कर्म्मचारी आकर कहते हैं कि मैं इस सन्धिको न मानूंगा। इसलिये ऐसे आदमियोंसे सन्धि करके कोई कैसे निश्चिन्त रह सकता है? मैंने फ्रान्सीसियोंको सहायता देनेके खयालसे जनावको उनपर आक्रमण करनेसे मना नहीं किया। सिर्फ उन्हें अपनी प्रजा समझकर और देशमें फसाद होनेकी आशङ्कासे जनावको उनसे सन्धि करनेके लिये कहा था। शत्रु जब क्षमाभिक्षा मांगता है, तो दयालु लोग उसे देनेमें नहीं हिचकते। जनाव अतिशय दयालु और सद्विवेचक आदमी हैं। इसलिये आपको समझमें जो भला जान पड़े, वह कीजिये।

एडमिरलका पत्र।

२६ वीं मार्च सन् १७५७ ई०।

आपने मुझे कितने ही पत्र लिखे हैं किन्तु कोठीके काममें व्यस्त रहनेकी वजह मुझे उनका उत्तर देनेका अव-काश नहीं मिला। मेरा यह अपराध जनाव क्षमा करेंगे। इस समय अत्यन्त आनन्दके साथ आपको समाचार देता हूं, कि गये महीनेकी २३ वीं तारीखको दो घण्टेके घोरतर युद्धके उपरान्त जनावके आशीर्वाद और ईश्वरकी अनुकम्पासे मैंने फ्रान्सीसियोंके किलेपर कब्जा कर लिया है। अधिकांश शत्रुओंको मैंने कैद कर लिया है। सिर्फ थोड़ेसे असबाव लेकर भाग सके हैं। भागे हुए शत्रुओंके पीछे थोड़ेसे

सिपाही भेजे हैं। मैं आशा करता हूं, कि जनाब मेरे कामसे रुष्ट न होंगे। मैंने अपने सिपाहियोंको कड़ी आज्ञा दे दी है, कि वह आपकी प्रजाका कोई अनिष्ट न करें।

मैं जनाबको अनेक बार लिख चुका हूं, कि सन्धिके अनुसार ठीक काम करूंगा और परस्परके शत्रुदमनमें सहायता करनेका आप भी वादा कर चुके हैं। इसलिये मेरे जो शत्रु जनाबके यहां रहते हैं, उनके माल असबाबके साथ उन्हें आप मेरे पास भेज दें।

आपने डेक साहबके सम्बन्धमें जो पत्र मुझे लिखा है, उसके विषयकी खबर मैंने उन्हें दे दी है। माणिकचन्द्रसे डेक साहबने आपके सम्बन्धमें जो सब असन्तोषजनक बातें कही थी, उन्हें सुनकर आप उनपर रुष्ट हुए हैं, यह बात मैंने उनसे कह दी और उनसे आपसे क्षमा प्रार्थना करनेके लिये कहा। उन्होंने आपसे क्षमा प्रार्थना की है और आशा है, कि आप उन्हें क्षमा करनेपर सम्मत होंगे। मैं इस विषयका यत्न करूंगा, कि भविष्यतमें इस तरहका व्यवहार न हो।

आपकी इस महीनेकी २२ वीं तारीखकी चिट्ठी पढ़कर मालूम किया, कि माणिकचन्द्रके वर्द्धमान विभागका राजस्व अदा न करनेपर आप रायदुर्लभराम बहादुरको वहां भेजनेपर वाध्य हुए। उनकी यात्राका कारण जब आपने स्वयं निर्देश किया है, तो मैं अब शठ लोगोंकी कुमन्त्रणामें न भूलूंगा। आपसे मित्रता कायम रखना ही हमारा उद्देश्य है। मैं कभी प्रवञ्चक आदमियोंकी बातपर विश्वास न करूंगा। हम लोगोंमें झूठ झगड़ा खड़ा कर देना उनका उद्देश्य है।

आपकी राज सभामें हमारे अनेक शत्रु हैं। जगतसेठ विपक्ष आदमी हैं, इन दुष्ट लोगोंकी बातपर हमें दोषी न ठहरावेंगे। जिसमें भविष्यतमें ऐसे लोग आपके सामने हमारी निन्दा करके आपको प्रतारित कर न सकें इसलिये मैं सेठरको आपके पास भेजता हूं। वह आपसे मेरे मनका भाव कहेंगे। उनकी बातपर विश्वास करके आपको और कभी प्रतारित होना न पड़ेगा। अधिक और क्या कहूं?

एडमिरलका पत्र।

३१वीं मार्च सन् १७५७ ई०।

चन्दननगरके आक्रमण विषयमें जो कुछ हुआ था, वह सब मैंने आपको लिख भेजा है। जनाबने अपने वादेके मुताबिक काम नहीं किया, इसलिये मुझे फिर यह पत्र लिखना पड़ा है। वादेके मुताबिक काम करनेके लिये आपने जिस तरह बार बार वादा किया है, इस समय आपको उसी तरह कार्य्य करना उचित है। कम्पनीकी जो तोप आपके पास हैं, उसे आप वाट साहबको लौटा दें। और जो सब फ्रान्सीसी आपके पास हैं, उन्हें कैद करके मेरे पास भेज दें। ऐसा होनेसे हमारी मित्रता कायम रहेगी और आपका राजोचित कार्य्य होगा। आप निश्चय जानेंगे, कि जो व्यक्ति आपको इससे उलटी सलाह देगा, वह आपका शत्रु है। देशमें युद्ध खड़ा कर देना उनका उद्देश्य है। आपके वादा न तोड़नेपर मैं कभी आपका शत्रु न होऊंगा। आपके साथ चिरकाल

सद्भाव रखकर काम करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है।

मैंने जब यह पत्र आपको लिखा, तब सुना था, कि भागे हुए फ्रान्सीसियोंने आपका आश्रय ग्रहण किया है। यदि आप उन्हें आश्रय देंगे, तो मैं समझूंगा, कि आप उनपर कृपादृष्टि रखते हैं और अङ्गरेजोंके साथ आप मित्रता रखना नहीं चाहते। आपने क्या एक बार हमारे सैन्यकी साहाय्य-प्रार्थना करके फिर साहाय्यप्रार्थना नहीं की?

एडमिरलका पत्र।

२री अपरेल सन् १७५७ ई०।

(चन्दननगर।)

मैंने सुना है, कि मेरे जहाज और मेरी फौज हुगलीमें रहनेकी वजहसे आप असन्तुष्ट हुए हैं। मैं देखता हूं, कि हम लोगोंपर आपकी खफगी देखकर शत्रु लोग शायद आपको यह समझा रहे हैं कि हमारी फौज आपसे लड़ने मुरशिदाबाद जाया चाहती है। किन्तु क्या वह लोग यह नहीं जानते, कि उनकी चातुरी एकबारगी ही जगतके सामने जब प्रकाशित होगी तो उन्हें सविशेष लाञ्छित होना पड़ेगा?

तो मेरे जहाज और सिपाही कलकत्ता लौट जायेंगे और ऐसा होनेसे मैं जान सकूंगा, कि आप सचमुच ही हमारे शत्रुको अपना शत्रु समझते हैं।

नवाबका पत्र ।

२२वीं मार्च सन् १७५७ ई० ।

मैंने जो प्रतिज्ञा की है और जिसमें मैंने एक बार हस्तक्षेप किया है, उसे सम्पन्न करनेकी मैं यथासाध्य चेष्टा करूंगा। वाट साहबने जो कुछ कहा है मैंने उसे किया है और जो बाकी है, उसे १५ वीं तारीखके भीतर समाप्त करूंगा। इस बातकी खबर वाट साहब आपको दे चुके हैं, किन्तु फिर भी देखता हूं, कि आप अपना वादा तोड़ते हैं। आपके सिपाही हुगली, इन्गलि, वर्द्धमान, नदिया प्रभृति स्थानसे लूट ताराज कर रहे हैं। इसके अतिरित गोविन्दराममित्रने रामधन घोषके पुत्र द्वारा नन्दकुमारको लिख भेजा है, कि कालीघाट कलकत्तेके भीतर है, इसलिये यह स्थान उनके दखलमें रहेगा। मैं समझता हूं, कि यह स्थान आपके जेजाने दखल किया जाता है। मैंने इसीलिये आपसे सन्धि की थी, कि अन्याय युद्धविग्रहसे दोनो ओरके सिपाही न मारे जावें और प्रजाको व्यर्थ ही कष्ट न मिले। आप लोगोंको इस बातकी चेष्टा करना चाहिये, कि आप लोगोंके साथ हमारी मैत्री दिन दिन बढ़ती जावे और ऐसा होनेसे आपको यह बन्दोबस्त करना चाहिये, कि उक्त गोविन्दराम भविष्यतमें और कोई अन्याय कार्य्य करने न पावे।

और मैं ईश्वरकी साक्षी करके कहता हूं, कि सन्धि कभी न तोड़ूंगा। इस विषयमें वाट साहबसे जो बातचीत हुई है वह आप उनके पत्रसे अवगत होंगे।

पुनश्च। मैंने सुना है कि फ्रान्सीसी दक्षिणसे बहुतसी फौज लेकर आपसे लड़ने आते हैं। यदि आप सहायताके लिये मेरी फौज चाहें, तो मुझे उसकी खबर दें। वह आपकी सहायताके लिये मौजूद है।

एडमिरलका पत्र।

८ वीं अपरैल सन् १७५७ ई०।

आपने अनुग्रह करके गत महीनेकी २२ वीं तारीखकी जो चिट्ठी मुझे भेजी है, वह आज मिली। आपने इस पत्रके शीघ्र जवाब देनेके लिये जैसा विशेष अनुरोध किया है, उससे जान पड़ता है, कि आप जो जानना चाहते हैं, वह मेरे लिखे अन्तिम तीन पत्रोंमें कुछ भी पा नहीं सके। आपके इस पत्रका उत्तर भेजता हूं। इससे आप समस्त विषय अवगत होंगे और यह भी समझ सकेंगे कि मैं कितना जल्द आपके पत्रका प्राप्ति स्वीकार करता हूं। आपने अपना वादा कायम रखनेकी बात बराबर कहते आनेसे हमें आशा हुई है, कि आप हमारे लूटे लोगोंकी उनकी धनसम्पत्तिके साथ हमारे हाथमें समर्पण करेंगे और सन्धिपत्रके लिखित विषयोंको स्वीकार करेंगे। आपने स्वीकार किया है कि सन्धि सम्बन्धमें जो कुछ दावी है आप उसे १५ वीं तारीखके भीतर पूर्ण करेंगे।

उस दिन २५ वीं तारीख थे। आशा करता हूं कि अब वाटसन साहबके मुंहसे सुन सकूंगा कि आपने अपना वादा पूरा किया है। आपने लिखा है, कि आप सन्धि क़ायम रखनेकी जितनी चेष्टा करते हैं, हम लोग उसके तोड़नेका उतना ही उद्योग करते हैं। मैं कहता हूं, कि आप इस विषयमें प्रतारित किये गये हैं। वह प्रतारक माणिकचन्द्रके सिवा और कोई नहीं है। आप कहते हैं, कि हमलोग हुगली, नदिया प्रभृति स्थान लूटते हैं। मैं समझता हूं कि माणिकचन्द्रने इन स्थानोंकी मालगुजारी न देनेके खयालसे हम लोगोंपर झूठा इलजाम लगाया है। आपसे सन्धि हो चुकनेपर हमारी फौज स्थलपथसे बाकी खुसारसे चन्दननगरतक गई थी। वह वर्द्धमानतक भी नहीं गई। फ्रान्सीसियोंका पीछा करनेके लिये यद्यपि वह कुछ दूर आगे गई थी, किन्तु आज्ञा पाते ही वह उसी समय लौट आई थी। इससे क्या आप सिद्धान्त कर सकते हैं, कि हमारे सिपाही हुगली, हनुगली वर्द्धमान, नदिया, प्रभृति स्थान लूट पाट करते हैं? इसीलिये कहता हूं, कि आप प्रतारित हुए हैं। हम लोगोंपर आपकी विरक्ति उत्पन्न करना ही प्रतारकोंका उद्देश्य है। हम लोगोंके नाम ऐसी झूठी बातें गढ़नेका और क्या उद्देश्य हो सकता है? और गोविन्दराम मित्रने असलमें मेरे सेनाने यह सब काम किया है। इस सम्बन्धमें मैं जांच करूंगा।

मैं इस बातकी विशेष चेष्टा करूंगा, कि गोविन्दराम मित्र फिर ऐसा कार्य्य न करे और उपस्थित कार्य्यके लिये उसे भर्त्सना करनेमें कुण्ठित न होऊंगा।

और जान पड़ता है, कि अधिक कहना न पड़ेगा, सन्धि अक्षुण्ण रखनेके लिये हमारी जैसी अटल प्रतिज्ञा है और प्रति मुहूर्त्त हमारी सद्भावप्रीति जिस तरह सम्वर्द्धित हो रही है, उसपर मैं समझता हूं, आप विश्वास कर सकेंगे और मुझे पहले भूलसे आपने जो प्रवञ्चक समझा था, वह मैं समझता हूं, अब भूल गये होंगे। सज्जन लोग कभी प्रवञ्चना नहीं करते और जो यथार्थ वीर है वह प्रवञ्चनाको घृणादृष्टिसे देखते हैं। आपने मुझे दाक्षिणात्य फ्रान्सीसीकी बात लिखकर अतिशय बाधित किया है और मुझे समयपर सहायता देनेका जो वादा किया है उसके लिये मैं आपको आन्तरिक धन्यवाद प्रदान करता हूं। दाक्षिणात्यसे फ्रान्सीसी यदि इतनी ज्यादा फौज लावें, कि उनके सामने ठहरना मेरे लिये कठिन हो जावे तो मैं आपसे सहायताकी प्रार्थना करूंगा। इस समय आप अपने देशमें शान्तिरक्षाके लिये कैदी फ्रान्सीसियोंको मेरे पास भेज दें। कैदी फ्रान्सीसियोंके मेरे हाथमें रहनेसे आगन्तुक फ्रान्सीसी हमसे किसी तरहका फसाद कर न सकेंगे। कैदी फ्रान्सीसियोंको यदि हमारे पास भेज देंगे, तो हमें आपकी सरलताका परिचय मिलेगा। फिर शान्तिसंस्थापनका यही सुअवसर है। यदि आप इस सुअवसरको नष्ट कर देंगे, तो फिर उसे न पायेंगे। मनुष्यके कार्य्य पर जिनकी असीम क्षमता है, उन्ही परम कारुणिक ईश्वरने मानो मुझे प्रत्यक्ष करनेकी क्षमता दी है। वह देखते हैं कि मैं न्यायतः इष्ट करता हूं और वही प्रयोजनानुसार मुझे सहायता देते हैं। मैंने जो सब प्रस्ताव किये हैं, उन्हें सम्पन्न करनेमें देर

न कीजियेगा। ईश्वर और उनके दूतगणको साक्षी मानकर आपने मेरे शत्रुओंको अपना शत्रु समझनेकी जो प्रतिज्ञा की, उसकी रक्षा करनेका यही उपयुक्त समय है। आइये हम लोग दो दलसे एक हो जावें। ऐसा होनेसे हमारे मनमें चिरशान्ति विराज करेगी और हमारे शत्रुवर्ग हमें एकत्र देखकर कभी हमसे लड़नेका साहस न करेंगे। मैंने जो कुछ लिखा है, उसे सोच देखिये। मेरी आन्तरिक वासना यह है, कि देशमें एकता और शान्ति विराजे। मैं अपनी साधुताके निदर्शनस्वरूप आपको यह खबर देता हूं, कि मैंने अपने जहाजोंको कलकत्ते लौट जानेकी आज्ञा दी है। इससे जान पड़ता है कि आप सन्तुष्ट होंगे। और अधिक क्या लिखूं?

नवाबका पत्र।

१४वीं अपरेल सन् १७५७ ई०।

आपकी चिट्ठी अनेक बार मिली। यह जानकर अतिशय सन्तुष्ट हुआ, कि आप शारीरिक अच्छे हैं। मैं आपके सब पत्रोंका मर्म ग्रहण कर सका हूं। आपके सन्तोषके लिये और परस्परके शत्रुको अपना शत्रु समझनेवाला अपना वादा पूरा करनेके खयालसे आपको खबर देता हूं, कि मैंने ल साहब और उनके कुल नौकर चाकरको देशसे बाहर निकाल दिया है और अपने नायब और फौजदारको विशेषरूपसे सतर्क कर दिया है कि वह लोग फ्रान्सीसियोंको हमारे

राज्यके किसी अंशमें रहने न दे। मैं प्रत्येक मुहूर्त आपकी सहायता करनेके लिये प्रस्तुत हूं। यदि फ्रान्सीसी बहुसंख्यक अथवा अल्पसंख्यक फौज लेकर आपके मुकाबले आवेंगे, तो मैं ईश्वर और उनके दूतगणको साक्षी करके कहता हूं, कि आपके पत्र लिखते ही मैं ससैन्य आपकी सहायताके लिये जाऊंगा। आप इस विषयमें निश्चिन्त रहिये। मैंने अपने पत्रमें और सन्धि-पत्रमें जो शर्तें मञ्जूर की हैं उन्हें पालन करनेकी यथासाध्य चेष्टा करूंगा। आपने फ्रान्सीसी कोठी और वाणिज्य द्रव्यकी जो बातें लिखी हैं उनके सम्बन्धमें मेरा वक्तव्य सुनिये। मैंने सुना है, कि फ्रान्सीसी वणिकदलने देशी लोगोंसे रुपये कर्ज लिये हैं और उनके जिम्मे हमारा बहुतसा रुपया बाकी पड़ गया है। मैं यदि फ्रान्सीसियोंकी धनसम्पत्ति आपके पास भेज दूंगा, तो आप ही बताइये कि उन्हें क्या कहकर समझाऊंगा? आप मेरे मङ्गलाकांक्षी और मित्र हैं। आप सुपरामर्श देकर बाधित कीजिये।

बाट साहबको जवानी आप अन्यान्य विषय जान सकेंगे। अधिक और क्या लिखूं? यदि आपकी सन्धिकी शर्त्तें कायम रखनेकी इच्छा हो तो ऐसा कोई पत्र न लिखेंगे जो उसके विरुद्ध हो।

एडमिरलका पत्र।

१६ वीं आपरेल सन् १७५७ ई०।

आपका इस महीनेकी १४वीं तारीखका पत्र पाकर जान सका, कि आपको मेरी पहली चिट्ठियां मिली हैं। मेरे पहले पत्रोंका यथासमय उत्तर न देनेसे मैं समझ सकता हूं, कि आपका मेरी जातिपर पहले जो सरल भाव था वह क्रमशः लोप होता है। मेरे पदगौरवके सम्मानार्थ पत्रका शीघ्र शीघ्र उत्तर देना उचित था। आपका इस समयका तात्कालिक भाव हमारे स्वदेशीय राजाका अपमान करनेके सिवा और कुछ नहीं है। उन्होंने मुझे प्रजाका कष्ट दूर करनेके लिये भारतवर्ष भेजा है।

करते है, कि आप हमपर कृपा दृष्टि रखते है। उन्होंने जो सब बातें लिखी है, वह कभी कार्य्यमे परिणत नही हुई और आपने १ ली रजब (२२ वी मार्च) को जो सब बातें लिखी है, वह भी अभीतक कार्य्यमे परिणत नही हुई। आपने इस पत्रमे लिखा है, कि १५वीं तारीखके भीतर सन्धिकी सब शर्त्तें स्वीकार कर लूंगा। आपने क्या सब शर्त्तें स्वीकार की है? जान पड़ता है, कि नही। ऐसा होनेसे आपके कार्य्य अङ्गीकार विरुद्ध देखकर आपकी सब बातोंपर कैसे विश्वास कर सकता हूं? जब आपने ल साहब और उनके अनुचरवर्गको पटन जानेके लिये परवाना दिया है, तो मैं यह विश्वास कैसे कर सकता हूं कि आप फान्सीसियोंके विरुद्ध मेरी सहायता कर सकेंगे? क्या यही मित्रताका निदर्शन है? इसी तरह क्या आप मेरी सहायता करेंगे? आप एक तरहकी बात कहते और दूसरी तरहका काम करते है। आपने हम लोगोंकी सहायता करनेके नामसे तख़्ताओंको आश्रय और बारूद प्रभृति युद्धकी सामग्री क्या प्रदान नही की? आपने क्या उन्हे तीन तोपें दे जाने नही दिया? आपने फ्रान्सीसियोंको धन सम्पत्ति उनके कर्म्मचारीयोंको देनेका सङ्कल्प किया है। यह बहुत बड़ी बात है। धन सम्पत्तिको मैं तुच्छ समझता हूं और उसके लिये मै भारतवर्षमे नही आया हूं।

करके कहता हूं, कि जो लोग हमारे हाथ पड़े हैं, वह सुख स्वच्छन्दके साथ वास करते हैं। किन्तु धर्मी दया दिखाना युद्धकी रीति नहीं है।

यदि आप अपना सारा क्रोध न गये होंगे, तो मेरे नीचे लिखे प्रस्तावका अनुमोदन करेंगे। कासिम बाजारमें शीघ्र ही हमारी फौज लड़ाईके लिये जायेगी और इस स्थानके अच्छी तरह वेष्टित होते ही, मैं इच्छा करता हूं कि स्थलपथसे मेरे दो हजार सिपाहियोंके निरापद पटने पहुंचनेके लिये एक दस्तक देंगे। मैं निश्चय कर कहता हूं, कि इस सैन्यके यात्राकालमें उस देशके रहनेवालोंपर किसी तरहका अत्याचार न होगा। फ्रान्सीसियोंको अवरोध करना और आपके राज्यमें शान्ति स्थापन करना ही यह फौज भेजनेका एकमात्र उद्देश्य है। जितने दिनोंतक फ्रान्सीसियोंके साथ हमारी लड़ाई होती रहेगी, उतने दिनोंतक आपके राज्यमे शान्तिकी सम्भावना नहीं है। यदि आप आशङ्का करें, कि पटने फौज जानेमें आपकी प्रजापर कोई अनिष्टपात होगा, तो इस फौजके साथ अपने विश्वस्त हरकारे भेज सकते हैं। वह समय समयपर फौजके न्याय अन्याय आचरणके विषयमे आपको सूचना देते रहेंगे। आप निश्चिन्त रहिये, कि आप उनसे कोई बुरा समाचार न पावेंगे।

कम्पनीकी जो सब तोपें हैं, उन्हें न भेजकर वाट साहबको सिर्फ दश तोपें क्यो भेजीं? आप खयाल करते है कि किसी स्वार्थपर दुष्ट आदमीकी सलाहसे मैंने आपसे अङ्गीकार-विरुद्ध कोई अयथा प्रस्ताव किया है। इसके उत्तरमें मुझे यह

और प्रजा शान्तिसुख उपभोग करे । इसके सिवा मेरा और कोई उद्देश्य नहीं है और आप भी वैसा ही कीजिये जिससे मेरा यह उद्देश्य सफल हो ।

नवाबका पत्र ।

१५वीं जून सन् १७५७ ई० ।

प्रतिज्ञानुसार वाट साहबको जो जो देनेकी बात थी, प्राय समस्त ही उन्हें दिया है कुछ बाकी रह गया है । माणिक चन्द्रके विषयका बन्दोबस्त प्राय: कर डाला है । यह सब होने पर भी वाट साहब, कासिमबाजार-फैक्टरीके काउन्सिलर दूसरे साहब लोग बागकी सैरके बहाने रातको भाग गये हैं । इसे अवश्य ही शठतापरिचारक और सन्धिभङ्गका सूत्रपात कहना पडेगा । मुझे जान पडता है, कि यह सब काम आपकी जानमें और आपके परामर्शानुसार हुआ है । मैंने एक तरहसे सोच लिया था, कि ऐसा ही होगा और इस तरहकी विश्वासघातकता होनेके खयाल हीसे मैंने पलाशीसे फौज नहीं हटाई । मैं ईश्वरको सन्तान्त:करणसे धन्यवाद देता हूं कि मेरी ओरसे सन्धि भङ्ग नहीं हुई । अल्ला और मौला इस विषयमें साक्षीस्वरूप रहे । जो पहले वादा तोडेंगे, वही अपने कियेकी सजा पावेंगे ।

सन्धि-शर्त्त।

सिराजुद्दौलहके साथ अङ्गरेजोंकी जो सन्धि हुई थी, स्थानान्तरमें उसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुआ है। यह सन्धि स्वीकार करके कम्पनीने जो पत्र लिखा था, वह नीचे प्रकाशित करते हैं,—

"बङ्गाल, बिहार और उड़ीसेके सूबेदार नवाब मन्सूरल मल्क सिराजुद्दौलहके सामने हम अङ्गरेज इष्ट इण्डिया वणिक सम्प्रदाय) अपने लाट साहबके सभासदवृन्दका स्वाक्षर करके यह सन्धिपत्र मञ्जूर करते हैं कि हम वणिक सम्प्रदायकी कोठीका कार्य्य (जो नवाबके इलाकेमें है पहलेकी मञ्जूरीके मुताबिक चलाया जावेगा हम लोग अकारण किसी आदमीका अनिष्ट न करेंगे, नवाबके इलाकेके किसी जमीन्दार, तालुकदार डाकू या खूनीके विचार विषयमें हस्तक्षेप न करेंगे और अपने पहलेके वादे न तोड़ेंगे।

जेनरल वाटसन, करनल क्लाइव, और काउन्सिलके मेम्बर ड्रेक और वाटसनके साथ मीरमुहम्मद जाफरखां बहादुर नीचे लिखे सन्धि-सूत्रमें आबद्ध हुए,—

१ म। शान्तिके समय नवाब सिराजुद्दौलहने जो सब सन्धि शर्त्तें स्वीकार कीं, मैंने उन सब शर्त्तोंके स्वीकार करनेका वादा किया।

३ य। भारतके स्वर्गस्वरूप बङ्गाल बिहार और उड़ीसेमें फ्रान्सियोंके जो जो कारखाने और जायदाद है, वह सब अङ्गरेजोंके अधिकारमें रहेंगी। फिर मैं फ्रान्सीसियोंको इन तीनो प्रदेशोंमे व्यवसाय करने न दूंगा।

४ र्थ। नवाब द्वारा कलकत्ता शहर आक्रान्त और लुण्ठित होनेसे अङ्गरेजोंका जो नुकसान हुआ है और एक फौज रखनेमें उनका जो खर्च हुआ है उसके क्षतिपूरण स्वरूप में उन्हें एक करोड़ रुपये दूंगा।

५ म। कलकत्तावासी अङ्गरेजोंकी धनसम्पत्ति लुट जानेमे मैं उन्हें क्षतिपूरणस्वरूप पचास लाख रुपये दूंगा।

६ ष्ठ। कलकत्तावासी जेण्ठ हिन्दू और मुसलमान और अन्यान्य बाशिन्दोंकी जायदाद लुट जानेसे क्षतिपूरण स्वरूप मैं उन्हें बीस लाख रुपये दूंगा।

७ म। कलकत्तावासी आरमेनियनोंकी जायदाद लुटनेसे मैं क्षतिपूरणस्वरूप सात लाख रुपये दूंगा। कलकत्तावासी अङ्गरेज हिन्दू मुसलमान और अन्यान्य जातियोंमें उक्त रुपये बांट देनेका भार एडमिरल वाटसन, करनल क्लाइव राजर ड्रेक विलियम वाट्सजेनस किलपाट्रिक रिचार्ड बेकर प्रभृति साहब महोदयगणपर रहा।

८ म। परिखावेष्टित कलकत्तेके भीतर जमीन्दारोंकी जो सब सम्पत्ति है, उसके अतिरिक्त नालेके पार अङ्गरेजोंको बारह सौ वर्ग हाथ परिमाण जमीन प्रदान की।

६ म। कलकत्तेके दक्षिण कुल्पीतक जो जमीन फैली हुई है, वह अङ्गरेजोंकी जमीन्दारीमे शामिल हुई और वहांके

कर्मचारीगण आजसे अङ्गरेजोंके तावे काम किया करेंगे। अन्यान्य जमीन्दारोंकी तरह उक्त कम्पनी सरकारमें कर भेजेगी।

१० म। जब मैं अङ्गरेजोंसे फौजकी सहायता लूंगा, तो उक्त सैन्यरक्षाका खर्च दूंगा।

११ श। हुगलीके दक्षिण गङ्गाके किनारे मैं कोई किला न बनाऊंगा।

१२ श। मैं उपरोक्त तीनो प्रदेशोंका दखल पाते ही उल्लिखित रुपये अङ्गरेजोंको कौड़ी कौड़ी चुका दूंगा।

इति तारीख १५वीं रमजान जून सन् १७५७ ई०। वर्त्तमान शासनका ४र्थ वर्ष।

———

उपसंहार।

पलाशीक्षेत्रमें विजय लक्ष्मी अङ्गरेजोंकी गोद बैठी। पलाशीके युद्ध होमें अङ्गरेजोंका सौभाग्य सञ्चित है। वाणिज्यके विश्वविजयी वणिक अङ्गरेज इसी समयसे बङ्गदेशके क्रमसे समग्र भारतके शासनकर्त्ता हुए। इसी समयमें भारतका राजदण्ड,—मानदण्डधारी अङ्गरेज वणिकोंके हाथ पड़ा भारतका स्वर्ण सिंहासन,—विदेशी ब्रिटिश द्वारा अधिकृत हुआ। पलाशीके मैदान होमें भारतमें अङ्गरेज राजत्वकी नींव पड़ी। छल चातुर्यसे रणजित होनेपर भी, पलाशी-समरमें अङ्गरेजोंका विजय-गौरव विघोषित हुआ। इसलिये पलाशी-युद्धका इतिहास भी बहुत है।

इतिहासका महत् दोष—ऐतिहासिक सत्यका अपलाप है। किन्तु पलाशीका इतिहास लिखनेमें बहुतेरे अङ्गरेज ऐतिहासिक अपना अपना पक्ष समर्थन करनेके लिये कितने अलीक सिद्धान्त और बेजड़की घटनाओंसे इतिहासका उज्ज्वल पृष्ठ चिरकलङ्कित करनेमें कुण्ठित नहीं हुए हैं। अङ्गरेज लिखित पलाशीके इतिहासमें "ब्लेक होल" वा अन्धकूप एक प्रधान परिच्छेद है। अङ्गरेज इतिहासमें वर्णित उस सार्द्ध शताब्दि पहलेका संघटित अन्धकूप हत्याका विवरण पढ़नेसे, इस समय भी भय विस्मयसे अभिभूत होना पड़ता है—शरीर रोमाञ्चित

हो उठता है। यह बात अङ्गरेज ऐतिहासिक ही बता सकते हैं, कि उनके इस अन्धकूप-वर्णनसे, पलाशीके युद्धमे अङ्गरेजोंका विजयगौरव कुछ भी बढ़ सका है या नहीं, या ऐतिहासिक-गणकी स्वजाति मर्य्यादाकी मात्रा किसी परिमाणसे बढ़ सकी है या नहीं, किन्तु साधारणबुद्धिसम्पन्न सभी लोग कहेंगे, कि इससे इतिहासकी मर्य्यादा बिगड़ गई। सचमुच ही पलाशीके इतिहासमें अन्धकूपके अस्तित्वके विषयमें संशय होता है। मनमें आता है,—'अन्धकूप-कहानी होनेपर भी साहबोंकी स्वकपोल कल्पित है। हालवल लिखित इतिहासमें ही इस अमूलक अन्धकूप-काण्डका नृशंस अभिनय-विवरण लिपिबद्ध है। अन्धकूपमें कैद १ सौ ४६ आदमियोंमे १ सौ २३ आदमियोंकी मृत्यु हुई थी। बाकीके २३ आदमियोंमें हालवेल एक थे। यानी हालवेल साहब अन्धकूपके अस्तित्व निर्देशके एकप्रमाण थे। इसलिये उनका लिखा विवरण मिथ्या नहीं हो सकता। इसी भ्रममें पड़कर दूसरे अङ्गरेज ऐतिहासिक गणने हालवेल कल्पित इस अमूलक घटनाके आमूल वृत्तान्तमें यथेष्ट कलेवरवृद्धि की है। तर्क-युक्ति प्रमाणसे इस ग्रन्थमें यह बात विशेषरूपसे प्रमाणित कर दी गई है कि अन्धकूप हत्या अमूलक है। उपसंहारमें उस बातका पुनरुल्लेख निष्प्रयोजन है।

समाप्त होने इतिहास परिचित है—साधारण जनसमाजके कितने आदमी इतिहासकी खबर रखते हैं? किन्तु उच्चशीर्ष स्मृतिस्तम्भ प्रकाश्य पथमें खड़ा होकर शिक्षित अशिक्षित सभी पथिककी दृष्टि आकर्षण करता है। इतने दिनोंसे अन्धकूपका कोई स्मृतिस्तम्भ नहीं था। सिर्फ अङ्गरेजोंके लिखे कई इतिहास ही इतने दिनोंसे यह अलीक कहानी विघोषित करते थे। कालवशसे और प्रतिवादमूलक ग्रन्था दिके प्रकाशसे, लोगोंके मनमेंसे इस अन्धकूपकी क्षीण स्मृति क्रमशः अपसारित होती देख भारतके भूतपूर्व बड़े लाट लार्ड कर्जनने, वृटिश भारतकी राजधानी महानगरी कलकत्तेकी छातीपर प्रकाश्य राजपथमें अन्धकूपके स्मृतिस्तम्भ स्थापनका अभिलाष किया। इस पुस्तकके मूल "अङ्गरेजेर जय"का प्रथम संस्करण प्रकाशित होनेके छः वर्ष बाद अङ्गरेजी १६०२ सालके दिसम्बर महीनेमें, शहरके दक्षिण अञ्चलमें मर्म्मर स्तम्भ प्रतिष्ठित हुआ। यह स्तम्भ कर्जनने अपने खर्चसे खड़ा किया है। स्तम्भ प्रतिष्ठाकालमें आवरण उन्मोचनके समय, वक्तृतामें लार्ड कर्जनने कहा था—जिन लोगोंने हृदयका तप्त शोणित बहाकर भारतमें वृटिश राजत्वकी भित्ति-प्रतिष्ठा की है—अपनी जातिके उन्हीं साहसी वीरोंके प्रति सम्मान प्रदर्शन करनेके लिये और उनके आत्मोत्सर्गके स्मृति-निदर्शन-स्वरूप मैंने यह मर्म्मरस्तम्भ प्रतिष्ठित किया।" लालदीघीके उत्तर पश्चिम, राइटर्स बिल्डिङ्ग इमारतके दक्षिण-पश्चिम कुछ कलेवरसे खड़ा कर्जन-प्रतिष्ठित प्रस्तरस्तम्भ वृटिशका वीरत्व गौरव विघोषित कर रहा है—पलाशीका परिचय ज्ञापन कर

रहा है—अन्धकूपकी स्मृति तथा कार्नेगकी कीर्त्ति रक्षा कर रहा है। स्तम्भ श्वेतप्रस्तरसे निर्म्मित, अष्टकोण, नातिदीर्घ है, श्वेतप्रस्तर निर्म्मित अष्टकोण भित्तिपर प्रतिष्ठित है। इस भित्तिप्रस्तर-अङ्गमें उत्तर, उत्तर-पश्चिम, पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और पूर्व्व—इन छः ओर छः तरहका विज्ञापन खुदा हुआ है। छःओ विज्ञापनका मजमून इस प्रकार है,—

उत्तर।

The names inscribed on the tablet
On the reverse side of this
Are the names of those persons
Who are known to have been killed,
Or to have died of their wounds,
During the Siege of Calcutta,
In June, 1756
And who either did not survive
To enter the Black Hole prison
Or afterwards succumbed to its affects

उत्तर-पश्चिम।

To the Memory of
Edward Eyre, William Baillie,
Revd Jervas Bellamy, John Jenks
Roger Reveley, John Carse, John L-

Thomas Coles, James Valicourt,
John Jebb, Richard Toriano,
Edward Page, Stephen Page,
William Grub, John Street
Aylmer Harrod, Patrick John stone,
George Ballard, Nathan Drake,
William Knaptom, Francis Gosling,
Robert Byng, John Dodd,
Stair Dalrymple, David Clayton,
John Buchanan, and Lawrence Witherington,
Who perished in the Black Hole prison.

पश्चिम ।

This Monument
Has been erected by
Lord Curzon, Viceroy and Governor
General of India,
In the year 1902,
Upon the site
And in reproduction of the design
Of the Original monument
To the memory of the 123 persons

Messrs Cocker, Bendall, Atkinson, Jennings,
Reid, Barnet, Frere, Wilson,
Burton, Lyon, Hillier, Tilley and Alsop,
Who perished in the Black Hole prison

दक्षिण ।

To the memory of—
Peter Smith, Thomas Blagg,
John Francis Pickard, John Pickering,
Michael Collings, Thomas Best,
Ralph Thoresby, Charles Smith,
Robert Wilkinson, Henry Stopford,
William Stopford, Thomas Purnell,
Robert Talbot, William Tidecomb,
Daniel Macpherson, John Johnson and
Messrs Whitby, Surman, Bruce,
Montrong, and Janniko, who perished
During the Seige of Calcutta

पूर्व्व ।

The names of those who perished
In the Black Hole prison,
Inscribed upon the reverse side
Of this monument,

Are in Excess of the list
Recorded by Governor Holwell
Upon the Original Monument
The additional names, and
The Christian names of the remainder,
Have been recovered from oblivion
By reference to contemporary documents

बङ्गला १३०८ सालकी १२वीं पौषको "बङ्गवासी"में प्रकाशित 'अन्धकूप' नामक प्रबन्धमें कर्जनकी इस स्मृतिस्तम्भ प्रतिष्ठाके सम्बन्धमें लम्बी चौड़ी आलोचना हुई थी। प्रबन्ध नीचे दिया जाता है:—

"जय लार्ड कर्जनकी जय। इतने दिनोंके बादका अन्धकूपका स्मृति-स्तम्भ लार्ड कर्जनके कीर्त्तिस्तम्भरूपसे युग युग जागता रहेगा।

लार्ड कर्जनने कलकत्तेकी लालदीघीके उत्तर पश्चिम "अन्धकूप के स्मृति स्तम्भकी प्रतिष्ठा की है। प्रतिष्ठा कई दिनोंसे हुई थी, गत सप्ताहके शुक्रवारको साधारणको दिखानेके लिये लार्ड कर्जन द्वारा इसका परदा हटा दिया गया।

आज कई वर्ष हुए लार्ड कर्जन बहादुरने [illegible] पाया, कि ऐसा एक स्मृति-स्तम्भ बनानेकी जरूरत है। इस दिन स्मृति स्तम्भके खोलनेके समय आपने [illegible] इसको [illegible] कि उनके भारतवर्ष [illegible]

साहब मत पुराने कलकत्ता-तत्त्वकी गुप्तक उगल मात्र थी। सन् १७५६ ई०में नवाब सिराजुद्दौलह द्वारा जो कथित "अन्धकूप-हत्या काण्ड अनुष्ठित हुआ था, लार्ड कर्जनने वस्तिरकी पुस्तक पढ़कर, उसका सविशेष विवरण जाना था। उस दिन उन्होंने अपने मुंहसे यह बात कही थी।

यह सुनकर हमे आश्चर्यान्वित होना पड़ा, कि लार्ड कर्जन वस्तिदकी पुस्तक पढ़कर पहले पहल उस अन्धकूप हत्याका विवरण विशेषरूपसे जान सके। वस्तिदके पहलेके अङ्गरेज लिखित इतिहासमे यह अन्धकूप विवरण लिखा हुआ है। स्वयं हालवेल साहबने अपने India Tr… नामक ग्रन्थमे अन्धकूप हत्याका विस्तृत विवरण लिखा है। अन्यान्य अङ्गरेज इतिहास-लेखकोंने हालवेल लिखित ग्रन्थसे यह अन्ध कूप-विवरण संग्रह किया है। जिस समय "अन्धकूप हत्या का अनुष्ठान होना बताया जाता है उस समय हालवेल साहब कलकत्तेके दुर्गमे उपस्थित थे। वह भी अन्धकूपमे कैद किये गये थे। ऐसा लिखा है, कि इन्होंने 'अन्धकूप' हत्याकाण्ड संघटित होनेके बाद विलायत जानेके समय जहाजमे अन्धकू पका विस्तृत विवरण लिखा था। यह बात किञ्चिन्मात प्रकाश नही है, कि उस समयके और किसीके मुंहसे किसीने यह बात सुनी है या नही। जिन सब अङ्गरेज ऐतिहासकोंने अपने अपने लिखे हुए इतिहासमे अन्धकूप हत्याका विवरण लिपिबद्ध किया है, उन सबने हालवेल साहबकी दुहाई दी है। ऐसी अवस्थामे यह सुनकर क्या आश्चर्यान्वित होना नही …ता कि लार्ड कर्जन सबसे पहले वस्तिरकी पुस्तक पढ़कर

अन्धकूपका निर्विशेष विवरण जान सके? लार्ड कर्जन सुशिक्षित हैं विश्वविद्यालयकी उच्च उपाधि प्राप्त है। यह सुनकर क्या हमें आश्चर्यान्वित होना नहीं पड़ता, कि वह वस्तिदको हालवल साहबका या अन्धकूप हत्याका विस्तृत विवरण जान सके?

उस दिन लार्ड कर्जन बहादुरके मुंहसे सुना, कि हालवेल साहबने विलायतसे कलकत्ते लौटकर मारे गये व्यक्तियोंके स्मरणार्थ स्मृति-स्तम्भकी प्रतिष्ठा की। सन् १८२१ ई० से पहले या उसी सन्‌से यह स्मृति स्तम्भ अपसारित हुआ था। श्रीयुक्त बिहारीलाल सरकार रचित "इङ्गरेजेर जय" नाम्नी पुस्तकमें यह विषय लिखा है। बिहारी बाबू ऐतिहासिक प्रमाणाभावसे 'अन्धकूप-हत्या' के अस्तित्व सम्बन्धमें सन्दिहान हुए हैं। उन्होंने प्रश्न किया था—"हालवल साहबने,—अन्धकूप हत्याके जिस स्मृति स्तम्भकी प्रतिष्ठा की थी, वह स्मृतिस्तम्भ लोप क्यों हुआ?" उस दिन बड़े लाट बहादुरने भी कहा था,—"No one quite knows why यह बात कोई नहीं जानता कि अन्धकूपका स्मृति-स्तम्भ क्यों तोड़ डाला गया।

करनेमें बड़े लाट बहादुर प्रवृत्त हुए। तथ्यानुसन्धानके फलसे वह अनेक विषय जान सके। बड़े लाट बहादुर हीकी जुबानी मालूम हुआ,—"इस समय जिस जगह कलकत्तेका बड़ा डाकघर है, उसी जगह पुराने किलेके भीतर अन्धकूप था।" इसी स्थानको बड़े लाट बहादुरने साधारणके दृष्टिगोचर करनेकी व्यवस्था की है। उस दिन बड़े लाट बहादुरने जिस जगह स्मृति स्तम्भका आवरण उन्मोचन किया था, बड़े लाट बहादुरके खयालसे उससे कुछ पूर्व्व हालवेलकृत स्मृति-स्तम्भ प्रतिष्ठित था। जिस पय:प्रणालीमें अन्धकूप-हत गतिगणके निक्षिप्त होनेकी बात कही जाती है, बड़े लाट बहादुर कहते हैं, कि वह पय:प्रणाली वर्त्तमान स्मृति स्तम्भसे कुछ पूर्व्व थी।

बड़े लाट बहादुरने इतना तथ्यानुसन्धान किया, किन्तु तथ्यानुसन्धानमें यह ठीक कर न सके कि हालवेल साहब कृत स्मृति स्तम्भ तोड़ा क्यों गया? इतनी बात निर्द्धारण कर लेनेसे बहुतोंके मनका बहुत बड़ा संशय दूर हो सकता। किसी किसीके मनमें इस समय संशय है, कि यह स्मृति स्तम्भ काल्पनिक था, अथवा ऐसा स्मृति-स्तम्भ बननेलायक कोई घटना न होनेके खयालसे ईष्ट-इण्डियन कम्पनीने इसके कायम रखनेकी प्रयोजनीयता स्वीकार नहीं की इसीलिये उसने इसे तोड़ डाला था। अगर कहो, कि आंधी या बिजलीसे यह गिरा तो इसका पुनरुद्धार क्यो न हुआ? ईष्ट इण्डियन कम्पनीके भीतर क्या स्वजातिप्रिय कोई आदमी नहीं था?

बड़े लाट बहादुरने कहा है,—"हालवेल साहबने जिस स्मृति-स्तम्भकी प्रतिष्ठा की है, उसमें सिर्फ पचास आदमीका

नाम लिखा था। मैंने और भी बीस आदमियोंका नाम संग्रह किया है। इन लोगोंने अन्धकूपमे जीवन विसर्ज्जन किया था। इसके अलावा जो बीस आदमी अन्धकूपसे निकलकर बादको उसकी यन्त्रणासे मर गये मैंने उनका भी नाम संग्रह किया है। फलतः कुल अस्सी आदमियोंके नाम इस मेरे प्रतिष्ठित स्मृति-स्तम्भमे लिखे गये।

कहा है कि अन्धकूपमें १४६ आदमी कैद किये गये थे। इनमें सिर्फ २३ बचे थे। २३ यदि बचे तो १२३ मरे। स्मृति-स्तम्भमें नाम दिया गया सिर्फ ८० आदमियोंका। क्या बड़े लाट बहादुर सबके नाम जान नहीं सके? जाननेसे बहुत लोग निःसन्देह हो सकते। हालवेल साहबके आविर्भावके बहुत दिनों बाद कार्जनका आविर्भाव हुआ। हालवेल साहब घटनास्थलमें उपस्थित थे। निश्चय ही वह सबको जानते थे। बड़े लाट बहादुरको इस बातका फैसला कर देना वाजिब था कि वह पचास नामसे अधिक संग्रह क्यों नहीं कर सके। जिस लिखावटको देखकर २६ लाट बहादुरने और चालीस आदमियोंका नाम संग्रह किया है उस समय तो वह लिखावट नहीं होगी।

विशेषकर अन्धकूप हत्याकी निष्ठुर नारी गडी जा सकती। हमारे देशके जिन सब लोगोंने भारतमें वृटिश राज्य प्रतिष्ठाके लिये छातीका खून बहा वीरत्वकी पराकाष्ठा दिखाइ,—मैंने उनका स्मृति-स्तम्भ प्रतिष्ठित करके अपना नेग पालन किया। मैं इस प्रकार प्राचीन स्मृति-स्तम्भके पुनरुद्धारका या संरक्षणका पक्षपाती हूं।"

यह बात कहकर उदार लार्ड कर्जनने और एक बात कहकर उदारताकी पराकाष्ठा दिखाई है। उन्होंने कहा,—

" I have been strictly impartial in carrying out this policy, for I have been equally keen about preserving the relics Hindoo and Musulman of Brahman and Buddhist, of Dravidian and Pathan, European and Indian, Christian and non Christian, are to me absolutely alike in the execution of this solemn duty."

क्या ही उदार साम्य नीति है। लार्ड कर्जन कहते हैं— "स्मृति-रक्षा-रूप पवित्र कार्य्यमें क्या युरोपीय, क्या भारतीय, क्या खृष्टान, क्या ब्राह्मण, क्या मुसलमान आदि सभी जातिको सभी वर्णको मैं समान चक्षुसे देखता हूं। अन्धकूप-हत्याकी निष्ठुरतासे लार्ड कर्जनने नवाब सिराजुद्दौलहको एक तरहसे अव्याहति दी है। इससे पहले इतिहास लेखक टरेन्स साहबने सिराजुद्दौलहको अव्याहति दे रखी है। बड़े लाट बहादुरने इसी पक्षमें पोषकता करके उदारता दिखाई है।

लार्ड कर्जन स्वदेशप्रिय,—स्वजातिप्रिय हैं, इसीलिये उन्होंने

स्वजातीय व्यक्तिगणका स्मृतिस्तम्भ बनवाया है। उनका खयाल है कि उनके देशवासी वीरधर्म्मकी रक्षा करनेमें निष्ठुर भावसे मारे गये, इसीलिये उन्होंने उन वीरगणके स्मृतिस्तम्भकी प्रतिष्ठा की। वह सभी धर्म्मके महत् व्यक्तिकी स्मृति रक्षाके पक्षपाती है। ऐसे उदार बड़े लाट क्या और हुए है?

और एक बात हमें कहना है। वह जैसे महत् जैसे उदार हैं, उससे मनमें आशा हुई थी कि वह और एक ओर दृष्टि करके उसकी एक सुमीमांसा करेंगे। श्रीयुक्त बिहारी लाल सरकार प्रभृतिकी कितानें पढ़कर कितने ही लोगोंके मनमें अन्धकूप हत्याके अस्तित्व सम्बन्धमें सन्देह हुआ है। वह लोग सोच रखते हैं कि इस स्मृति स्तम्भसे अकारण ही भारतवासियोंके विषम निठुरताका एक निदर्शन प्रतिष्ठित हुआ।

पुस्तकमें अन्धकूपकी बात क्यों न लिखी गई? क्लाइव या वाटसन किसीकी भी चिट्ठीमें इस अन्धकूपकी बातका इशारा भी क्यों नहीं है? सिराजुद्दौलहके साथ जो सन्धि हुई, उनमें सब क्षतिपूरण जोड़ लिया गया, अन्धकूपकी बात बिलकुल ही क्यों न लिखी गई? अन्धकूपकी कोठरीका जो परिमाण दिया गया है उसमें १४६ नरनारी क्या रखे जा सकते हैं? १२३ आदमी मरे, किन्तु हालवेल साहबने सिर्फ ५० आदमीका नाम प्रकट क्यों किया? इतना बड़ा एक काण्ड हो गया उस समयका कलकत्तेका कोई आदमी उसे जान क्यों न सका? हालवेल साहबने इस देशमें पुस्तक न लिखकर विलायत जानेके समय जहाजमें बैठकर क्यों लिखी? इत्यादि प्रश्न उठनेसे बहुत लोगोंके मनमें अन्धकूपकी भीषणताके सम्बन्धमें सन्देह होता है। इससे पहले 'सिपाही-विद्रोह'में हत व्यक्तियोंको स्मृतिस्तम्भ रचा सम्बन्धमें लार्डकर्जनने कहा था, कि यह सन्देह अमूलक है, किन्तु उन्होंने इन सब बातोंके खण्डन करनेका कोई प्रयास नहीं किया। अन्धकूपकी स्मृति स्तम्भ प्रतिष्ठाके समय भी उन्होंने इस सम्बन्धमें किसी बातका उल्लेख नहीं किया। जो लोग ऐतिहासिक प्रमाणाभावसे अन्धकूपके अस्तित्व सम्बन्धमें सन्देह करते हैं; वह लोग भ्रान्त हो सकते हैं, किन्तु जिसके लिये उन्हें सन्देह है लार्ड कर्जनके उसका खण्डन कर देनेसे, उनकी भ्रान्ति मिट जाती, देशके अनेक लोग निःसन्देह हो सकते। भक्त भारतवासियोंका भ्रम निवारण करना ही तो उदार युक्तिमान बड़े लाट कर्जन बहादुरका कर्तव्य है।"

लार्ड कर्जन जिस समय भारतके राजप्रतिनिधिपदपर प्रतिष्ठित थे, उसी समय वह इस स्मृति स्तम्भकी प्रतिष्ठा कर गये। भारतके राजप्रतिनिधिगणका शासनकाल पांच वर्ष मात्र है। लार्ड कर्जनने सात वर्षतक भारतके शासनदण्डकी परिचालना की थी। ऐसा सौभाग्य सबको नहीं होता। भारत शासन समयमें सौभाग्यवान लार्ड कर्जन अनेक विषयोंमें अपना अभिलाष पूर्ण कर गये है। शुभादृष्टके फलसे हो, अथवा उनके दोर्द्दण्डप्रतापके प्रभावसे हो,—वह जिस उद्देश्यसे जिस समय जिस कार्य्यमें हस्तक्षेप करते, उसी कार्य्यमें कृत-कार्य्य होते। अपने अभीष्ट साधनोद्देशसे कर्जन एक लक्ष्यसे काम करते,—न्याय अन्यायका विचार न करते, प्रजाकी सुख-दुःख, मङ्गल-अमङ्गलकी ओर दृष्टि न रखते। वङ्गका अङ्गच्छेद उसका सजीव दृष्टान्त है। कोटि कोटि प्रजाके कातर क्रन्दनपर कर्णपात न करके, कोटि कोटि प्रजाका आवेदन निवेदन अग्राह्य करके,—वङ्गके टुकड़े कर कर्जन अपनी जिद पूरी कर गये। कर्जनने वङ्गवासीकी, समग्र भारतवासीकी छातीपर चोट की है,—किन्तु भारत-वासियोंने कभी उनका असम्मान नहीं किया। शासनकाल समाप्त हो गया था इसलिये कर्जन भारतसिंहासन परित्याग करनेपर वाध्य हुए,—नहीं तो कौन जानता है, कि भारत-वासियोंको और भी कितने ही निग्रहनिर्य्यातनसे जर्ज्जरित होना पड़ता? विलायत जाकर भी कर्जन अपना अभ्यास भूल नहीं सके। किन्तु वहां उन्हें मानता कौन है,—यहां उनका प्रताप कितना है? यहां कर्जनने अन्धकूपका स्मृति-

स्तम्भ प्रतिष्ठित किया—विलायतमें [illegible] कि क्लाइवकी पत्थरकी मूर्त्ति बैठाई गयी। पहलेकी तरह पूर्ण शक्तिसे कर्जन अपना यह अभीष्ट सिद्ध करनेकी चेष्टा कर रहे हैं। पहले जब कर्जनने यह प्रस्ताव किया था तब विलायतके बहुत लोगोंने उनके इस प्रस्तावपर सहानुभूति प्रकाश नहीं की थी। स्वयं सम्राट सप्तम एडवर्डने अपने मुहसे कहा था—"क्लाइवकी प्रतिमूर्त्ति प्रतिष्ठाके विषयमें हमारी सहानुभूति नहीं है। इससे सोचा था कि शायद कर्जनका सब परिश्रम व्यर्थ हुआ—सब चेष्टा विफल हुई,—अपने अभीष्ट साधनमें कर्जन शायद इस बार कृतकार्य्य न होंगे। सोचा था कि घमण्डी कर्जनने कोटि कोटि भारतवासियोंको व्यथा देकर बङ्गच्छेद विधान किया था उनका यह अपमान उनके उसी पापका परिणाम है। किन्तु इस समय ऐसा मालूम हुआ है कि लार्ड कर्जन इस बार भी अपना यह अभीष्ट सिद्ध कर सकेंगे। कर्जनकी चूड़ान्त चेष्टाके फलसे हो या उनकी पूर्व्वजन्मकी सुकृतिके फलसे हो—सम्राट सप्तम एडवर्ड भी कर्जनके उद्देश्य साधनमें सहाय हुए हैं। साथ साथ विलायतमें क्लाइव-मेमोरियल फण्ड" नामकी एक तहवील प्रतिष्ठित हुई है। सप्तम एडवर्डने इस तहवीलमें एक सौ अशरफियां या पन्द्रह सौ रुपये दान किये हैं।

अब खयाल होता है, कि पलाशीकी स्मृति जागेगी,—अङ्गरेजोंकी कलङ्क कथा जीती मूर्त्तिमें जागती रहेगी,—कर्जनकी भी कीर्त्ति रक्षा होगी। जो हो, कालको कर्जनके सम्बन्धमें अधिक बातें कहनेकी इच्छा नहीं है। फिर भी

क्लाइवके नामसे अनेक पुरानी स्मृति जाग उठती है। बङ्गला १३१३ सालकी २१वीं आषाढ़के "बङ्गवासी"से "पलाशीकी पूर्व्व स्मृति' शीर्षक प्रबन्ध यहां देते हैं। इस प्रबन्धमें क्लाइवकी प्रतिमूर्त्ति प्रतिष्ठा सम्बन्धमें आलोचना की गई है।

पलाशीकी पूर्व्व स्मृति।

जिस शुभक्षणमें श्रीयुक्त विहारीलाल सरकारने बङ्गवासी कार्यालयसे प्रकाशित "जन्मभूमि में पलाशीका प्रबन्ध लिखा था। जिस शुभक्षणमें इस प्रबन्धके बाद विहारी बाबूका "अङ्गरेजेर जय" नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ था। जिस शुभक्षणमें इस ग्रन्थमें प्रमाणित किया गया था, कि अङ्गरेजोंके इतिहासमें वर्णित अन्धकूप हत्याका विवरण अमूलक है।

ऐसा ग्रन्थ प्रकाश होने हीसे भारतके भूतपूर्व्व बड़े लाट लार्ड कार्जनने अन्धकूपका स्मृति-स्तम्भ खड़ा किया है। सत्य ऐतिहासिक प्रमाणोंसे सिद्ध हुआ है, कि अन्धकूपका विवरण अमूलक है। लार्ड कार्जनने जिस समय यह स्मृति-स्तम्भ खड़ा किया था उसी समय बङ्गवासीमें हम लोगोंने मुक्तकण्ठसे कहा था, कि जिन सब प्रमाणोंसे अन्धकूपका विवरण अमूलकके नामसे प्रतिपन्न हुआ है लार्ड कार्जन उनमें एकका भी खण्डन कर नहीं सके, इसलिये लार्ड कार्जनके स्मृति-स्तम्भ खड़ा करनेपर भी इस देशके कितने ही लोग इस अन्धकूपका अस्तित्व स्वीकार कर नहीं सके।

अङ्गरेजी इतिहासमें अन्धकूपका घोर विभीषिकामय विवरण पाठ करके, इस देशके कितने ही लोगोंका विश्वास सुदृढ़ हुआ था कि सचमुच ही अन्धकूप हत्याका विवरण समूलक है, किन्तु जिस दिन पहले बिहारी बाबूने इसका अमूलकत्व प्रमाणित किया उसी दिनसे कितने ही लोगोंका यह विश्वास डोल गया। इस देशके लोगोंका यह विश्वास डोलनेकी वजहसे ही लार्ड कर्जनका सिंहासन डोला। क्या यह बात उन बलदर्पी आत्मम्भरी लार्ड कर्जनसे सही जा सकती थी, कि एक बङ्गाली इतिहासलेखकने अन्धकूपका अस्तित्व उड़ा दिया? यह क्या हो सकता है, कि सिराजुद्दौलह निष्ठुरताके कलङ्कसे छुटकारा पा जावें? लार्ड कर्जन क्या यह समझ नहीं सके, कि सिराजुद्दौलहकी कलङ्क-कालिमा पुंछ जानेसे अङ्गरेजोंकी कलङ्क-कालिमा घोर घना-कारमें फूटकर प्रकट होगी? लार्ड कर्जन क्या समझ नहीं सके, कि अङ्गरेजोंके एक निरीह निर्व्विवाद निर्दोष नवाबको अकारण ही राज्यच्युत करनेकी निन्दाका डङ्का फिर भैरववादसे बज उठेगा? इसीसे तो उन्होंने जल्द जल्द अन्धकूपका स्मृति-स्तम्भ खड़ा कर डाला।

बिहारी बाबूने अपनी किताबमें इस भावसे लिखा है, कि अन्धकूपका विवरण हालवेलका कल्पना प्रसूत है। वह डरे, कि शायद उनके प्रति विलायतके लोग समवेदना प्रकाश न करें शायद वह कलकत्तेके दुर्गकी रक्षा न कर सकनेकी वजह अङ्ग-रेजोंके निकट निन्दित हों, इसी भयसे विलायती लोगोंका चित्त आकर्षण करनेके अभिप्रायसे उन्होंने अन्धकूपकी कल्पना

की थी। किन्तु वह स्मृति स्तम्भ कहां है। उस स्मृति-स्तम्भके खंडे कौन न होत न जाने किसने उसे मट्टीमें लुटा धूलमें मिला दिया। यदि अन्धकूपका विवरण अमूलक न होतो यदि इस अन्धकूपके अस्तित्वमें अङ्गरेजोंका विश्वास होता, तो हालवेलकी इस कीर्तिविभूति स्मृतिस्तम्भका पुनरुद्धार निश्चय ही होता। क्या अबतक कोई बता न सकता, कि वह स्मृति स्तम्भ आप ही लुढक गया या किसीने उसे लुढ़का दिय। सचमुच ही यदि यह लोमहर्षण हृदयविदारक घटना संघटित होती, तो अङ्गरेजोंकी ऐसी प्रकृति नहीं है, कि वह इस स्मृति-स्तम्भका पुनरुद्धार न करके निश्चिन्त रहते।

बिहारी बाबूने आग लगा दी, दूसरे इतिहास-लेखकोंने उस आगको हवा की। इसीसे देशके लोगोंकी आखें खुली। इसीसे लार्ड कर्जन चौंके। नहीं तो क्या फिर अन्धकूपका स्मृति स्तम्भ तय्यार होता? खूब हुआ है। इस देशके लोग जितना उस स्मृति स्तम्भको देखेंगे, पलाशीकी वह पूर्व्वस्मृति उतना ही उनके मनमें जाग उठेगी।

सिर्फ अन्धकूपका स्मृति स्तम्भ ही नहीं पलाशीके स्मृति चित्रसे और लार्ड क्लाइवके स्मृतिनिदर्शन प्रतिष्ठा प्रस्तावसे, लार्ड कर्जन और भी कीर्त्तिमान हो गये हैं। इस पलाशीके स्मृति स्तम्भसे और लार्ड क्लाइवके स्मृति निदर्शन प्रतिष्ठा प्रस्तावसे एक एक करके पलाशीकी वह पूर्व्वस्मृति जाग उठती है। एकके बाद दूसरी वह सब बातें मनमें आती हैं, जिनसे पलाशीक्षेत्रमें अंगरेज जयी हुए और लार्ड क्लाइवका जय डङ्का बज उठा। यह सब बातें छिपे बिहारी बाबूकी कही,

अङ्गरेज इतिहास लेखकमात्रकी है। हे लार्ड कर्ज़न! बलि
हारि तुम्हारा साहस। बलिहारि तुम्हारी बेहयाइ। पलाशी
क्षेत्रमें स्मृति स्तम्भ खड़ा करनेका प्रस्ताव तुमने किस साहससे
किया? अथवा इस संसारमें तुम्हारा अकथ्य भी कुछ नहीं
है, अकार्य्य भी कुछ नहीं है। सचमुच हो क्या अङ्गरेजोंकी
तलवारके जोरसे पलाशीक्षेत्रके युद्धमें जयलाभ किया गया था।
ऐसा होता तो यह स्मृतिस्तम्भ शोभा देता। तलवारके जोरसे
भारतका जय नहीं हुआ और सिर्फ तलवारके जोरसे उसे रख
न सकोगे। अङ्गरेजोंके शासनमें जो बात भूल रहे थे आज
कर्जनने उसकी याद फिर दिलाई है। सब भूल जावेंगे किन्तु
भूल न सकेंगे,—मीरजाफरकी वह विश्वासघातकता और क्लाइ-
वका वह जाल। भूल न सकेंगे,—उस बङ्गाली वीर मोहन-
लालका रण-गुणपणा और उन नौ-सेनापति एडमिरल वाट
सनकी धर्म्मपरायणता। एक वृक्षके दो फल हैं। एक फल
मीठा और दूसरा कड़वा है। एक ही अङ्गरेजवंशमे क्लाइव
भी जनमे थे, वाटसन भी जनमे थे। क्लाइव जालसाज थे और
वाटसन धर्म्मपरायण। जब उमिचन्दको ठगनेके लिये क्लाइवने
वाटसनको जाली सन्धिपत्रपर दस्तखत करनेके लिये कहा था,
तब वाटसनने विस्फारित नेत्रसे देखकर कहा था —यह जाल-
साजी मैं कर न सकूंगा। किन्तु क्लाइवने अम्लानवदनसे अकु-
ण्ठितचित्तसे उस जाली कागजपर वाटसनके दस्तखत बना दिये
थे। अहो! इन्हीं क्लाइवका स्मृति-निदर्शन!

कहिये तो किस गुणसे इतने दिनोंके बाद क्लाइवके स्मृति-
निदर्शनका प्रस्ताव हुआ? पलारणा-जालसाजोंकी बात छोड़

होनेसे उनके वीरत्व होका कौनसा परिचय मिला है? जिन पलाशी युद्धके विजय-घोषणाके सम्बन्धमें स्मृति-स्तम्भ प्रतिष्ठाका प्रस्ताव उठा है, याद आता है, कि उसी पलाशी युद्धके समय वही क्लाइव शिकारगाहके भीतर घोर निद्रामें स्वप्न देख रहे थे? जिस समय मीरजाफरकी विश्वासघातकतासे पलाशी खेतमें अङ्गरेजोंकी जय हुई उस समय यही क्लाइव घोर निद्रासे अभिभूत थे। उन्होने नींदसे उठकर देखा, कि अङ्गरेजोंकी जय हुई है। इन्हीं क्लाइवका स्मृति निदर्शन।

इतिहासकी और आलोचना करना नही चाहते, इन्हीं क्लाइवने नवाबके साथ लड़नेमें पद पदपर भीतिका निदर्शन प्रदर्शन किया था। क्या याद आता है कि यही क्लाइव पहले बङ्गाल आकर बजबजके चुद्र दुर्गके सामने खुले हुए मैदानमें निद्राभिभूत हो पड़े थे? क्या याद आता है, कि सिराजुद्दौलहने जब दुबारा कलकत्तपर आक्रमण किया, तो इन्हीं क्लाइवने सिराजुद्दौलहसे युद्धमे पराभूत होकर अलीनगरमें सन्धि स्थापन की थी? अहा, इन्हीं क्लाइवका स्मृति निदर्शन। क्लाइवने विलायतमें अङ्गरेजोंसे वीर पूजा नहीं पाई, बल्कि क्लाइव अपनी कापुरुषताके लिये अङ्गरेज ऐतिहासिकों द्वारा बार बार भर्त्सित हुए हैं। सचमुच ही क्लाइवमे यदि कोई गुण रहता, तो इतने दिनोंमें क्या उनका स्मृति निदर्शन प्रतिष्ठित न होता? क्लाइवने विश्वासघातकतासे जय लाभ किया था। उस जयके फलसे अङ्गरेजोंने राज्यलाभ किया था, फिर भी क्लाइवके नामसे अङ्गरेज जातिकी नाक सङ्कुचित होती थी। अधर्म्मोके प्रतारणा कौशलसे अधर्म्मपर राज्यकी प्रतिष्ठा

हुई है, इसका परिणाम नहीं जानते किन्तु अङ्गरेज जातिने इतना बड़ा राज्य लाभ करके भी एक दिन भी क्लाइवके प्रति वीरसम्मान प्रदर्शन नहीं किया। अच्छा, इन्होंने क्लाइवका स्मृति-निदर्शन। इतिहाससे प्रस्फुट न हो किन्तु मेकालेकी बेमानी कैफियतसे अब भी लोगोंको संशय है, कि इन्हीं क्लाइवकी प्ररोचनासे सिराजुद्दौलहकी हत्या हुई थी। किसीने कुछ पूछा नहीं, किसीने कुछ कहा नहीं, मेकाले कुरतीसे कहते हैं,—सिराजुद्दौलहके हत्याकाण्डसे क्लाइवका कोई सम्पर्क नहीं था। संशय होनेकी वजहसे क्लाइवकी अधार्म्मिकता स्मरण करके अब भी विलायतमें कितने ही अङ्गरेज क्लाइवके स्मृति निदर्शनके पक्षपाती नहीं हैं। यह केवल इन्हीं कुपक्षी कूट नीतिक कर्जनकी कल्पना है।

खूब हुआ है। शायद इस देशके लोग धीरे धीरे उन सब बातोंको भूल जाते थे। अब पलाशी युद्धके स्मृति स्तम्भसे और लार्ड क्लाइवके स्मृति निदर्शन प्रतिष्ठा प्रस्तावसे वह सब बाते जाग उठेगी।

खूब हुआ है। आज पलाशीक्षेत्रके इस स्मृति स्तम्भ और लार्ड क्लाइवके स्मृति-निदर्शन-प्रस्तावसे अनेक चरित वैचित्र्य भारतवासियोंके मनमें जाग उठेंगे। उससे फल भी है, लाभ भी है।

———

कार्जनकी वक्तृता।

कलकत्तेकी लालदीघीके किनारे कर्जन द्वारा अन्धकूपका जो स्मृति स्तम्भ प्रतिष्ठत हुआ है, अङ्गरेजी १९०२ई० की १९वीं दिसम्बरको इस स्मृतिस्तम्भका आवरण खोलनेके समय लार्ड कर्जनने जो वक्तृता दी थी, उसका मर्म्मानुवाद इस प्रकार है,—

"गत चार वर्षसे प्रायः बीच बीचमें कलकत्तके अधिवासियोंने मुझे इस अञ्चलमे किसी तथ्यके अनुसन्धानमें व्यस्त भावसे घूमते फिरते देखा होगा। शायद कितने ही लोग इससे विस्मित हुए थे। मैंने इस आफिसमें, आफिस घरके अंधेरे सामान्य कोनेतक खोजकर देखे हैं,—कितने ही दाग दिये हैं नापा है। यह जो प्रकाण्ड स्तम्भ है और राहकी चारो ओर प्रस्तर फलक है यही मेरे उस परिश्रमका फल है। अब इस सम्बन्धमे कुछ कहता हूं, कि किसलिये इसकी अवतारणा हुई और इससे क्या मतलब निकलना है।

जेलकी कोठरीमें ता० १२३ आदमियोंका मरना, फिर सिर्फ २३ आदमियोंका जीता बचना और उनको सकुशल निकलनेका उपाख्यान है मैं इस पुस्तकमें पाता हूँ। और यह भी पता है कि इसके बाद हालवेल द्वारा परिरक्षित स्मृति स्तम्भ सन् १८२१ ई०में या कुछ पहले गिराया गया। यह कोई नहीं बता सकता, कि इसका कारण क्या है। मिस्टर हालवेल भी अन्धकूपमें आबद्ध हुए थे, जिन्होंने रक्षा पाई उन्होंमें यह एक थे। बादमें मिस्टर हालवेल फोर्टविलियमके गवरनर हुए थे। इन्होंने अन्धकूपमें मरे हुए व्यक्तियोंके स्मरणार्थ उस भयानक रातका विस्तृत विवरण लिखा और इन व्यक्तियोंका एक स्मृतिस्तम्भ तय्यार किया। अन्धकूपकी हत्याके बाद ६० वर्षतक इस दुर्घटनामें मरे इन व्यक्तिगणके स्मृतिस्तम्भकी रक्षा हुई। मिस्टर वस्टिदने इसके लिये बड़ा शोक प्रकाश किया है, कि इसके बाद कोई ८०वर्ष अतिवाहित होनेपर भी अभागोंके अकाल मरणका कोई स्मृति निदर्शन नहीं बना और तो क्या एक पत्थरतक खड़ा नहीं किया गया। मिस्टर वस्टिदका यह शोक प्रकाश न्यायसङ्गत ही हुआ है।

वस्टिदकी किताब पढ़ते ही सबसे पहले मेरा इस स्थानमें मनोयोग आकृष्ट हुआ और मैंने इस विषयकी विशेष जांच आरम्भ की, कि पुराने फोर्ट विलियममें कहां क्या था। इसके फलसे इस किलेके समस्त अवयव मेरे मानसचक्षुमें ऐसे उद्भासित हुए हैं, कि मैं जिस समय इस पथसे आता जाता हूँ तो यह पोष्टआफिस, कष्टम हाउस और यह राइटर्स-बिलडिङ्ग मेरी आंखोंके सामनेसे छिप जाते हैं और उनके बदले केवल वह

पुराना किला वह गट वह नाली,—वह पुराना सब दृश्य मेरी निगाहोंके सामने प्रतिफलित होता है। अन्धकूपमें मरे हुए लोग इसी नालीमें गाड़े गये थे। इसी नालीके ऊपर हालवेल साहबने स्मृति स्तम्भकी प्रतिष्ठा की थी।

बीस वर्ष पहले ईष्ट इण्डियन रेलके मिष्टर रसेल ब्रेनने एक बार कई स्थान खोदे थे, उनकी चेष्टासे उस समय पुराने किलेका परिमाण जाना गया था। इसके उपरान्त शिक्षा विभागके मिष्टर सी० आर० विलसनने और भी कई ज्ञातव्य विषयोंका उद्धार किया, कई भूल थी, उन्हें शोधन किया। मिष्टर विलसनके विशेष अनुसन्धानसे अन्धकूपका यथार्थ स्थान निकल पड़ा। जहांतक याद था, मैंने पुराने किलेके सब भग्नांशका एक एक स्मृतिचिह्न बना दिया है। जिस जिस स्थानमें उस पुराने किलेका कोना था, उस उस स्थानमें जो स्थान खुले हुए है उनमें पीतलके दागदार पत्थर बैठाकर उनका निशान बना दिया है और जिस जिस स्थानमें अट्टालिका बन गई हैं, उन उन स्थानमें उन अट्टालिका-गात्रमें एक एक श्वेत पत्थर लगा दिया है। ऐसे कोई बारह पत्थर है, वह सब अपना परिचय आप प्रदान करते हैं।

अब जिस जगह जनरल पोष्ट आफिस निर्म्मित हुआ है, इस जगह अन्धकूप था। पोष्टआफिसका वह अंश राहसे दिखाई नही देता था, फाटककी ओट पड़ता था। यह फाटक तोड़ा जाकर अब वहां लोहेका एक खुला हुआ फाटक लगाया गया है। जिस जगह अन्धकूप था उस जगह काले पत्थरका फर्श लगा दिया गया है, इसकी चारो तरफ लोहेका

ना हटा दिया गया । इसी जगह मैंने एक काला पत्थर लगा दिया है जिसपर अन्धकूपका कुछ विवरण खुदा हुआ है। मैं नहीं जानता कि शीतकालमें जो लोग कलकत्ते आते हैं, उन लोगोंने और यहांके अधिवासियोंने आजतक यह स्मृति चिह्न देखा है या नहीं। फिर भी मैं कह सकता हूं कि यह सब स्मृतिचिह्न ब्रिटिश भारतकी राजधानीके स्थायी और महामूल्य सम्पद हैं।

हालवेल प्रतिष्ठित स्मृति स्तम्भकी बात एक तरहसे लोग भूल गये थे। मैंने उस समयका चित्र कागज पत्र और लिखित विवरण कुछ कुछ पाया है। इन सब विवरणोंमें परस्पर मेल न रहनेपर भी यह मिल गया है, कि यह गातिशीर्ष स्तम्भ एक अष्टकोणविशिष्ट वेदिकापर प्रतिष्ठित था। इसकी दो ओर अन्धकूपमें मारे गये कुछ आदमियोंके नाम खुदे थे। यह स्तम्भ ईंटोंका बना था, ऊपर चूना किया हुआ था। एक लिखित विवरणसे जान पड़ा, कि बिजली गिरनेसे यह स्तम्भ ऊपरसे नीचेतक फट गया था। सन् १८२१ ई० में जब यह स्तम्भ हटाया गया तो मैं समझता हूं, उस समय यह गिर पड़ा था। मेरा सङ्कल्प था, कि जहांतक सम्भव होगा हालवेल-स्तम्भके नमूनेपर यह सङ्गमरमरका स्तम्भ बनवाऊंगा और जहांतक सम्भव होगा, जिस स्थानमें वह अन्धकूप था, ठीक उसी स्थानमें यह स्तम्भ स्थापन करूंगा। कलकत्तेके इतिहासमें चिरस्मरणीय घटनाके स्मृति-निदर्शन स्वरूप और जिन्होंने छातीका रक्त बहाकर भारतमें ब्रिटिश राजत्वकी भित्ति प्रतिष्ठा की थी,

उन साहसी वीरगणके प्रति सम्मान प्रदर्शन करनेके लिये—मैं यह स्मृति-स्तम्भ दान करता हूं। यह स्तम्भ कलकत्ते के पुराने इतिहासकी एक प्रधान घटनाकी स्मृतिरचा करेगा। इस समय जिस जगह स्तम्भ प्रतिष्ठित हुआ है, प्राचीन मान चित्रोंके देखनेसे जान पड़ता है कि इस स्तम्भसे सिर्फ कई गज पूर्व्व हालवलका पुराना स्तम्भ प्रतिष्ठित था। जिस नालीमें अन्धकूपमें मृत व्यक्तियोंकी समाधि हुई थी, उसी नालीमें हालवल साहबने स्मृतिस्तम्भ स्थापन किया था। गत ग्रीष्म कालमें मैंने इस बातकी विशेष चेष्टा की थी, कि हालवल स्तम्भका कोई भित्ति निदर्शन या किसी कब्रका चिह्न मात्र आविष्कार किया जा सकता है या नहीं। पुरानी नालीका सिर्फ प्रान्त भाग दिखाई दिया था और कुछ नहीं। १७५६ ई०की २१वीं जूनकी सवेरे जिन जगह बारह आदमियोंकी मृतदेह गाड़ी गई थी ठीक उस जगह नहीं, तो उससे सिर्फ कई फुट दूर उनका स्मृति-स्तम्भ प्रतिष्ठित हुआ। मैं आशा करता हूं, कि चिरदिनके लिये यह स्मृति जागती रहेगी।

बाहरी ढङ्गमें मेरे इस स्मृति स्तम्भमें विशेष परिवर्त्तन हुआ है। हालवलने स्वयं अपने स्तम्भ गढ़की विवरणी लिखी थी। वह स्वयं भुक्तभोगी थे। लिखनेके समय उनके मनमें उस वीभत्स दृश्यकी ज्वलन्त स्मृति जाग रही थी। इस दुर्घटनाके सम्बन्धमें हालवेलने सिराजुद्दौलहके व्यक्तिगत दायित्वका विशेष उल्लेख किया है। किन्तु मेरे खयालसे यह पूरा पूरा न्यायसङ्गत नहीं है। अन्धकूपमें मरे १२३

आदमियोंमें छालेवेल लिखित सिरगणमें पचाससे भी कम नामोंका उल्लेख था, मैंने विलायतके और यहाके पुराने कागज पत्र देख सुनकर यथेष्ट चेष्टासे इन सबके खुष्टान नाम और बीस नये नाम संग्रह किये हैं। इस नये स्मृति-स्तम्भमे अन्धकूपमे मरे हुए व्यक्तियोंमे कुल ६० आदमियोंके नाम शामिल किये गये।

इस कार्य्यमें मैंने रेकार्ड-डिपार्टमेण्टके मिष्टर एस० सी० हिलसे विशेष सहायता पाई है। इस विषयमें वह एक नया ग्रन्थ प्रणयन करनेमें नियुक्त हैं। मैंने अतिरिक्त २० अङ्गरेजोंके नाम पाये हैं। इन लोगोंमे कोई भी अन्धकूपमें उक ताकर नहीं मरा, फिर भी,किसीने अवरोधके प्रथमावस्थामें प्राण दिये थे कोई अन्धकूपसे जीवितावस्थामें बाहर निकलकर विषम यन्त्रणाके फलसे मर गया। अन्धकूपमे दम घुट जानेसे जिनके प्राण गये थे उन्होंकी तरह इन २० आदमियोंका भी स्मृति चिन्ह रखना मुझे युक्तिसङ्गत जान पडा। इसीलिये मैंने इस स्मृतिस्तम्भमे उनका भी नाम खुदवा दिया है। कोई डेढ सौ वर्ष पहले जिन्होंने वङ्गदेशमे बृटिश राजत्वके संस्थापनके शुभ अनुष्ठानमें अक्लान्त परिश्रम किया था मैंने उन ८० आद-मियोंका नाम इस स्तम्भ अङ्गमे खुदवा दिया है। घटनाचक्रके एक महत् आवर्त्तनमे यही लोग अग्रणी थे, मानव-इतिहासके एक अद्भुत अध्यायके यही प्रणता थे। इससे मैं गौरवान्वित हूं, कि विस्मृतिके गर्भसे उनके कई नाम उद्धार करनेमें मेरा शुभादृष्ट हुआ।

इस कर्म्ममय प्राणहीन चिन्ताशून्य अतीतका

स्मृति संरक्षण ही मेरा उद्देश्य है। इसी उद्देश्यसे मैंने यह काम किया है। अतीत घटना मेरे लिये परम पवित्र है। कभी कभी यह भ्रम-भ्रान्ति या पापके इतिहासरूपसे परिचित हुआ है सही फिर भी यह अनेक समय पुण्य वीरत्व और साहसिकताका भी यशोकीर्त्तन करता है। बुरा हो या भला, यह तो हुआ ही करता है, इसका विवरण भी लिखा जाकर मानव जातिके इतिहासके अंशरूपसे परिरक्षित हुआ है। दीपशिखाकी तरह मनुष्यका जीवन-प्रदीप फूंकसे बुझ जाता है, किन्तु उनके कार्य्य और परिचयके लिये, भविष्यतमें जो लोग आवेंगे, उनके लिये इस मानव-जीवनकी स्मृतिरक्षा कर्त्तव्य है। यह निश्चित जानकर, कि हमारा जीवन श्वासरुद्ध होते ही हमारा नाम लोप न होगा, उत्तर पुरुषगण हमारी स्मृतिरक्षा करेंगे, हम लोग अपने कामसे सन्तोष लाभ कर सकेंगे।

इस नियमसे कार्य्य करनेमे मैं सम्पूर्ण अपक्षपात हूं, कारण, हिन्दू मुसलमान, बौद्ध ब्राह्मण, द्राविड-पठान प्रभृति सभीकी स्मृतिरक्षाके लिये मेरा समान आग्रह है। युरोपीय, भारतीय, खृष्टान, अखृष्टान,—यह कर्त्तव्यकर्म्म सम्पादन करनेमे मेरी दृष्टिमे सभी समान हैं। इनमे किसीके भी दावेमें मैं पार्थक्य नहीं देखता। सुतरां मैं यदि अपने स्वदेशवासियोंके प्रति पक्षपात करूं या भारतसाम्राज्यकी राजधानीमे उनके आत्मदानके लिये अपना सामयिक दान—इस स्मृति स्तम्भकी प्रतिष्ठा करूं तो मेरा अन्य स्थानमें जो कुछ किया है यह व्यर्थ। इससे अधिक न कहूंगा।

अतीतकी कहानी और हमारे कलकत्तेकी बातें। इस समय कितने आदमी चिन्ता नहीं किया करते? आधुनिक कल कत्तेकी राहमें चलते चलते कितने आदमी कलकत्तेकी पूर्व्वा-वस्थाके विषयमें सोचा करते हैं? उनकी संख्या बहुत कम है। आज भी कलकत्ता एक अतीत स्मृतिका समाधिक्षेत्र है। मैं प्रति दिन जिस जगह बैठकर अपना दैनिक कार्य्य किया करता हूं,—उस गवरमेण्ट-हाउसकी प्रस्तरप्रस्तुत अट्टालिका बरामदे और चबूतरेपर भूतपूर्व्व बड़े लाटोंकी प्रेतात्मा इस समय भी निःशब्द घूमती फिरती है।

प्राचीन परिच्छद परिहित महाप्राण व्यक्तिगण जिनका नाम विस्मृति-सागरमें निमज्जित हो गया है वह लोग इस ऐतिहासिक क्षेत्रके इलाकेमें सदा गति विधि करते रहते हैं, शान्ति और समरके वेशमें अद्भुत आकृतियां विध्वस्त दुर्गके विध्वस्त द्वारके भीतरसे आया जाया करती हैं। हमारे पदतलकी धूलिके साथ जिनकी अस्थि मिल गई है, उनकी बात स्मरण करनेसे,—बङ्गदेशके बृटिश राजत्वके प्रतिष्ठाता प्रसारक और रक्षक—उन यब चार्णक, सरजान विलियम हेमिल्टन और एडमिरल वाटसनका नाम भी आप ही आप स्मृतिपथमें आ पड़ता है। यहांसे कुछ ही दूरपर इस समाधिक्षेत्रमें उनकी भी अस्थि राशि मट्टीमें मिल गई है। कितने ही अङ्गरेज-पुरुष और अङ्गरेज-रमणी,—जिन्होंने इस विदेशमें आकर मानवजीवनके अल्प समयके लिये कठोर जीवन संग्राम किया था,--पुरुष परम्परासे इस प्रकृत पार्कष्ट्रीटस्थ समाधिक्षेत्रमें समाधि लाभ किया

है, उनका नाम नहीं है, उनकी स्मृति रक्षित नहीं हुई—जगतमें वह अपरिचित हैं। हमारे पूर्ववर्त्ती पुरुषोंमें—इस साम्राज्यके अज्ञातनामा निर्माणकर्ताओंमें—यदि किसीकी स्मृति रक्षित होनेसे उपयुक्त है, तो इस स्थानमे मैंने जिनका नाम लिपिबद्ध किया है,—यह वही है। भारतमें अङ्गरेजोंका यदि कोई प्रिय स्थान है, तो सन् १७५६ ई० की २१ वीं जूनको उस भयानक रात्रिकी बलिके रक्तसे जो स्थान रञ्जित हुआ था, —हमारे पैरोतले वही स्थान है। मेरे अन्तरमे यह भाव जागरित होने होते मैंने यह स्मृति स्तम्भ प्रतिष्ठित किया। मैंने इस अतीतकी अनन्त स्मृतिको सदा रक्षा करनेके लिये कलकत्तावासियोंके हाथमें समर्पण किया।

अङ्गरेजी १९०१ ई० की १६ वीं अपरेलको दिल्लीमे "मिउटिनी-टेलिग्राफ मेमोरियल" नामक स्मृति स्तम्भका आवरण खोलनेके समय लार्ड कर्जनने जो वक्तृता दी थी, उसका मर्मानुवाद इस प्रकार है,—मैंने सुना है, अनेक लोग कहते है,—कलकत्तेकी अन्धकूप हत्या कानपुरका हत्याकाण्ड, लखनऊकी रेसिडेन्सीकी रक्षा और दिल्लीका युद्ध और विजय प्रभृति जो घटनायें हुई है,—उन घटनाओंकी स्मृतिरक्षाके सम्बन्धमें कोई उद्योग न होना उचित है, बल्कि ऐसी चेष्टा करना चाहिये, जिससें यह सब घटनायें विस्मृतिके गर्भमें चिरकालके लिये दब जावें। कितने ही लोगोंने युक्ति-प्रमाण दिखाकर इस विषयमें तर्क-वितर्क भी किया है। किसी अतिबुद्धि व्यक्तिने विशद प्रबन्धसे प्रमाणित करनेका प्रयास किया है, कि कलकत्तेकी अन्धकूप हत्या अलीक है,—यानी अन्धकूप हत्या